उन सबों को—
जो जीवन के मोड़ों पर,
आशा की सुनहली धूप
अथवा
विषाद की म्लान छाया बन
विविध रूपों में आए—
फिर मेरे कुचले जीवन को
निखार गए !

—दिनेश

[करीब सुबह आठ बजे का वक्त है। बलराज की आलीशान कोठी के डाइनिंग रूम में शारदा और सुरेन नाश्ता शुरू करने के लिए बलराज की राह देखते हुये बैठे हैं। बलराज बाथरूम से निकलता है और डाइनिंग टेबल पर आकर बैठता है। फिर कुछ गम्भीर मुद्रा में अपनी पत्नी की ओर देखकर बोल उठता है।]

बलराज : पढ़ा तुमने अपने लाडले का इंग्लैण्ड से आया हुआ खत? मैंने तो पहले ही कहा था कि उसे बिना शादी किए मत भेजो। मगर तुम्हें बड़ा विश्वास था अपने लाडले पर! अब देख लिया नतीजा? (व्यंगपूर्ण स्वर में) लंदन गए थे बिजनेस मैनेजमेंट का डिप्लोमा करने! और अभी तो गए एक साल भी नहीं हुआ है कि कर बैठे पत्नी मैनेजमेंट। (कुछ रुककर) अगर तुम इस शादी के लिए राजी हो तो लिख भेजना अपनी इजाजत। मगर मुझे यह हरगिज

[करीब सुबह आठ बजे का वक्त है। बलराज की आलीशान कोठी के डाइनिंग रूम में शारदा और सुरेन नाश्ता शुरू करने के लिए बलराज की राह देखते हुये बैठे हैं। बलराज बाथरूम से निकलता है और डाइनिंग टेबल पर आकर बैठता है। फिर कुछ गम्भीर मुद्रा में अपनी पत्नी की ओर देखकर बोल उठता है।]

बलराज : पढ़ा तुमने अपने लाडले का इंग्लैण्ड से आया हुआ खत? मैंने तो पहले ही कहा था कि उसे बिना शादी किए मत भेजो। मगर तुम्हें बड़ा विश्वास था अपने लाडले पर! अब देख लिया नतीजा? (व्यंग्यपूर्ण स्वर में) लंदन गए थे बिजनैस मैनेजमेंट का डिप्लोमा करने! और अभी तो गए एक साल भी नहीं हुआ है कि कर बैठे लव मैनेजमेंट। (कुछ रुककर) अगर तुम इस शादी के लिए राजी हो तो लिख भेजना अपनी इजाजत। मगर मुझे यह हरगिज

मंजूर नहीं। उसे यह शादी करनी ही है तो वहीं लंदन में
हमारे घर में उसके लिए कोई जगह नहीं। (क्रोध में) अब
फूटी कौड़ी भी नहीं भेजी जाएगी।

शारदा आप नाश्ता तो आराम से कर लीजिए। इतने परेशान क्यों हो रहे हैं ? आखिर वह हमारा बेटा है। मुझे अब भी पूरा विश्वास है कि हमारी आज्ञा के बिना वह ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे हमारी इज्जत को कोई आँच आए।

बलराज (चाय का घूँट पीते हुए) शारदा, तुम नहीं जानतीं, पश्चिम की हवा ही कुछ ऐसी है। वह इन्सान को बदल देती है।

शारदा : आप बिल्कुल निश्चिन्त रहें। वह शादी यहीं आकर करेगा।

बलराज (कुछ सोचकर सुरेन की ओर देखते हुए) सुरेन, तुम आज ही राजेश को केबल भेज दो कि तुम्हारी माँ की तबियत कुछ दिनों से बहुत खराब है। वह जल्दी ही घर लौट आए।

सुरेन : (आश्चर्य से) मगर डैडी, फिर भैया की पढ़ाई का क्या होगा ?

बलराज : (तीव्र स्वर में) देख नहीं रहे हो, वहाँ जाकर वह कौन-सी पढ़ाई कर रहा है ? उसे पढ़ना है, तो वह यहीं आकर पढ़े।

शारदा : ऐसे हड़बड़ाने की क्या जरूरत है ?

बलराज : अभी भी मेरा कहना मानो तो ठीक है, वर्ना आगे चलकर और बड़ा पश्चात्ताप होगा।

[बलराज गुस्से में टेबल से उठ जाता है और मिल जाने के लिए रवाना हो जाता है। शारदा और सुरेन वहीं बैठे रहते हैं।]

सुरेन : माँ, भैया को अगर इस झूठ का कभी पता चला तो वह बहुत बुरा मानेंगे।

शारदा : और अब कर ही क्या सकते हैं ? अपने डैडी का गुस्सा तो तुम जानते ही हो। बाप-बेटे के बीच मैं ही पिसी जा रही हूँ। (डब-डबाई आँखों से) कुछ भी करूँ, मुझे तो बुरा होना ही है। तुम आज ही राजेश को केबल भेज दो।

[कुछ दिन यूँ ही बीत जाते हैं। सुबह का समय है। सुरेन घर से बाहर जाने की तैयारी में है। इतने में पोस्टमैन केबल दे जाता है। उसे पढ़ते ही खुशी से सुरेन अपनी माँ को पुकारने लगता है।]

सुरेन : माँ, माँ ! कहाँ हो तुम माँ ?

शारदा : (कमरे से बाहर आते हुए) अरे, यों क्या पागलों की तरह चिल्ला रहा है ?

सुरेन : माँ, भैया का केबल आया है। आज शाम को वे आ रहे हैं।

शारदा : सच बेटे !

सुरेन : (केबल दिखाते हुए) हाँ माँ यह देखो। (शारदा सुरेन के हाथ से केबल लेकर पढ़ती है।)

शारदा : अपने डैडी को फोन कर दे कि राजेश शाम को आ रहा है। (सुरेन जाकर अपने पिताजी को फोन करने लगता है।)

सुरेन : (फोन पर) डैडी, मैं सुरेन बोल रहा हूँ। आज शाम को भैया लंदन से लौट रहे हैं। आप एयरपोर्ट चलेंगे न ?

बलराज : बेटे, आज शाम को मैंने एक जरूरी मीटिंग बुलाई है। वैसे पहुँचने की कोशिश करूँगा। मगर तुम तो पहुँच ही जाना।

सुरेन : अच्छा डैडी। (सुरेन रिसीवर रख देता है।)

□ □

[हवाई अड्डे पर बड़ी भीड़ है। सुरेन और अली लंदन से आने वाले हवाई-जहाज के इन्तजार में खड़े हैं। एनाउन्स किया जाता है कि लंदन से आने वाला प्लेन उतर रहा है। कुछ देर में प्लेन सामने आकर रुकता है। लोगों की भीड़ और बढ़ जाती है। प्लेन का दरवाजा खुलता है और मुसाफिर उतरने लगते हैं। मुसाफिरों में राजेश भी हाथ हिलाता हुआ दिखाई देता है। सुरेन राजेश की ओर दौड़ पड़ता है और गले से लग जाता है।]

सुरेन : भैया, तुम तो बिल्कुल ही नहीं बदले।

राजेश : (मुस्कराकर) दोस्त, मैं लंदन पढ़ाई करने गया था, बदलने तो नहीं, है न ?

सुरेन : सिंसियरली ट्रू भैया। आइ रियली मिस्ड यू वेरि मच ऑल दीज डेज। (राजेश सुरेन की पीठ थपथपाने लगता है।)

राजेश : (तुरन्त) सुरेन, अब माँ कैसी हैं ? माँ को एकाएक क्या हो गया था ?

सुरेन : दिल का दौरा पड़ गया था। अब कुछ ठीक हैं। फिर भी डॉक्टर ने ज्यादा घूमने-फिरने से मना कर रखा है।

राजेश : पिताजी नहीं आए है ?

सुरेन : डैडी ने कोई जरूरी मीटिंग बुलाई है,फिर भी हो सका तो एयरपोर्ट पहुँचने की कोशिश करेंगे।

राजेश : (ड्राइवर से) अली चाचा, कैसे हो ? घर पर सब कुछ ठीक तो है ?

अली : ठीक हूँ, छोटे सरकार। घर पर सब ठीक हैं। अब चलिए सरकार, मालकिन आपका इन्तजार कर रही होंगी।

सुरेन : अली चाचा सामान रखवा दिया गाड़ी में ?

अली : जी सरकार।

सुरेन : चलो भैया। (सब गाड़ी की ओर बढ़ते हैं।)

□ □

[बाहर गाड़ी के रुकने की आवाज सुनकर [illegible] में जाकर बिस्तर पर लेट जाती है।]

राजेश : (घर में दाखिल होकर) माँ, माँ कहाँ हो ? (पुराने नौकर दयाल को देखकर) अरे दयाल चाचा, कैसे हैं ?

दयाल : (खुश होकर) अ
आपके बिना यह घ
[illegible] 1

राजेश इसीलिए तो आ गया हूं चाचा। मां कहां है ?

दयाल . (खुशी के आंसू पोछते हुए) मालकिन ऊपर आराम कर रही हैं, सरकार।

राजेश (नाराज होकर) कितनी बार मना किया है चाचा, फिर भी यह 'सरकार' का नारा लगाए रहते हैं। आपकी उम्र तो दादाजी के बराबर की होगी। आप आज से तो इस घर में नहीं हैं ? पिताजी भी आपके ही हाथों बड़े हुए हैं, आपके मुँह से यह लफ्ज सुनना ...

दयाल · (भावुक होकर) नहीं-नहीं सरकार ! आप बुरा मत मानिए। (आंसू पोछते हुए) इसमें दिल का कोई दोष नहीं है, इस कमबख्त जबान का ही दोष है।

[उसी वक्त सुरेन वहां आ जाता है।]

सुरेन : चलो भैया, मां ऊपर लेटी होंगी।

[राजेश और सुरेन दोनों ऊपर शारदा के कमरे में आते हैं।]

शारदा : (राजेश को देखकर बिस्तर पर उठ बैठते हुए) आ गए मेरे बेटे !

राजेश : हाँ मां ! लेकिन तुम्हें एकाएक यह क्या हो गया ? अब ठीक तो हो ? केवल पढ़ते ही मेरे तो होश उड़ गए थे।

शारदा · (मुस्कराते हुए) आखिर अपनी मां के लिए बेटे का दिल नहीं धड़केगा तो और किस का दिल धड़केगा, बेटे !

राजेश . मां ! (गले से लग जाता है। दोनों की आंखों से खुशी के आंसू बह निकलते हैं) मां, अब तो तुम बिल्कुल ठीक हो न ?

शारदा : (मुस्कराकर) अब मेरा बेटा जो नजदीक है ! मेरी सारी बीमारी ठीक हो गई। वहां तुम्हारी पढ़ाई तो ठीक से होती थी न बेटे ?

राजेश . हाँ मां ! कुछ ही दिनों में मैं इम्तहान देने वाला था। अगर अब जल्दी न लौट सका, तो छ महीने बाद ही दूँगा।

शारदा . बेटे, मैं तो अब चाहती हूँ कि मेरे दोनों बेटे मरते दम तक मेरी आंखों के सामने ही रहें।

राजेश : मां ! ऐसा न कहो, तुम्हें कुछ नहीं होगा।

कि लन्दन से वापस बुलाने के लिए उसके साथ एक तेज भेजा गया था। घर में उसकी शादी की बातें जोर-शोर से होने लगती हैं। इन सब बातों से उसके दिल को भारी ठेस पहुँचती है। वह चुप-चाप अपने गम को सह लेता है।

एक दिन सुबह, नाश्ते के बाद राजेश मिल जाने के लिये निकलने लगता है, तो शारदा पास आकर उससे कहती है।]

शारदा : बेटे, आज शाम कुछ लोग तुम्हें देखने आने वाले हैं। तुम मिल से सीधे घर चले आना।

राजेश : माँ, तुमने हर दिन यह क्या मुसीबत लगा रखी है! कई बार तो कह चुका, कि मुझे कोई लड़की वड़की पसन्द नहीं। तुम सुरेश की बात करो।

शारदा जब तक घर में बड़ा लड़का हो, माँ किस मुँह से छोटे की बात चला सकती है। अगर तुझे हमारी दिखाई कोई लड़की पसन्द नहीं है, तो हमें अपनी ही पसन्द दिखा दो।

राजेश : माँ! क्यों जले पर नमक छिड़क रही हो? मैंने अपनी पसन्द तो पहले ही बता दी है, वही आज है, और कल भी वही रहेगी।

शारदा बेटे, तुम अगर लन्दन वापस नहीं लौटोगे, तो वह लड़की तो तुम्हें वैसे ही भूल जायगी। तब फिर क्यों जिद कर रहे हो?

राजेश : (चिढ़कर) हाँ, क्योंकि वह लड़की, लड़की नहीं है, बुत है जो भूल जाएगी। मेरे अरमानों का गला घोंटकर क्यों सब मेरे पीछे पड़े हुए हो?

[राजेश तेजी से घर से बाहर निकल जाता है।]

□ □

[दिन बीतते जाते हैं। राजेश की बेचैनी बढ़ती जाती है। एक दिन शाम को बनराज के घर पर राजेश को देखने के लिये कुछ मेहमान आए हुए हैं। शारदा के कहने पर सुरेन घर से राजेश

अ‍क एक] [मयह

को फोन करता है कि माँ की तबीयत ठीक नहीं है, और वह मिल से फौरन ही घर आ जाए। राजेश तुरन्त ही मिल से घर की ओर रवाना होता है। रास्ते में वह अपनी गाड़ी की रफ्तार और बढ़ा देता है। *एकाएक गाड़ी को ज़ोर से ब्रेक लगता है। गाड़ी से* टकराकर एक लड़की सड़क पर गिर पड़ती है। लोग जमा हो जाते हैं।]

एक : क्या अन्धों की तरह गाड़ी चलाते हैं ! इन्हें औरों की जिन्दगी की तो कोई परवाह ही नहीं।

[राजेश गाड़ी का दरवाजा खोलकर बाहर दौड़ा आता है। लोगों की भीड़ काफी बढ़ जाती है। वह भीड़ को चीरता हुआ उस *लड़की के पास जा पहुँचता है, जो सिर में चोट आने के कारण* बेहोश हो गई है। सड़क पर खून फैला है।]

राजेश : इन्हें जल्दी से गाड़ी में लेटा दें।

[खुद भी लड़की को उठाने में मदद करता है। कुछ लोग लड़की की बिखरी हुई किताबें और टिफिन बाक्स को गाड़ी में रख देते हैं। राजेश दो-एक आदमियों को अपने साथ लेता है और गाड़ी को अस्पताल की ओर ले दौड़ता है।]

एक : बेचारी ! नौकरी करके घर लौट रही होगी, अब न जाने कहाँ पहुँचेगी ?

दूसरा : बस यही तो जिन्दगी है !

□ □

[राजेश देर से घर पहुँचता है। ड्राइंग-रूम में घर के लोग उसकी राह देखते हुए थके, उदास बैठे हैं।]

शारदा : बेटे, इतनी देर कहाँ लगा दी ? मेहमान तुम्हारा कितना इन्तजार करके अभी-अभी गए हैं !

राजेश : (गुस्से में) मेहमान ! मुझे तो [illegible] तबीयत [illegible]]

खराब है ! क्यों तुम लोग छल-कपट करके मेरी जिन्दगी से खेल रहे हो ?

[बलराज क्रोध से खड़ा हो जाता है, मगर कुछ बोल नहीं पाता। शारदा की आँखों में आँसू भर आते हैं।]

शारदा : बेटे, तमाशा तो तुमने हमारी जिन्दगी को बना रखा है। (आँसू पोंछते हुए) सबको तुम्हारी कितनी फिक्र है, लेकिन तुम्हें किसी की कोई परवाह नहीं।

राजेश : समझ में नहीं आता, अगर मैं शादी करना नहीं चाहता, तो उसके लिए जबरदस्ती क्यों हो रही है ? आखिर मुझे चैन से जी तो लेने दो। तुम्हारी तबीयत की बात जानकर आज तेजी से घर आते-आते मेरी गाडी से एक लड़की का सीरियस एक्सिडेण्ट हो गया !

[राजेश की बात सुनकर सब चौंक पड़ते हैं। बलराज, जो कमरा छोड़कर जा रहा था, वहीं दरवाजे पर रुक जाता है। राजेश गुस्से से अपने कमरे की ओर बढ़ जाता है]

□ □

[सरला अस्पताल के एक कमरे में पलंग पर लेटी हुई है। उसकी आँखों पर पट्टी बँधी है। पास एक पुलिस इन्सपेक्टर, दो सिपाही, गिरधारी लाल और माया खड़े हुए हैं। राजेश भी दरवाजे पर आकर खड़ा हो जाता है।]

इन्स० : (सरला से) क्या आप बता सकती है कि जब आपका एक्सिडेण्ट हुआ तब गाड़ी क्या राँग साइड से आ रही थी ?

सरला : जी नहीं। गाड़ी तो ठीक साइड से आ रही थी। मैं ही कुछ जल्दी में थी। रास्ता झट से पार करना चाहा था। टक्कर लगने के बाद मुझे कुछ याद नहीं।

गिरधारी : [दो कदम आगे बढ़कर। वे चलने में लँगड़ाते है।] इन्सपेक्टर

को फोन करता है कि माँ की तबीयत ठीक नहीं है, और वह मिल से फौरन ही घर आ जाए। राजेश तुरन्त ही मिल से घर की ओर रवाना होता है। रास्ते में वह अपनी गाड़ी की रफ्तार और तेज कर देता है। एकाएक गाड़ी को जोर से ब्रेक लगता है। गाड़ी से टकराकर एक लड़की सड़क पर गिर पड़ती है। लोग जमा हो जाते हैं।]

एक : क्या अन्धों की तरह गाड़ी चलाते हैं! इन्हें औरों की जिन्दगी की तो कोई परवाह ही नहीं।

[राजेश गाड़ी का दरवाजा खोलकर बाहर दौड़ा आता है। लोगों की भीड़ काफी बढ़ जाती है। वह भीड़ को चीरता हुआ उस लड़की के पास जा पहुँचता है, जो सिर में चोट खाने के कारण बेहोश हो गई है। सड़क पर खून फैला है।]

राजेश : इन्हें जल्दी से गाड़ी में लेटा दें।

[खुद भी लड़की को उठाने में मदद करता है। कुछ लोग लड़की की बिखरी हुई किताबें और टिफिन बाक्स को गाड़ी में रख देते हैं। राजेश दो-एक आदमियों को अपने साथ लेता है और गाड़ी को अस्पताल की ओर ले दौड़ता है।]

एक : बेचारी! नौकरी करके घर लौट रही होगी, अब न जाने कहाँ पहुँचेगी?

दूसरा : बस यही तो जिन्दगी है!

☐ ☐

[राजेश देर से घर पहुँचता है। ड्राइंगरूम में घर के लोग उसकी राह देखते हुए थके, उदास बैठे हैं।]

शारदा : बेटे, इतनी देर कहाँ लगा दी? मेहमान तुम्हारा कितना इन्तजार करके अभी-अभी गए हैं!

राजेश : (गुस्से से) मेहमान! मुझे तो बताया था कि तुम्हारी तबीयत अट्ठारह]

मराब है ! क्यों तुम लोग छल-कपट करके मेरी जिन्दगी से खेल रहे हो ?

[बलराज क्रोध से खड़ा हो जाता है, मगर कुछ बोल नहीं पाता। शारदा की आँखों में आँसू भर आते हैं।]

शारदा : बेटे, तमाशा तो तुमने हमारी जिन्दगी को बना रखा है। (आँसू पोंछते हुए) सबको तुम्हारी कितनी फ़िक्र है, लेकिन तुम्हें किसी की कोई परवाह नहीं।

राजेश : समझ में नहीं आता, अगर मैं शादी करना नहीं चाहता, तो उसके लिए जबरदस्ती क्यों हो रही है ? आखिर मुझे चैन से जी तो लेने दो। तुम्हारी तबीयत की बात जानकर आज तेजी से घर आते-आते मेरी गाड़ी से एक लड़की का सीरियस एक्सिडेंण्ट हो गया !

[राजेश की बात सुनकर सब चौंक पड़ते हैं। बलराज, जो कमरा छोड़कर जा रहा था, वहीं दरवाजे पर रुक जाता है। राजेश गुस्से में अपने कमरे की ओर बढ़ जाता है]

□ □

[सरला अस्पताल के एक कमरे में पलंग पर लेटी हुई है। उसकी आँखों पर पट्टी बँधी है। पास एक पुलिस इन्सपेक्टर, दो सिपाही, गिरधारी लाल और माया खड़े हुए हैं। राजेश भी दरवाजे पर आकर खड़ा हो जाता है।]

इन्स० : (सरला से) क्या आप बता सकती हैं कि जब आपका एक्सिडेंण्ट हुआ तब गाड़ी क्या रांग साइड से आ रही थी ?

सरला : जी नहीं। गाड़ी तो ठीक साइड से आ रही थी। मैं ही कुछ जल्दी में थी। रास्ता झट से पार करना चाहा था। टक्कर लगने के बाद मुझे कुछ याद नहीं।

गिरधारी : [दो कदम आगे बढ़कर। वे चलने में लँगड़ाते हैं।] इन्सपेक्टर …………

शायद, जो हमारी किस्मत में था, वह तो हो ही गया। अब आप हमें कुछ और परेशान न करें।

इन्स० मामले की जाँच करना तो हमारा फ़र्ज़ है।

[राजेश आगे बढ़कर पुलिस इन्सपेक्टर से मिलता है।]

राजेश : इन्सपेक्टर, आई एम राजेश राठौर। मुझे इस दुर्घटना के लिए बड़ा अफ़सोस है। मैंने चाकू को रोकने की बहुत कोशिश की थी, मगर कामयाब न हो सका।

इन्स० : ओह आई सी! आप सेठ बनराज के बेटे हैं न?

राजेश : जी हाँ।

इन्स० : मैं इन्सपेक्टर अशोक शर्मा हूँ। आप मुझे नहीं पहचानते। मैं आपके डैडी को अच्छी तरह जानता हूँ।

राजेश : प्लीज़ टू मीट यू। (दोनों हाथ मिलाते हैं।)

इन्स० मैंने केस की पूरी जाँच कर ली है। वैसे आपको कोई तकलीफ़ नहीं होगी, मगर पुलिस से एक बार पुलिस स्टेशन आना होगा।

राजेश : मैं आज ही शाम को चला आऊँगा।

इन्स० . थैंक्यू।

[इन्सपेक्टर जाता है। माया और गिरधारी लाल राजेश की ओर देखते हैं। गिरधारी लाल की आँखें छलक आती हैं।]

गिरधारी : (राजेश से) मैं ही इन बदनसीब लड़कियों का बाप हूँ। यह मेरी बड़ी और यह छोटी बेटी है।

राजेश : जी, जो कुछ भी हुआ है, उसके लिए मुझे बहुत अफ़सोस है। मैं आपकी हर मदद करने को तैयार हूँ और भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि सब कुछ ठीक हो जाए।

गिरधारी : (डबडबाई आँखों से) बुढ़ापे में भगवान ने सब कुछ छीन लिया। अब ऐसा लग रहा है कि उससे हमारा यह सुख भी नहीं देखा गया। (आँसू बह निकलते हैं)

राजेश : नहीं, नहीं, आप धैर्य रखिए। सब ठीक हो जाएगा।

सरला : जो हमारी तकदीर में था, वही हुआ है। आप हमारे लिये परेशान न हों।

राजेश : क्या आप भी तकदीर में मानती है ?

सरला : जी, शायद !

राजेश : खैर ! लेकिन मुझे विश्वास है कि इन्सान अपने हाथों अपनी तकदीर को बदल सकता है। आप धीरज रखिए। कुछ ही दिनों में आप बिल्कुल ठीक हो जायँगी।

[सरला चुप रहती है।]

मेरे लायक कोई काम हो तो कृपया बताइए।

सरला : शुक्रिया ! आप बेकार हमारे लिए तकलीफ न करें।

राजेश : नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। अच्छा, तो मैं फिर आऊँगा, नमस्ते !

[सबको हाथ जोड़ता हुआ राजेश कमरे से बाहर निकल कर डाक्टर के केबिन की ओर जाता है।]

राजेश : (प्रवेश करके) गुड मार्निंग डाक्टर।

डाक्टर : गुड मार्निंग !

राजेश : डाक्टर, यह एक्सिडेण्ट का केस, जो कल दाखिल हुआ है, ज्यादा सीरियस तो नहीं है ? आई एम राजेश कोठारी, इनवॉल्व्ड इन द केस।

डाक्टर : ओह, आई सी ! प्लीज हैव ए सीट।

राजेश : (सामने कुर्सी पर बैठते हुए) थैंक्यू डाक्टर।

डाक्टर : मिस्टर कोठारी, टु बी फ्रैंक, द केस इज वेरी सीरियस। मरीज को सिर में काफी गहरी चोट आई है। हो सकता है कि मरीज की आँखों की रोशनी चली जाये।

राजेश : डाक्टर ! क्या कह रहे हैं आप !

डाक्टर : हम पूरी कोशिश कर रहे हैं मिस्टर कोठारी। फिर भी जब तक ऑपरेशन न हो जाए, तब तक ठीक से कुछ नहीं कह सकते।

राजेश : डाक्टर ! चाहे जितना भी खर्च क्यों न हो, मरीज का ठीक होना बहुत जरूरी है।

डाक्टर : मैं आपसे सहमत हूँ। आई अण्डरस्टैण्ड योर फीलिंग मि. कोठारी। मगर पैसों से जिन्दगी नहीं खरीदी जा सकती।

राजेश : आई नो डाक्टर ! आई अण्डरस्टैण्ड !

डाक्टर : होप फॉर द बेस्ट।

राजेश : (उठते हुए) थैंक डाक्टर।

[राजेश केबिन से निकलकर आता है।]

[राजेश बहुत उदास है। उसे हर पल पुरानी यादें सता रही हैं उसे घर में कोई शान्ति नहीं मिलती। अपने कमरे में बैठकर वह नीलोफर को पत्र लिखने बैठता है। सामने मेज पर नीलोफर की तस्वीर पड़ी हुई है। तस्वीर को देखते-देखते उसे लन्दन एयरपोर्ट की याद आ जाती है। कुछ क्षण के लिए वह अतीत में खो जाता है।]

नीलोफर : होप यू वॉण्ट फॉरगेट मी डार्लिंग ?

राजेश : नेवर डियर ! नेवर। बट आई फियर यू विल !

नीलोफर : (राजेश की बाँहों में समाते हुए) ओह नो। रियली, आई लव यू योर्स, एण्ड योर्स फॉर एवर !

राजेश : ट्रस्ट मी द, स्वीटहार्ट !

नीलोफर : व्हेन विल यू रिटर्न ?

राजेश : सून डार्लिंग !

नीलोफर : रीअली !

राजेश : यस डार्लिंग ! (राजेश नीलोफर की पार्टिंग किस लेता है और जाते हुए कहता है) बाय, स्वीटहार्ट !

नीलोफर : (आँखों में आँसू लिए और हाथ हिलाते हुए) बाय !

[अतीत का दृश्य स्मृति-पटल से ओझल होते ही राजेश की आँखें खुलती हैं]

भर आती है। वह पत्र लिफाफे धीमे स्वर मे फिर मे एक बार पढ़ता है।]

राजेश माई डियर, नीलू !

गौरी ! आई हैव चेन्ज्ड एज यू डाउटेड मी। आई वॉण्ट बी एबल टु रिटर्न टु यू। नाउ, ईवन इफ् आइ से आई लव यू, इट वोण्ट मीन यू ऐनीथिंग्। द बेस्ट कोर्स नाउ इज दैट यू फौरगिव एण्ड फॉरगेट मी। यन्स योर्स,

—रिजी

□ □

[राजेश गाडी लेकर ... में घूमने चला जाता है। शाम गहरी हो चुकी है। राजेश कार को एक जगह खडी कर देता है, और कार के रेडिओ को ऑन करता है।]

रेडिओ - फरमाइश इन सब फौजी भाइयो ने की है–सार्जण्ट पेडनेकर, कॉरपोरल सेलर सेबास्टियन एल जेवियर, मिस्त्री, शर्मा और राठोड़। हवलदार सेमीथार और चौहाण।

चाँद तारों भरी ये रात है,

आओ तुमसे कहनी इक बात है। चाँद तारों भरी····

राजेश गाडी से नीचे उतर जाता है, और चांद तारों भरी रात का आकर्षक दृश्य देखकर मुग्ध हो उठता है।]

देख जमीं आसमां का मिलन

आती पुरानी हर याद है,

ऐसे में हो तुम कहाँ

पूछती मुझसे यह रैन है। चाँद तारों भरी····

□ □

[शाम हो गयी है। शारदा दीवानखाने में बैठी हुई है। राजेश मित्र के यहाँ से लौटकर घर आता है और अपने कमरे में जाने के लिए सीढ़ियों की ओर बढ़ता है कि शारदा उसे रोक कर बोल उठती है—]

शारदा : राजेश, तुम्हें हो क्या गया है ? किसी से न कभी कुछ बोलना, न कहना, तुम्हारी यह हालत देखकर मेरी तो जान सूखी जा रही है।

राजेश : माँ, तुम मेरी फिकर मत किया करो। मैं ठीक हूँ।

शारदा : बेटे, आज नैनीताल से तुम्हारे मोहन अंकल की चिट्ठी आई है। उन्होंने तुम्हें वहाँ बुलाया है। कुछ दिन के लिए तुम घूम-फिर आओ। तुम्हारा दिल बहल जाएगा।

राजेश : (टालते हुए) मैं अकेला वहाँ जाकर क्या करूँगा ?

शारदा : (हँसकर) बेटे, वहाँ तुम्हारे अंकल जो हैं ! और उनके साथ उनकी भानजी भी रहती है। वह बी. ए. पढ़ी है। उसे भी देखते आना। अब घर में बहू लाने के लिए मेरा तो जी तड़प रहा है।

राजेश : (तनिक झुँझलाकर) माँ, मैं कितनी बार कह चुका कि अब इस जन्म में तो मैं कभी शादी करूँगा नहीं। तुम्हें अगर घर में बहू लानी ही है, तो अपने सुरेन की शादी कर दो !

[तभी पीछे से सहसा बलराज वहाँ आ जाता है।]

बलराज : हाँ, हाँ, सुरेन की माँ, अब हम सुरेन की शादी करेंगे। तुम क्यों इसके पीछे पड़ी हो ? बलराज कोठारी के नाम पर धब्बा लगने दो। लन्दन से लौटे हुए इस लाट साहब को इससे क्या फर्क पड़ता है।

[मुँह फेर कर चला जाता है।]

□ □

[सुबह मिल जाते हुए राजेश सरला को देखने के लिए अस्पताल जाता है। पहले वह डॉक्टर के केबिन में जाता है।]

राजेश : (दाखिल होकर) गुड मॉर्निंग डॉक्टर !

डॉक्टर : हैलो, गुड मॉर्निंग ! बैठिए।

राजेश : (बैठते हुए) थैंक्यू डॉक्टर साहब। अब आपके पेशेण्ट की क्या प्रोग्रेस है ?

डॉक्टर : मिस्टर कोठारी, बस दो दिनों में आँख की पट्टी खुल जाएगी। लेकिन हमें अफसोस है कि हमारी पेशेण्ट अब कभी देख नहीं सकेगी।

राजेश : डॉक्टर ! ये आप क्या कह रहे हैं।

डॉक्टर : हमें आपसे और मरीज से पूरी हमदर्दी है, मिस्टर कोठारी। मगर अब कुछ नहीं हो सकता।

राजेश : डॉक्टर, प्लीज डू समथिंग। आई एम रेडी टू स्पेंड ...

डॉक्टर : सॉरी मिस्टर कोठारी। द ऑप्टिकल सेन्टर ऑफ द ब्रेन इज डिस्ट्रॉयड। अब कहीं भी इसका कोई इलाज नहीं हो सकता। आई एम सॉरि टु गिव यू दिस सैड न्यूज।

□ □

[राजेश सरला के कमरे में आता है। कमरे में प्रेम और उसके माता-पिता भी मौजूद हैं। प्रेम सरला के पलङ्ग के करीब खड़ा है। राजेश के दाखिल होते ही उन सब में बातचीत बन्द हो जाती है।]

राजेश : (गिरधारीलाल से) जी, नमस्ते !

गिरधारी : नमस्ते ! अभी-अभी आपका ही जिक्र कर रहे थे।

[illegible] से) जी, मेरा जिक्र !

[illegible]रे नसीब ही फूटे हों, तो कोई क्या कर सकता है। लेकिन [illegible] जैसे इन्सान कहाँ मिलते हैं, जो ठोकर लगाकर मुड़कर देखना [illegible] हैं।

[illegible]]

[पच्चीस

के लिए कह गए हैं। घर जाने के लिए उन्हीं का इन्तजार कर रहे हैं।

[उसी वक्त वॉर्ड बॉय सरला के कमरे में दाखिल होता है।]

वॉर्डबॉय : कोई प्रेम साहब का आफिस में फोन आया है। उनकी तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए वह नहीं आएँगे। (वॉर्ड बॉय चला जाता है।)

राजेश : (गिरधारीलाल से) अगर आपको कोई एतराज न हो, तो अपनी कार में घर छोड़ देता हूँ।

सरला : आप क्यों तकलीफ करेंगे। हम टैक्सी से चले जाएँगे।

राजेश : जी, इसमें तकलीफ की तो कोई बात नहीं है, बल्कि मुझे बड़ी खुशी होगी।

माया : बाबू जी, जब ये इतना कह रहे हैं, तो क्यों न हम इन्हीं के साथ घर चले जाएँ ?

गिरधारी : (राजेश से) आपको बहुत कष्ट होगा।

राजेश : जी, बिल्कुल नहीं होगा। चलिए।

[राजेश खुद थोड़ा सामान उठा लेता है। माया सरला का हाथ पकड़कर उसे राजेश की गाड़ी तक ले आती है। माया गाड़ी की आगे वाली सीट पर बैठ जाती है और गिरधारीलाल और सरला पिछली सीट पर बैठते हैं। माया राजेश को घर की ओर का रास्ता बताती है। गाड़ी मेन रोड से होती हुई एक स्ट्रीट में मुड़ती है और थोड़ी दूरी पर जाकर, दो मंजिल वाले मकान के सामने रुकती है। गाड़ी से सबके उतर जाने के बाद राजेश जाने के लिए कहता है। मगर सबके आग्रह से उसे घर में जाना पड़ता है। राजेश भी थोड़ा सामान उठाकर घर में ले जाता है। नीचे ही की मंजिल पर दो कमरे वाला घर है। एक कमरा जो दीवान खाना है, उसमें एक पलंग, टेबल-कुर्सी और एक पुराना सोफा पड़ा है। सोफे के बाजू वाले छोटे टेबल पर रेडियो है। वैसे घर साफ-सुथरा है। गिरधारीलाल के कहने पर राजेश सोफे ➡

है ? यह कैसा अन्याय है ? (बच्चों की तरह बिलख-बिलखकर रो पड़ता है।)

डॉक्टर आप बुजुर्ग आदमी हैं, जरा धैर्य से काम लीजिए। हम कु महीनों बाद, फिर ऑपरेशन करेंगे और पूरी कोशिश करेंगे कि आपकी बेटी देख सके।

[कुछ कहकर डाक्टर चला जाता है। माया सरला से लिपट- रोने लगती है। सरला उसे आश्वासन देती है। राजेश कमरे से बा चला जाता है और डॉक्टर के केबिन की ओर मुड़ता है।]

राजेश : (केबिन में) डॉक्टर, कुछ नहीं हो सकता ?

डॉक्टर . मिस्टर कोठारी, आई एम सो सॉरी। अब कुछ नहीं हो सकता मरीज और रिश्तेदारों को सिर्फ आशा दिलाई जा सकती है। व मैंने कर दिया है। वी आर हेल्पलेस, मिस्टर कोठारी।

राजेश . आप मरीज को कब डिस्चार्ज दे रहे हैं ?

डॉक्टर परसों सुबह।

राजेश थैंक्यू डॉक्टर। (चला जाता है।)

□ □

[सरला को अस्पताल से डिस्चार्ज मिल चुका है। वे सब घर जाने के लिए प्रेम का इन्तजार कर रहे हैं। उसी वक्त राजेश अस्पताल पहुँचता है और सरला के कमरे में दाखिल होता है।]

राजेश : नमस्ते !

गिरधारी : नमस्ते ! आपने इतनी सुबह-सुबह आने का कष्ट किया।

राजेश : जी, डाक्टर ने मुझे पहले ही बताया था कि आज डिस्चार्ज दे रहे हैं। सोचा, मिल जाने से पहले शायद आपकी कुछ मदद कर सकूँ।

तभी कुसुम वहाँ आ पहुँचती है और अपने पति से बातें करने लगती है।]

कुसुम अजी मैंने कहा, कुछ सुन भी रहे हो !

जानकी अरी भागवान ! बहुत सुन चुका हूँ। सारे दिन तो सुनाती रहती हो। (अखबार रखते हुए) कहो, अभी कुछ बाकी है क्या ?

कुसुम : जब कुछ कहती हूँ तब तो अच्छा नहीं लगता। (मुँह बनाकर) पहले ही मना किया था कि उस लँगडे भिखारी के घर रिश्ता मत जोड़ो। फिर भी बेटे की सुनकर अपनी मनमानी कर आए। मैं पूछती हूँ, क्या अब भी बाप-बेटे दोनों मिलकर उस अन्धी को घर लाना चाहते हो ?

जानकी ये क्या बकवास कर रही हो ? कभी अपने मुँह से अच्छी बात बोल लिया करो।

कुसुम : अजी अब बात खोलकर सुन लो। हमें जल्दी ही चलकर यह रिश्ता तोड़ देना है।

जानकी . तुमने अपने बेटे से भी कुछ पूछा है ?

कुसुम हाँ, अभी उससे यह पूछना बाकी है कि कब उस अन्धी को इस घर में ले आना है।

जानकी भागवान ! अगर प्रेम उसी से शादी करना चाहता है तो मुझे यह जानकर बड़ी खुशी होगी। बेचारी की जिन्दगी संभल जाएगी। सास-ससुर की तो सभी बहुएँ सेवा करती हैं, मगर हमें तो अपनी देवी जैसी बहू की सेवा करने का मौका मिलेगा।

कुसुम : हाँ, हाँ, पहले तो उसे अपनी बेटी बनाया थी, अब देवी बनाकर उसकी पूजा करते बैठे रहना। रोज ऐसी अभागिन की सूरत देखने के बजाय, मैं ही इस घर से चली जाऊँगी।

जानकी : अरी भागवान ! जरा सोच तो सही कि कहीं शादी के बाद अन्धी हुई होती तो क्या करती ?

कुसुम : वह चुड़ैल मेरा घर लूटने आ रही थी। इसीलिए भगवान ने उसे यह सजा दी है।

जानकी : भागवान ! क्यों बेकार भगवान को बदनाम कर रही है !

अब एक] [इक्कीस

पर बैठ जाता है। सरला माया के सहारे घर में आकर पलंग पर बैठ जाती है।]

गिरधारी यही हमारा गरीबखाना है। आपने यहां तक आने का कष्ट उठाकर हम पर बड़ी मेहरबानी की है।

राजेश जी, कष्ट कैसा! बल्कि मुझे तो यहां आकर बड़ी खुशी हुई है। कितना सुन्दर घर है! कितनी शान्ति है!

गिरधारी आप सचमुच बहुत ऊँचे इन्सान हैं।

राजेश आप मुझे यूँ ही शर्मिंदा कर रहे हैं।

गिरधारी (माया से) बेटी, जल्दी से जरा चाय तो बना।

राजेश जी नहीं। अभी मुझे जाने की जल्दी है। चाय मैं फिर कभी आकर पी लूँगा।

गिरधारी हमारे नसीब में यह कहाँ कि आप फिर से हमारे घर आएँगे। चाय बनने में कोई ज्यादा देर तो नहीं लगेगी।

राजेश जी, आज मुझे सचमुच बहुत जल्दी है। मैं कोई बहाना नहीं बना रहा हूँ। मैं फिर आऊँगा। (उठ खड़ा होता है।)

सरला - आप चाय पीकर जाते तो अच्छा था।

राजेश (रुकते हुए) अगर आप सब बुरा मान रहे हैं, और चाहते हैं कि मैं यहाँ दुबारा न आऊँ, तो चाय आज ही सही।

गिरधारी नहीं, नहीं, ये आप क्या कह रहे हैं! आपके लिए हमारे घर के दरवाजे हमेशा खुले है।

राजेश शुक्रिया। मैं वादा करता हूँ कि दुबारा आऊँगा, और तब की चाय पक्की रही। (सबको नमस्ते करता हुआ चला जाता है।)

□ □

सरला की आमदनी रुक जाने से और जल्दी ही आने वाले कुछ बुरे दिनों की सोच से गिरधारीलाल के घर शोक का वातावरण फैला हुआ है। सरला का अन्यमन देखकर दिन-ब-दिन गिरधारीलाल की चिन्ता बढ़ती जाती है।]

गिरधारी : (सरला से) बेटी, हमें अस्पताल से आए हुए दस दिन हो गए, लेकिन प्रेमबाबू की ओर से कोई खबर नहीं आई! उनकी तबीयत कहीं ज्यादा न बिगड़ गई हो?

माया : बाबूजी, दीदी कहे तो मैं उनके घर जा आऊँ।

सरला : (रुँधे स्वर में) नहीं बाबूजी। हमें वहाँ जाने की कोई जरूरत नहीं। अब हमारा किसी से कोई रिश्ता नहीं रहा।

गिरधारी : नहीं, नहीं, बेटी यह क्या कह रही हो!

सरला : हमारे अपनों ने भी माँ की बीमार हालत जानने पर कभी कोई मदद नहीं की। वे बे-इलाज मर गईं। आपका पैर कट गया और जब हम बेसहारा हो गए, तब से रिश्तेदार दुश्मन बन गए। तो अब हमारी मुसीबत में साथ देने वाले यह हमारे कौन होते हैं? (रो पड़ती है।)

गिरधारी : नहीं बेटी, नहीं। प्रेम बाबू के घर वाले ऐसा नहीं कर सकते। वे सज्जन लोग हैं। तुम्हारा पूरा इलाज करवाके ही रहेंगे। [तभी घर के खुले दरवाजे पर दस्तक होती है।]

गिरधारी : कौन?

राजेश : (सामने आकर) जी, मैं राजेश। अन्दर आ सकता हूँ?

गिरधारी : आइए, आइए। हमारे ऐसे नसीब कहाँ!

राजेश : नमस्ते!

गिरधारी : नमस्ते! बैठिए।

राजेश : (बैठते हुए) आज कुछ जल्दी घर लौट रहा था, सोचा आप सबसे मिलता चलूँ और साथ-साथ अपना वादा भी पूरा कर लूँ।

गिरधारी : (साश्चर्य) कौन-सा वादा?

राजेश : (मुस्कराकर) जी! आप भूल गए?

[प्रेम बाहर से घर आता है। घर में दाखिल होते ही माँ-बाप से उसका सामना हो जाता है।]

कुसुम प्रेम! इधर आओ।

प्रेम (पास आकर) क्या है माँ?

कुसुम आज गौर से सुन लो, कल हम उस लँगड़े के घर रिश्ता तोड़ने जा रहे हैं। और तुम्हें भी साथ चलना होगा।

प्रेम : (मुँह बनाकर) माँ, मगर अभी भी क्या जल्दी है? कुछ सोचने का समय भी तो दो।

सुम हाँ, हाँ, खूब सोच लो। अगर उस अन्धी को इस घर में लाना है, तो मैं यहाँ एक पल भर नहीं रहूँगी। मैं यह हरगिज बर्दाश्त नहीं कर सकती।

प्रेम माँ! तुम तो जल्दी नाराज हो जाती हो। मैं तुम्हें नाराज करके कोई भी कदम उठाना नहीं चाहता।

सुम (खुश होकर) सच?

प्रेम : हाँ-हाँ माँ, सच! मैं यह शादी नहीं करूँगा। लेकिन माँ तुम्हें कुछ सब्र करना पड़ेगा। मैं सरला से एक बार मिल आऊँ, फिर आकर तुम रिश्ते के लिए मना कर आना। (वहाँ से चला जाता है।)

सुम : (जानकीदास से) देखा! देखा, आपने! आखिर बेटा तो मेरा है न? अपनी माँ की बात नहीं टालेगा।

की : हाँ, हाँ, जानता हूँ। तुम माँ-बेटे दोनों उस गरीब लड़की के ऊपर छुरी फेरना चाहते हो। माँ पैसे की पुजारिन है और बेटा रूप का।

सुम : (चिढ़कर) हूँ! (चली जाती है।)

□ □

सरला की आमदनी रुक जाने से और जल्दी ही आने वाले कुछ बुरे दिनों की सोच से गिरधारीलाल के घर शोक का वातावरण फैला हुआ है। सरला का अन्यमन देखकर दिन-ब-दिन गिरधारीलाल की चिन्ता बढ़ती जाती है।]

गिरधारी (सरला से) बेटी, हमें अस्पताल से आए हुए दस दिन हो गए, लेकिन प्रेमबाबू की ओर से कोई खबर नहीं आई ! उनकी तबीयत कहीं ज्यादा न बिगड़ गई हो ?

माया : बाबूजी, दीदी कहे तो मैं उनके घर जा आऊँ।

सरला . (रूँधे स्वर में) नहीं बाबूजी ! हमें वहाँ जाने की कोई जरूरत नहीं। अब हमारा किसी से कोई रिश्ता नहीं रहा।

गिरधारी नहीं, नहीं, बेटी यह क्या कह रही हो !

सरला . हमारे अपनों ने भी माँ की बीमार हालत जानने पर कभी कोई मदद नहीं की। वे बे-इलाज मर गईं। आपका पैर कट गया और जब हम बेसहारा हो गए, तब से रिश्तेदार दुश्मन बन गए। तो अब हमारी मुसीबत में साथ देने वाले यह हमारे कौन होते हैं ? (रो पड़ती है।)

गिरधारी : नहीं बेटी, नहीं। प्रेम बाबू के घर वाले ऐसा नहीं कर सकते। वे सज्जन लोग हैं। तुम्हारा पूरा इलाज करवाते ही रहेंगे।

[तभी घर के खुले दरवाजे पर दस्तक होती है।]

गिरधारी : कौन ?

राजेश (सामने आकर) जी, मैं राजेश। अन्दर आ सकता हूँ ?

गिरधारी : आइए, आइए। हमारे ऐसे नसीब कहाँ !

राजेश : नमस्ते !

गिरधारी : नमस्ते ! बैठिए।

राजेश : (बैठते हुए) आज कुछ जल्दी घर लौट रहा था, सोचा आप सबसे मिलता चलूँ और साथ-साथ अपना वादा भी पूरा कर लूँ।

गिरधारी : (साश्चर्य) कौन-सा वादा ?

राजेश : (मुस्कराकर) जी ! आप भूल गए ?

माया : (हंस कर) घबराइए नहीं, ठीक से याद है। आप कुछ देर आराम करिये, तब तक चाय बन जाएगी।

गिरधारी : अरे हां मैं तो भूल ही गया था। अब उम्र ही कुछ ऐसी है।

राजेश : (मुस्कराते हुए) जी, उम्र नहीं, फिक्र कहिए। आदमी बेकार बातें सोचकर ही तो जीवन को नीरस बना लेता है। इसमें उम्र का क्या दोष ? इन्सान चाहे तो अपनी सोच से हमेशा जवान रह सकता है।

गिरधारी : बिल्कुल ठीक कह रहे हैं आप।

राजेश : (माया से) अगर बाबूजी ठीक कहते हैं, तो माया जी, आपको एक तकलीफ और करनी होगी।

माया : (मुस्करा कर) क्या ?

राजेश : चाय के साथ-साथ एक गिलास पानी भी। (राजेश की बात पर सब हँस देते हैं।)

माया : पानी मैं अभी ले आती हूँ।

राजेश : जी नहीं, ऐसी कोई जल्दी नहीं है।

माया : तो ठीक है, पहले मैं चाय ही बना देती हूँ। (अन्दर चली जाती है)

राजेश : सरला जी ! अब कैसी हैं आप ?

सरला : जी, मैं ठीक हूँ।

राजेश : (तुरन्त) डाक्टर ने आपके केस की राय लन्दन से मंगवाई है। उनके आते ही आपका दुबारा आपरेशन होगा और आप बिल्कुल ठीक हो जाएंगी।

गिरधारी : मैं भी तो सरला बेटी से अभी यही कह रहा था। भगवान् की कृपा से सब ठीक हो जायगा। फिर, प्रेम बाबू जैसे हमारे साथ हैं। क्या नहीं कर सकते हैं वे ?

राजेश : जी हाँ। हम सब मिलकर पूरी कोशिश करेंगे और सरला जी की आँखों की रोशनी जल्दी ही लौट आएगी।
[माया चाय लेकर आती है।]

(चाय का कप लेते हुए) फिर भी आपने मेरा वादा तो अधूरा ही रखा।

माया : क्यों ?

राजेश : पानी जो नहीं लाईं।

माया : ओह ! भूल गई। अभी ले आती हूँ।

राजेश : कोई बात नहीं, रहने दीजिए, फिर कभी।

माया : अच्छा, तो अब मैं समझी !

राजेश : क्या ?

माया : (मुस्कराकर) दुबारा इस वादे का बहाना करके आने का इरादा होगा ! (सब हँस देते हैं।)

गिरधारी : (राजेश से) माया बेटी की बात का आप कहीं बुरा न मानिएगा। बस, किसी से जरा-सी जान-पहचान हो गई, तो उन्हीं से हँसी-मजाक करने लगती है।

राजेश : जी, क्या बुरा है इसमें ? अगर थोड़े ही वक्त में इन्सान एक दूसरे के ज्यादा करीब आ जाए तो जीने का आनन्द बढ़ जाता है, अपनापन बढ़ जाता है।

गिरधारी : आपकी बात तो सही है, राजेश बाबू। मगर इसे समझने वाले लोग कितने हैं ?

राजेश : दुनिया में सभी लोग तो यह नहीं समझ सकते। फिर भी जो समझ लेते हैं वे जीने का सही मजा लूटते हैं।

[चाय खत्म करके चाय के कप को छोटे मेज पर रख देता है।]

घर पहुँचने की जरा जल्दी है, इसलिए अब इजाजत चाहता हूँ।

गिरधारी : (सहृदयता से) कभी-कभी आते रहना। आने से बड़ी खुशी होती है।

राजेश : जी, मेरे लिए भी यह इतनी ही बड़ी खुशी की बात है।

गिरधारी : (सँभल कर) बस, आपकी कृपा हम पर बनी रहे।

राजेश : (उठते हुए) आप तो फिर मुझे अपने से पराया बना रहे हैं !

गिरधारी : नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है।

[गिरधारीलाल की यह बात प्रेम को बेचैन बना देती है ।]

प्रेम : (सरला से) सरला, शायद इतने दिन घर में रहकर तुम 'बोर' हो गई होगी । चलो आज थोड़ी देर हम कहीं बाहर घूम-फिर आते हैं ।

माया : (चाय का कप लाते हुए) हाँ-हाँ दीदी, जल्दी तैयार हो जाओ । (मुस्कराकर) वर्ना जीजाजी कहीं बुरा मान जायेंगे ।

प्रेम : (माया से) लगता है तुम बहुत चालाक हो गई हो !

माया : (हँसकर) तो क्या आपको आज ही मालूम हो रहा है ?

सरला . कहीं बाहर जाने को मेरा जी नहीं करता ।

माया : (सरला का हाथ पकड़कर) ओह दीदी, उठो न, क्यों उनका भी मूड खराब कर रही हो ? चलो, तुम्हें तैयार कर देती हूँ ।

गिरधारी : (माया से) बेटी, तुम भी उनके साथ चली जाओ न !

माया : ओह बाबूजी ! आप कैसी बात कर रहे हैं । मैं क्यों साथ आऊँ ? दीदी और जीजाजी ही घूम आयेंगे । दीदी उठो भी ।

प्रेम . हाँ-हाँ, जल्दी ही वापस आ जाएँगे ।

[माया सरला को खींचकर बगल के कमरे में ले जाती है । और थोड़ी देर म उसे तैयार करके ले आती है । प्रेम सरला को लेकर गाड़ी को शहर से दूर ले जाता है । रास्ते में दोनों के बीच कोई खास बात चीत नहीं होती । प्रेम एक सुनसान जगह पर गाड़ी को रोक देता है ।]

सरला : (गाड़ी से उतरते हुए) ये मुझे कहाँ ले आए हो ?

प्रेम : क्यों डर लग रहा है ?

सरला : नहीं तो । मगर....

प्रेम : (सरला की बात काटकर कुछ थमते हुए) सरला, आज मुझे तुम से कुछ बात कहनी है जिसे कहने को मेरा दिल नहीं मानता । और यह बात कुछ ऐसी है कि मैं तुम्हें किसी बाग-बगीचे में ले जाकर नहीं कह सकता । इसीलिए तुम्हें इस वीरान जगह में ले आया हूं । मेरा दिल आज रो रहा है, सरला !

[दोनों चलकर एक बड़े पत्थर पर बैठ जाते हैं ।]

[गिरधारीलाल की यह बात प्रेम को बेचैन बना देती है ।]

प्रेम : (सरला से) सरला, शायद इतने दिन घर में रहकर तुम 'बोर' हो गई होगी । चलो आज थोड़ी देर हम कहीं बाहर घूम-फिर आते है ।

माया : (चाय का कप लाते हुए) हाँ-हाँ दीदी, जल्दी तैयार हो जाओ । (मुस्कराकर) वर्ना जीजाजी कहीं बुरा मान जायेंगे ।

प्रेम : (माया से) लगता है तुम बहुत चालाक हो गई हो !

माया : (हँसकर) तो क्या आपको आज ही मालूम हो रहा है ?

सरला : कहीं बाहर जाने को मेरा जी नहीं करता ।

माया : (सरला का हाथ पकड़कर) ओह दीदी, उठो न, क्यों उनका भी मूड खराब कर रही हो ? चलो, तुम्हें तैयार कर देती हूँ ।

गिरधारी : (माया से) बेटी, तुम भी उनके साथ चली जाओ न !

माया : ओह बाबूजी ! आप कैसी बात कर रहे हैं । मैं क्यों साथ जाऊँ ? दीदी और जीजाजी ही घूम आयेंगे । दीदी उठो भी ।

प्रेम : हाँ-हाँ, जल्दी ही वापस आ जाएँगे ।

[माया सरला को खींचकर बगल के कमरे में ले जाती है । और थोड़ी देर में उसे तैयार करके ले आती है । प्रेम सरला को लेकर गाड़ी को शहर से दूर ले जाता है । रास्ते में दोनों के बीच कोई खास बात चीत नहीं होती । प्रेम एक सुनसान जगह पर गाड़ी को रोक देता है ।]

सरला : (गाड़ी से उतरते हुए) ये मुझे कहाँ ले आए हो ?

प्रेम : क्यों डर लग रहा है ?

सरला : नहीं तो । मगर""

प्रेम : (सरला की बात काटकर कुछ बनते हुए) सरला, आज मुझे तुम से कुछ बात कहनी है जिसे कहने को मेरा दिल नहीं मानता । और यह बात कुछ ऐसी है कि मैं तुम्हें किसी बाग-बगीचे में ले जाकर नहीं कह सकता । इसीलिए तुम्हें इस वीरान जगह में ले आया हूं । मेरा दिल आज रो रहा है, सरला !

[दोनों चलकर एक बड़े पत्थर पर बैठ जाते हैं ।]

अंक एक]

[सैतीस

सरला : प्रेम, तुम जो कहना चाहते हो, वह मैं जानती हूँ। और इसीलिए तुम्हारे साथ चलकर मैं यहाँ आई हूँ। क्या यह बात घर में बैठ कर कहने की तुममें हिम्मत नहीं थी ? काश, तुम वहीं पर सब कुछ कह देते तो एक ही बार में खत्म हो जाती।

प्रेम : क्या ?

सरला : यही कहना चाहते हो न कि अब तुम्हें हमारा रिश्ता मंजूर नहीं ?

प्रेम : नहीं-नहीं, सरला, यह तुम क्या कह रही हो ! क्या तुमने मुझे इतना नीच समझ लिया है ?

सरला : तो और कौन-सी बात कहना चाहते हो ?

प्रेम : (भावुक होकर) मुझे यह सब मंजूर है सरला ! लेकिन माँ ने कुछ ऐसी धमकी दी है कि शायद मुझे अपने प्रेम का बलिदान करना पड़े। मैं चाहूँ तो अभी तुम से शादी कर सकता हूँ। मगर माँ ने खुदकशी कर लेने की धमकी दी है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ ?

सरला : इतनी छोटी-सी बात के लिए क्यों इतना परेशान हो रहे हो ? मुसीबत में तो अपने भी साथ नहीं देते। फिर तुम क्यों इसके लिए सोच रहे हो ?

प्रेम : सरला, मुझे और शर्मिन्दा न करो।

सरला : प्रेम और भी कुछ भी कहना चाहते हो कह दो। घर पर बाबूजी इन्तजार कर रहे होंगे।

प्रेम : मेरी एक बात मानोगी ?

सरला : क्या ?

प्रेम : तुम्हें मेरी कसम है सरला, अभी तुम ये बात घर पर मत कहना। मैं माँ को मनाने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ।

सरला : इसकी अब क्या जरूरत है ?

प्रेम : (सरला का हाथ अपने हाथ में लेते हुए) तुम्हें न सही, मुझे जरूरत है। सरला, तुम्हारे प्यार के बिना मेरी जिन्दगी अपने आप में एक मौत बनकर रह जायेगी।

सरला : प्रेम यही अच्छा होगा कि तुम मुझे भूल जाओ। और एक नई [सीवार
अड़नीस]

जिन्दगी शुरू कर दो। मुझ जैसी बदनसीब से तुम्हें क्या मिलेगा ?
(रो पड़ती है)

प्रेम : नहीं-नहीं, सरला ! ऐसा मत कहो। (उसे अपनी बाँहों में ले लेता है।)

[गिरधारीलाल के घर के बाहर गाड़ी का हॉर्न बजता है। माया बाहर आ जाती है। प्रेम सरला को घर के बाहर छोड़कर ही चल देता है। माया सरला को घर में लाती है।]

माया : (आकर) अरे दीदी, क्या बात है, बहुत जल्दी घूम आई।

सरला : क्या अन्धों की दुनिया की उड़ान भी कभी लम्बी होती है ?

माया : दीदी ! प्रेम बाबू ने तुम्हारे साथ कुछ ऐसी वैसी बातें तो नहीं कीं ?

सरला : (पलंग पर बैठते हुए) माया, मुझे अपने आप पर छोड़ दो।

[सरला पलंग पर औंधे मुँह गिर पड़ती है और सिसक पड़ती है। प्रेम के साथ बीता उसका अतीत उसके सामने आकर खड़ा हो जाता है। धीरे-धीरे वह स्मृतियों की बाढ़ में खो जाती है।]

□ □

सरला प्रेम, तुम जो कहना चाहते हो, वह मैं जानती हूं। और इसीलिए तुम्हारे साथ चलकर मैं यहां आई हूं। क्या यह बात घर में बैठ कर कहने की तुममें हिम्मत नहीं थी? काश, तुम वहीं पर सब कुछ कह देते, तो बात एक ही बार में खत्म हो जाती।

प्रेम क्या?

सरला यही कहना चाहते हो न कि अब तुम्हें हमारा रिश्ता मंजूर नहीं?

प्रेम नहीं नहीं सरला, यह तुम क्या कह रही हो! क्या तुमने मुझे इतना नीच समझ लिया है?

सरला तो और कौन-सी बात कहना चाहते हो?

प्रेम (भावुक होकर) मुझे यह सब मंजूर है सरला! लेकिन माँ ने कुछ ऐसी धमकी दी है कि शायद मुझे अपने प्रेम का बलिदान करना पड़े। मैं चाहूं तो अभी तुम से शादी कर सकता हूं। मगर माँ ने खुदकशी कर लेने की धमकी दी है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं?

सरला इतनी छोटी-सी बात के लिए क्यों इतना परेशान हो रहे हो? मुसीबत में तो अपने भी साथ नहीं देते। फिर तुम क्यों इसके लिए सोच रहे हो?

प्रेम. सरला, मुझे और शर्मिन्दा न करो।

सरला प्रेम और भी कुछ भी कहना चाहते हो कह दो। घर पर बाबूजी इन्तजार कर रहे होंगे।

प्रेम मेरी एक बात मानोगी?

सरला : क्या?

प्रेम : तुम्हें मेरी कसम है सरला, अभी तुम ये बात घर पर मत कहना। मैं माँ को मनाने की पूरी कोशिश कर रहा हूं।

सरला : इसकी अब क्या जरूरत है?

प्रेम : (सरला का हाथ अपने हाथ में लेते हुए) मगर, न नहीं —>

जिन्दगी शुरू कर दो। मुझ जैसी बदनसीब में तुम्हें क्या मिलेगा?
(रो पड़ती है)

प्रेम : नहीं-नहीं, सरला! ऐसा मत कहो। (उसे अपनी बाहों में ले लेता है।)

[गिरधारीलाल के घर के बाहर गाड़ी का हॉर्न बजता है। माया बाहर आ जाती है। प्रेम सरला को घर के बाहर छोड़कर ही चल देता है। माया सरला को घर में लाती है।]

माया : (आकर) अरे दीदी, क्या बात है, बहुत जल्दी घूम आई।

सरला : क्या अन्धों की दुनिया की उड़ान भी कभी लम्बी होती है?

माया : दीदी! प्रेम बाबू ने तुम्हारे साथ कुछ ऐसी वैसी बातें तो नहीं की?

सरला : (पलंग पर बैठते हुए) माया, मुझे अपने आप पर छोड़ दो।

[सरला पलंग पर औंधे मुँह गिर पड़ती है और सिसक पड़ती है। प्रेम के साथ बीता उसका अतीत उसके सामने आकर खड़ा हो जाता है। धीरे-धीरे वह स्मृतियों की बाढ़ में खो जाती है।]

□ □

सरला : (मुस्कराते हुए) जी हाँ, याद आया। काफी दिन हो गये उस बात को।

प्रेम : कहाँ जाना है आपको ?

सरला : जी, मैं रोश कम्पनी जा रही हूँ।

प्रेम : (दरवाजा खोलते हुए) आइए मैं आपको छोड़ देता हूँ।

सरला : आपको खामख्वाह तकलीफ होगी।

प्रेम : जी नहीं। आप बैठिए। मुझे भी उसी रास्ते से गुजरना है।
[प्रेम के आग्रह को टालने में सरला असफल होती है। वह, गाड़ी में बैठ जाती है।]

प्रेम : (गाड़ी स्टार्ट करके) इतनी देर से जा रही है आप !

सरला . कम्पनी का वक्त तो सुबह दस बजे का है। मगर आज घर से निकलने मे देर हो गई।

प्रेम . आई सी !
[कुछ क्षण चुप्पी मे कटते हैं।]

सरला : आपने एम. ए की पढ़ाई खत्म कर ली क्या ?

प्रेम : जी हाँ। मगर फाइनल इयर मे आप कहीं नजर नहीं आईं। आपने कालेज बदल लिया था क्या ?

सरला : जी नहीं। संयोगवश प्रीवियस के इम्तहान से पहले ही मुझे अपनी पढ़ाई छोड देनी पडी।

प्रेम : आई सी ! अगर आप बुरा न मानें, तो क्या मैं जान सकता हूँ कि ऐसे क्या संयोग आ पडे कि एकाएक आपको अपनी पढ़ाई छोड देनी पडी।

सरला . बाबूजी मिल मे नौकरी करते थे। अचानक एक्सिडेन्ट में उनका पैर कट गया। और घर मे बाबूजी और छोटी बहन की देख भाल करने वालो मैं ही थी। सो पढ़ाई छोड़कर नौकरी शुरू करनी पड़ी।

प्रेम : आहे, मुझे खेद है। अगर मेरी बात से आपको दुख पहुँचा है। (रुककर) हमारा समाज भी कैसा है कि आप जैसे क्लेवर स्टूडेण्ट की कुछ मदद नहीं कर सकता। जो हकीकत मे रिजर्व अक दो] [इक्वानमोम

करते हैं, वे तो पढ़ नहीं सकते और बहुत-से जो पढ़ाई की ए-बी-सी तक नहीं जानते, वे डिग्रियाँ लेकर बैठ जाते हैं।

सरला : (मुस्कराकर) जब मैंने किसी से मदद ही नहीं माँगी तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि किसी ने मेरी मदद नहीं की ?

प्रेम : अच्छा किया आपने किसी से मदद नहीं माँगी। वरना न जाने क्या-क्या सहना पड़ता। ये दुनिया वाले भी कुछ अजीब हैं। माँगने पर अगर कुछ भी देते हैं, तो यह सोचते हैं कि उन्होंने किसी की जिन्दगी बना दी और बदले में चाहते हैं कि लोग उम्र भर उनकी पूजा करते रहें।

सरला : कहीं अब आप फिलॉसफी से पी-एच. डी. तो नहीं कर रहे हैं ?

प्रेम : (मुस्कराकर) जी नहीं। बदनसीबी से पिछले साल एम. ए. में पास हो गया और पढ़ाई वहीं खत्म कर देनी पड़ी।

सरला : (साश्चर्य) बदनसीबी से ?

प्रेम : जी हाँ! देखिए न, कालेज जीवन की वह मस्ती-बेफिक्री अब कहाँ मिलती है ? जब से पढ़ाई छोड़ी है, पिताजी के बिजनेस के सारे सिर पर आ पड़ी हैं। अब तो सोचने को भी फुरसत नहीं मिलती

(दोनों हँस देते हैं।)

सरला : अच्छा ही तो है। जीवन में इन्सान को कुछ न कुछ काम तो करना ही पड़ता है। इसी में वक्त गुजरता है।

प्रेम : तो क्या यों ही घूमने फिरने से वक्त नहीं गुजर सकता ?

सरला : वक्त तो गुजर सकता है, मगर उससे इन्सान का गुजारा नहीं हो सकता।

प्रेम : चलिए, आप कहती हैं तो मान लेता हूँ।

सरला : शुक्रिया! बस बस, आप मुझे यहीं छोड़ दीजिए।

[प्रेम गाड़ी रोक देता है।]

प्रेम : (गाड़ी का दरवाजा खोलते हुए) उम्मीद है कि फिर कभी अगर इस तरह, हमारी मुलाकात हो गई, तो अब मुझे अपनी पहचान नहीं देनी पड़ेगी।

सरला : (हँसकर) इतना अहसान! शुक्रिया।

[सरला गाड़ी से उतरती है। दोनों एक दूसरे को गुड बाई करते हुए हाथ हिलाते हैं।]

□ □

[शाम के वक्त सरला ड्यूटी खत्म करके बस-स्टाप पर जा रही है। तभी प्रेम वहाँ से अपनी गाड़ी लेकर गुजरता है और सरला को देखकर अपनी गाड़ी उसके समीप लाकर रोक देता है। सरला एक पल के लिए गाड़ी को यों अपने नजदीक रुकती देखकर चौंक पड़ती है।]

सरला : अरे, आप ! नमस्ते !

प्रेम : जी, नमस्ते ! लगता है ड्यूटी खत्म करके आ रही हैं।

सरला : (मुस्कराते हुए) जी।

प्रेम : आइए आपको घर तक छोड़ दूँ।

सरला : मैं बस से चली जाऊँगी। क्यों आप खामखाह तकलीफ कर रहे हैं ?

प्रेम : तकलीफ नहीं होगी। मैं उसी रास्ते से क्लब जा रहा हूँ। आइए न ! (कार का दरवाजा खोल देता है।)

[सरला कार में बैठजाती है।]

(हँसकर) मैंने तो सोचा था कि इस बार भी मिलेंगे मुझे अपनी पहचान देनी पड़ेगी।

सरला : आप शरारती हैं।

प्रेम : आपने यह इतनी जल्दी कैसे जान लिया ?

सरला : कालेज में आपके बारे में ज्यादा तो नहीं, कुछ ऐसा ही सुना था और देखा भी था।

प्रेम : जी हाँ। स्टेज-आर्टिस्ट को वैसे तो सभी देखते हैं और जानते भी खूब हैं। मगर वक्त गुजरने पर जल्दी भूल भी जाते हैं। और अंक दो]

[तालियाँ

गुड आर्टिस्ट बेचारा न कभी किसी को पूरी तरह देख सकता है, न ही किसी हद अपनी नजर पहुँचा सकता है।

सरला : आप यह कैसे कह सकते हैं ?

प्रेम : मिसाल के तौर पर जब हम पिछली बार मिले थे तो आप ही मुझे पहचानने की बजाय घूर-घूरकर देखने लगी थीं। (दोनों हँस देते हैं।)

सरला : कभी इत्तफाक से ऐसा भी हो जाता है।

प्रेम : बात सही है कि हमने भी इत्तफाक से ही आप-जैसी, पर्दे के पीछे रहकर काम करने वाली आर्टिस्ट को याद रख लिया है।

[सरला प्रेम की ओर देखती है। आँखें चार होते ही सरला लजा जाती है और नीचे देखने लगती है। कुछ देर गाड़ी मे चुप्पी फैली रहती है।]

सरला : अगर आपके पास थोड़ा वक्त हो, तो घर पर चाय पीकर जाइए।

प्रेम : (मुस्कराकर) आप कहती हैं, तो मेरे पास थोड़ा वक्त है।

[सरला लजा जाती है। कार सरला के घर के सामने आकर रुकती है। दोनों गाड़ी से उतरकर घर की ओर बढ़ते हैं। घर मे दाखिल होते ही प्रेम गिरधारीलाल को देखकर उनको नमस्ते करता है।]

सरला : मेरे पिताजी हैं। और आप हैं, प्रेम बाबू। कालेज के पुराने मित्र और एक बहुत अच्छे कलाकार।

[प्रेम दुबारा गिरधारीलाल को हाथ जोड़कर नमस्ते करता है।]

रधारी : नमस्ते बैठिए !

[प्रेम सोफे पर बैठ जाता है। माया बगल के कमरे से बाहर आती है।]

सरला : ये मेरी छोटी बहन माया है, इन्टर आर्टस् में पढ़ती है। और आप हैं प्रेम बाबू।

[प्रेम और माया एक दूसरे को नमस्ते करते हैं। फिर माया अन्दर चली जाती है।]

प्रेम : (गिरधारीलाल की ओर देखते हुए) ने आपके बारे मे

मुझे सब कुछ बताया था। मुझे ये सब जानकर बहुत दुःख हुआ।

गिरधारी : ऊपर वाले की मरजी को कौन टाल सकता है। होनी कोई-न कोई बहाने से होकर ही रहती है।

प्रेम : आप ठीक कह रहे हैं। जिन्दगी एक तूफान है, जहां हर दम इन्सान को लड़ना पड़ता है।

गिरधारी : इसी दुर्घटना के कारण सरला की पढ़ाई भी रुक गई। घर का सारा बोझ अब उसी के कन्धों पर आ पड़ा है। मैं तो अब भी चाहता हूँ कि कुछ काम करूँ। मगर मुझे ये दोनों बेटियों ने मिल-कर कैद कर रखा है। बाहर निकलने ही नहीं देती।

[माया सबके लिए ट्रे में चाय और पानी लेकर आती है।]

सरला : प्रेम बाबू, आप ही बताइए कि जब बड़ी दो दो बेटियाँ घर में हों, तब इस हालत में बाबूजी के लिए काम करना क्या ठीक होगा ?

प्रेम : (चाय का घूंट लेते हुए) मैं भी मानता हूँ कि आजकल के जमाने में बेटी-बेटे दोनों ही बराबर हैं। इसलिए आपको किसी भी बात की फिक्र नहीं करनी चाहिए।

माया : प्रेम बाबू, एक्सलेन्ट ! आप सचमुच मॉडर्न आदमी हैं। बल्कि उनसे भी कुछ आगे हैं !

प्रेम : (मुस्कराकर) थैंक्यू।

[सहसा माया अपनी ही बात और जोश पर लजा जाती है। प्रेम चाय खत्म करके सबको धन्यवाद देते हुए, जाने के लिए उठ [illegible] और माया दरवाजे तक साथ आती है।]

[illegible] आया करिए। फिर आपका तो रास्ता

माया : हाँ-हाँ, बिलकुल आम पहचान होगी। तभी तो उनसे कह रही थी कि (धीमे स्वर में) 'कभी वक्त निकालकर आया करिए' फिर आपका तो यही रास्ता है।

सरला : चल हट यहाँ से ! बड़ी शरारती हो गई है। कॉलेज में जाते हुए दो साल हो गए हैं न, उसी का यह नतीजा है।

माया : हूँ .. हूँ ...दीदी, कुछ भी कहो, मगर अभी तुम्हारी हद तक मैं नहीं पहुँची हूँ, हाँ। फिर भी धीरे-धीरे मैं भी ......(तभी सरला पास आकर उसका कान खींचती है) उई माँ ! ठीक है, अभी बाबूजी को सब-कुछ बता देती हूँ।

सरला : (डाँटकर) माया ! हद से बाहर मत जाओ।

गिरधारी : (बगल के कमरे से) क्या है बेटी ?

सरला : कुछ नहीं बाबूजी।

[माया एक कोने में छिपती हुई सरला को चिढ़ाने के लिए हाथ का अँगूठा दिखाती है।]

□ □

[एक शाम प्रेम सरला के घर आता है।]

गिरधारी : आइए-आइए, प्रेम बाबू।

प्रेम : नमस्ते।

गिरधारी : नमस्ते, बैठिए।

प्रेम : (बैठते हुए) अब कैसी है आपकी तबीयत ? दो दिन पहले सरला जी मिल गई थी। कह रही थीं कि आपकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी।

गिरधारी : बस यों ही दो दिन बुखार हो गया था। अब तो बिलकुल ठीक हूँ।

प्रेम : लगता है सरलाजी और माया अभी लौटी नहीं हैं ?

गिरधारी : माया बेटी तो कुछ देर से ही घर लौटती है। (हँसकर) लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ती रहती है। कहती है, घर में ठीक से पढ़ाई

छियालीस]

नहीं होती। वैसे बहुत कामचोर है। मगर छोटी है इसलिए मुझ से तो कुछ कहा नहीं जाता। इस पर सरला बेटी ने भी उसे सिर चढ़ा रखा है, सो घर के काम काज की तो वह कभी फिकर ही नहीं करती। नौकरी करते हुए भी सरला बेटी ही घर का पूरा काम संभालती है। कभी घड़ी भर की भी फुरसत नहीं पाती। बस अभी आती ही होगी।

[सरला बाहर से घर में दाखिल होती है।]

सरला : (साश्चर्य) अरे आप।

प्रेम : जी। यों ही गुजर रहा था, सोचा, सबसे मिलता चलूँ, और बाबूजी की खबर भी पूछ लूँ।

गिरधारी : बेटी, प्रेम बाबू को पानी देना।

सरला : जी बाबूजी, अभी लाई।

[सरला अन्दर से पानी का गिलास ले आती है और प्रेम को देती है। प्रेम पानी पीकर सरला को गिलास वापस देता है।]

कहिए, क्या लेंगे आप, चाय या काफी?

प्रेम : अभी तो कोई खास इच्छा नहीं है। (रुक कर) चलिए, थोड़ी देर के लिए कहीं बाहर घूम आते हैं। वहीं पर कुछ पी लेंगे। बाबूजी अभी-अभी कह रहे थे कि आप तो सारा दिन काम में उलझी रहती हैं और बिल्कुल फुरसत नहीं पाती। चलो आज इसी बहाने थोड़ा चेंज भी मिल जाएगा।

सरला : (मुस्कराकर) घर में बाबू जी अकेले ही हैं। बाहर चलकर हम फिर कभी चाय पी लेंगे।

प्रेम : तो उसमें क्या है, बाबूजी को भी हम साथ ले चलते हैं।

गिरधारी : मैं इस हालत में कहाँ चलूँगा। आप लोगों के ये घूमने-फिरने के दिन हैं। (सरला की ओर देखकर) जाओ बेटी जब प्रेम बाबू कहते हैं तो कुछ देर घूम आओ। माया बेटी अब आती ही होगी।

[सरला मन पसंद बात सुनकर जाने के लिए तैयार हो जाती है। प्रेम और सरला दोनों गाड़ी में समुद्र की ओर चल पड़ते हैं।]

' अन्तरो]   [सेंडालीय

सरला : क्यों, आप चुपचाप बैठे हैं ?

प्रेम : बस यों ही।

सरला : क्या कुछ सोच रहे हैं ?

प्रेम : शायद !

सरला : (मुस्कराकर) मैं भी जान सकती हूँ, क्या ?

प्रेम : क्या करोगी जानकर ?

सरला : अगर आप नहीं बताना चाहते हैं तो आपकी मरजी।

प्रेम : नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। बस यही सोच रहा था कि नॉवलों में तो कई बार पढ़ा है कि नायक-नायिका कहीं सड़क पर मिल जाते हैं, शुरू-शुरू में खूब मिलते हैं, एक दूसरे को प्यार करते हैं, और फिर उनकी मुलाकातें, प्यार सब एक रस एक रूप जीवन में बदल जाता है। मगर क्या ये सब बातें हकीकत की जिन्दगी में सम्भव हैं ? आपकी क्या राय है ?

सरला : सवाल आपके मन का है, और जवाब आप मुझ से पूछ रहे हैं ? जवाब भी आप अपने ही मन से क्यों नहीं पूछ लेते ?

प्रेम : (मुस्कराते हुए) लगता है, आप भी कुछ कम चालाक नहीं।

सरला : फिर भी आपकी बराबरी नहीं कर सकती। (दोनों हँस पड़ते हैं।)

प्रेम : आपने कुछ साल पहले आई, सिडनी पोइटियर की फिल्म 'गेस हू इज कमिंग टू डिनर' देखी थी ?

सरला : हाँ देखी थी। और अच्छी भी लगी थी।

प्रेम : कुछ क्षण की मुलाकात के प्रेम को उसमें कितना ऊँचा दिखाया गया था, है न ?

सरला : फिल्म और हकीकत में तो बहुत बड़ा अन्तर होता है।

प्रेम : फिर भी फिल्में बनाने वाले इन्सान होते हैं और वे अपने आस-पास के जीवन से किस्सों का ताना-बाना बुनते हैं।

सरला : (मुस्कराते हुए) बहुत बार वे हकीकत की दुनिया को पर्दे पर नहीं उतार सकते, तो कल्पना की दुनिया दिखा देते हैं।

प्रेम : इसमें भी वे कुछ बुरा तो नहीं करते। जिन्दगी से हारे हुए इन्सान को एक नई राह कल्पना ही तो दिखाती है। आखिर जिन्दगी से जो लोग ऊब चुके हैं वे कल्पना में ही सही, जी तो लेते हैं।

सरला : (मुस्कराकर) कोई फिल्म बनाने वाला आपका दोस्त तो नहीं है ?

प्रेम : ऊपर वाले की दया से आज तक तो किसी से पाला नहीं पड़ा ।
(दोनों ही हँस पड़ते हैं ।)

[प्रेम गाड़ी को पार्क कर देता है । सरला और प्रेम समुद्र के किनारे पर टहलने लगते हैं । फिर एक जगह जाकर बैठ जाते हैं । प्रेम रेत का ढेर करके घर बनाने लग जाता है ।]

सरला : लगता है, अभी आपका बचपन नहीं गया ?

प्रेम : क्या बड़े हो जाने पर इन्सान को अपने बचपन की यादों से खेलने तक का हक नहीं ?

सरला : यह मैंने कब कहा ! (मुस्कराते हुए) मगर देखिए तो, आपका घर टूटने लगा ।

प्रेम : क्या आप सहारा नहीं दे सकती ?

सरला : (प्रेम की ओर आश्चर्य से देखते हुए) मैं आपका मतलब नहीं समझी ।

[प्रेम सरला के और करीब आ जाता है ।]

प्रेम : कई दिनों से एक बात कहना चाहता हूँ । सोचा, आज यहीं अकेले में बैठकर आपको सब कुछ बता दूँ, ताकि अगर यह बात सिर्फ मेरी तरफ से हो तो उसका पता चल जाए और बाद में मुझे शर्मिन्दा न होना पड़े ।

सरला : कहिये !

प्रेम : मेरी बात का बुरा तो न मानिएगा ?

सरला : कह दीजिए न, क्या कहना चाहते हैं ?

प्रेम : सरला, मैं तुम से प्यार करता हूँ । क्या तुमसे मैं इस बात की उम्मीद कर सकता हूँ ?

सरला : (रुक कर) यह बहुत सोचने वाली बात है ।

प्रेम : (भावुक होकर) प्यार अन्धा होता है, सरला । वह सोच नहीं सकता, देख नहीं सकता ।

सरला : मगर कल्पना और वास्तविकता में काफी दूरी है ।

. . .

[उच्छ्वास

प्रेम : बाय !

सरला : बाय !

□ □

[सरला घर में दाखिल होती है ।]

रधारी : बेटी, घूम आई ?

सरला : जी बाबूजी ।

रधारी : प्रेम बाबू घर पर नहीं आए ?

सरला : उन्हें कहीं जाने की जल्दी थी। (रुककर) माया अभी नहीं आई ?

रधारी : (हँसकर) अरे बेटी, आज तो तुम्हारे भाग्य खुल गए हैं । जरा अन्दर जाकर तो देखो, आज हमारी लाडली खाना पका रही है ।

सरला : सच बाबूजी ! (मुस्कराते हुए अन्दर चली जाती है, जहाँ माया खाना पका रही है)

माया : हूँ ...तो अब हमारी दीदी के प्रेम-चक्कर खुले आम शुरू हो गए !

[सरला प्यार से उसका कान खींचती है ।]

ऊँई माँ !

सरला : बेशर्म कहीं की ।

माया : ठीक है । अब हम तुमसे बात करना ही छोड़ देंगे ।

सरला : (गले में बाँहें डालते हुए) आज फिर अपनी दीदी से रूठ गई ?

माया : (मुँह बनाते हुए) और नहीं तो क्या ? कुछ बातें बनानी तो एक तरफ रहीं, ऊपर से रोब जमा रही हो ।

सरला : बनाऊँगी, बाबा बातें भी बनाऊँगी । अगर तुम्हें नहीं बनाऊँगी तो और किसे बनाऊँगी ?

माया : ओह, मेरी अच्छी दीदी !

[दोनों बहनें एक-दूसरे के गले से लिपट जाती हैं ।]

□ □

प्रेम : तुम तो हर बार जल्दी में ही मिलती हो। न जाने फुरसत से कब मिलोगी !

सरला : आप तो घर की जिम्मेदारियाँ जानते ही हैं।

प्रेम : यह तो एक बहाना है।

सरला : आप ऐसा क्यों सोचते हैं ?

प्रेम : जिम्मेदारियाँ तो सभी के सिरों पर हैं। फुरसत तो निकालने से मिलती है।

सरला : आप बुरा न मानिएगा।

प्रेम : काश ! हमें यह हक होता।

सरला : किसने कहा आपको यह हक नहीं ?

प्रेम : (अपना हाथ सरला के कंधों पर रखते हुए) फिर वादा करो कि अगले सण्डे जुहू बीच चलोगी।

सरला : कोशिश करूँगी।

प्रेम : मगर अकेले आने की कोशिश न करना।

सरला : तो क्या ··· ···

प्रेम : (बात काटकर) साथ में किसी और को नहीं लाओगी !

सरला : किसे ?

प्रेम : (रुककर) अपने दिल को।

सरला : शर्मा कर आप बड़े ······ (चुप हो जाती है)

प्रेम : आगे कहो न।

[सरला लजाकर प्रेम की आँखों में मुग्ध भाव से झाँकती है। प्रेम अचानक गाड़ी को सड़क के किनारे रोक देता है।]

सरला : क्यों, गाड़ी यहीं क्यों रोक दी ? घर तक ही ले चलते।

प्रेम : मैं यहीं से चलूँगा। अभी घर आने लिए वक्त नहीं है। फिर सही।

सरला : अगर होटेल में बैठते तो फिर काफी वक्त था।

प्रेम : वह बात कुछ और थी।

सरला : क्या घर पर किसी का डर लग रहा है ?

प्रेम : जी हाँ।

सरला : किसका ?

अंक दो] [पचास

(वेटर से) टू प्लेट वेजिटेबल कटलेट एण्ड टू लाइम जूस।

वेटर : राइट सर। (वेटर चला जाता है।)

[तभी डांस शुरू हो जाता है। डांसर गाना गाने लगती है। और हाथ में गिलास लिए हुए स्टेज से नीचे उतर आती है]

डांसर

जी लेते हैं जीने वाले
हँस हँस के दुनिया में आके
जीना है तो तू भी जी ले
अपने ये गम को मिटाके ...

सरला : देखिए न, पूरब वालों ने किस ढंग से पश्चिम को अपनाया है। देखने पर आँखें विश्वास भी नहीं कर सकती।

प्रेम : (मुस्कराकर) क्या पूरब क्या पश्चिम, ये सब बहाने हैं। मैं इन बातों को नहीं मानता। सच तो यही है कि जब पूरब वाले अपने आपसे ऊब गए तो उन्होंने पश्चिम को अपनाया है, और पश्चिम ने पूरब को। चेन्ज इज द लॉ आफ नेचर।

सरला : क्या एम. ए. आपने फिलासफी से किया है ?

प्रेम : (हँसकर) नहीं, मेरा सब्जेक्ट तो इकानामिक्स था।

सरला : मगर आप फिलॉसफी अच्छी जानते हैं !

प्रेम : अरे ! तुम्हें अब तक पता नहीं था ?

सरला : क्या ?

प्रेम : मेरे दोस्त मुझे सोक्रेटीस का रीवर्थ मानते हैं।

सरला : (मुस्कराकर) तो आप री-वर्थ भी मानते हैं ?

प्रेम : जहाँ तक मेरे अपने री-वर्थ का सवाल है।

[दोनों नाश्ता खत्म करके ठंडा पीते हैं।]

सरला : अगर आप बुरा न मानें तो हम चलें। वर्ना मुझे घर लौटने में बहुत देर हो जाएगी।

प्रेम : जो हुक्म। (उठते हुए) चलिए।

[प्रेम उठते हुए बिल और टिप के पैसे वेटर के हाथ में देता है। दोनों होटल से बाहर निकल कर कार में बैठते हैं।]

माया : उई माँ ! (पानी का गिलास लेकर बाहर के कमरे में दौड जाती है ।)

गिरधारी : (पानी का गिलास लेते हुए) बेटी, अब तुम कितनी बडी हो मगर अभी तुम्हारा बचपना नही गया । क्यों हर वक्त उस बेचारी के पीछे पडी रहती है ?

माया . (नाराज होकर) ओह बाबूजी, फिर वही बात । अगर मैं बडी हो गई हूँ तो बाट दो मुझे, छोटी हो जाऊँगी । मुझे बडा नहीं बनना।

[माया गिरधारीलाल के हाथ से गिलास लेकर मेज पर रख देती है ।]

गिरधारी . ऐसा नही बोलते बेटी ।

माया : और क्या ? (नाराज होते हुए पिता के पास पलग पर बैठ जाती है ।)

गिरधारी : (माया की पीठ सहलाते हुए) इतनी-सी बात पर हमारी बेटी नाराज भी हो गई !

सरला : (अन्दर के कमरे से बाहर आते हुए) बाबूजी, आपने इसे लाड़-प्यार से खूब बिगाड़ रखा है । इसीलिए मन मे जो आए सो बकती रहती है । बोलने की कुछ ......

माया (बात काटकर जल्दी से) देखो न बाबूजी, दीदी से कहा कि ओवर टाइम करके आई, थक गई इसलिए कुछ आराम कर लो, तो ऊपर से मुझ पर रोब जमाने लग गई ।

गिरधारी बेटी, तुमने जरूर कोई शरारत की होगी ।

सरला . हूँ । बाबूजी तुम्हें खूब जानते है ।

माया : जानते है तो ठीक है । हम भी तुम्हें खूब जानते हैं ।

गिरधारी : (सरला से) बेटी, आज भी इसी ने खाना बनाया है । तुमने इसके लिए तो उसे कुछ कहा ही नहीं । (हँसकर) शायद इसी-लिए तुम पर नाराज हो रही है !

सरला : (माया की ओर देखते हुए) अच्छा, तो इसी बात का गुस्सा है ?

माया : (गिरधारीलाल के कंधे पर सिर रखते हुए) बाबूजी !

बस दो] [मध्यान्तर

प्रेम मुस्कराता।

सरला : अच्छा ! (दोनों मुस्करा देते हैं)

[सरला गाड़ी से उतर जाती है और प्रेम गाड़ी लेकर चला जाता है।]

[सरला जब घर पहुँचती है तो गिरधारीलाल और माया करते हुए उसकी राह देखते बैठे हैं।]

माया : (जल्दी से) अरे दीदी, इतनी देर कहाँ लगा दी ? बनके बनाकर तो आया करो कि घूमने जा रही हो।

सरला . दादी माँ, तुम्हें किसने बताया कि मैं घूमने गई थी ?

माया अरे क्यों झूठ बोल रही हो ? मैं कोई तुम्हारे साथ जाने के लि थोड़े ही कहूँगी।

सरला : बाबा, मैं घूमने नहीं गई थी। आज दफ्तर में ओवर टाइम था, इसीलिए थोड़ी देर हो गई।

गिरधारी : (माया से) बेटी, वह दिन भर की थकी हुई आ रही है, ज़रा पल चैन तो लेने दे।

माया : (उठते हुए) बाबूजी, आपने पीने के लिए पानी माँगा था न, अ लाती हूँ। (बगल के कमरे में जाते हुए) लगता है, आज क दीदी की कम्पनी ने कुछ नये रूल निकाले हैं।

[सरला भी माया के पीछे अन्दर जाती है।]

सरला : (धीमे स्वर में) क्यों री, बाबूजी के सामने बड़ी बनती है ?

माया : तुम तो मुझ पर हमेशा ही रोब जमाती हो। क्या हम एकाध मौका भी नहीं ले सकते ?

सरला : क्यों नहीं ? मैं अभी तुम्हें सब सिखाती हूँ।

माया : सब कुछ सिखाना, मगर प्रेम करना नहीं, हाँ !

सरला : (पास आकर कान खींचती हुई) ठीक किए बिना तू सीधी नहीं चलेगी।

गिरधारी : (सरला से) बेटी, खाना यहीं ले आओ । सब यहीं बैठकर खा लेंगे ।

सरला . (आते हुए) जी बाबूजी ।

[सरला अन्दर से खाना निकालकर ले आती है । माया जमीन पर चटाई बिछा देती है और सब उसी पर बैठकर खाना खाने लगते हैं ।]

सरला : (एक कौर बनाकर हाथ गिरधारीलाल की ओर बढ़ाती हुई) लीजिए बाबूजी ।

गिरधारी : बेटी, मैं खा लूँगा । तुम खाओ ।

सरला : बाबूजी, हम कहाँ रोज आपको अपने हाथों से खिलाते हैं !

[गिरधारीलाल कुछ भावुक होकर सरला के हाथों से खा लेते हैं ।]

माया . (हाथ बढ़ाते हुए) लो बाबूजी, अब इस छोटी के हाथ का भी खा लीजिए ।

[माया के हाथ से खाते हुए गिरधारीलाल की आँखों से टप टप आँसू गिरने लगते हैं ।]

गिरधारी · बेटी, अब इतनी माया न लगाओ । जब तुम दोनों चली जाओगी तो मेरा जीना मुश्किल हो जाएगा ।

माया : बाबूजी, हम आपको छोड़कर कभी नहीं जाएँगे ।

गिरधारी . बेटियों को तो एक-न-एक दिन अपने घर जाना ही होता है । बस . दोनों की फिकर लगी हुई है ।

माया · आपसे नहीं बोलूँगी ।

ऐसा मत बोलो । (सब खाना

□ □

[उनसठ

गिरधारी : (माया के सिर सहलाते हुए) हमारी पगली बेटी है !

सरला बाबूजी मैं आपके लिए खाना ले आती हूँ । (अन्दर चली जाती है ।)

गिरधारी (माया से) जा बेटी, दीदी को अभी कपड़े भी बदलने होंगे कुछ मदद कर ।

माया मैं क्यों मदद करूँ, जब पूरा खाना तैयार करके रखा है ?

सरला (अन्दर से) अच्छा मेम साब तुम वहीं बैठे रहना । मैं सब कर लूँगी ।

माया . ठीक है, ठीक है । मगर जरा जल्दी करना ।

[माया मुस्कराते हुए गिरधारीलाल को चुप रहने के लिए इशारा करती है ।]

गिरधारी बेटी, वह उम्र में तुम से पाँच साल बड़ी है । ऐसा नहीं कहना चाहिए । जाओ, उसकी कुछ मदद करो ।

माया : बाबूजी, आप तो हमेशा छोटी बड़ी की बात बीच में ले आते हैं ।

गिरधारी · बेटी, हर बात में बड़ी और छोटी का सवाल तो होता ही है · घर में विदा भी पहले बड़ी को ही किया जाता है और फिर छोटी को ।

माया : (गले से लिपटते हुए) हूँ बाबूजी । फिर मुझे छोटी ही रहने देना । मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी ।

गिरधारी : मैं अभी तुम्हें कहाँ भेज रहा हूँ । उस वक्त को आने दो ।

माया : नहीं, कहा न, मैं आपको छोड़कर कभी नहीं जाऊँगी ।

[सरला कपड़े बदल कर गिरधारीलाल के लिए खाना लेकर आती है और थाली को गिरधारीलाल के पलंग के सामने पड़े हुए मेज पर रख देती है ।]

माया : दीदी मैं भी बाबूजी के साथ खाऊँगी । मेरा खाना भी यहीं ले आओ न !

सरला : क्यों, तुम अन्दर नहीं चल सकती ? ... कर लाओ न !

[दोबारा

प्रेम : (मुस्कराकर) इसी बात पर चाय के दो घूंट और हो जाएँ।

[प्रेम थर्मस से चाय निकालकर दोनों प्यालों में डालता है और फिर समुद्र की ओर देखकर सरला से कहने लगता है।]

प्रेम : देखो तो, लोग पानी का क्या मजा ले रहे हैं! क्या ख्याल है, थोड़ी देर स्वीमिंग हो जाए?

सरला : (टालते हुए) मुझे तैरना नहीं आता।

प्रेम : (हँसकर) अगर इजाजत हो तो मैं सिखा दूँ।

सरला : (चौंककर) नहीं!

प्रेम : देखो न, और लेडिज भी तो नहा रही हैं।

सरला : मगर मुझे यह पसन्द नहीं।

प्रेम : क्यों?

सरला : नहाना ही अगर आज की मॉडर्न सभ्यता है तो मैं इसे पसन्द नहीं करती।

प्रेम : नो डियर। तुम्हारा यह सोचना गलत है। अगर एक पुरुष इस तरह से नहा सकता है तो एक स्त्री क्यों नहीं नहा सकती?

सरला : मैं इस पर बहस नहीं करना चाहती। (रुककर) अगर आपको नहाना ही है तो जाकर क्यों नहीं नहा लेते?

प्रेम : अकेले नहाने का मजा नहीं आएगा।

सरला : आप जाइए न!

प्रेम : तुम यहाँ अकेली बैठकर क्या करोगी?

प्रेम : शायद उनमें कोई सरला नहीं थी।

सरला : (लजाकर) मगर हमारे बीच एक बहुत बड़ी दीवार भी तो है ?

प्रेम : कौन-सी दीवार ?

[सरला चुप रहती है और नीचे देखने लगती है।]

सरला, इन्सान अमीर या गरीब दिल की दौलत से होता है। पैसों से नहीं।

सरला : यह तो आप मानते हैं, दुनिया नहीं।

प्रेम : क्या दुनिया और प्रेम में तुम्हें कोई फर्क नजर नहीं आता ?

[सरला प्रेम की ओर देखने लगती है। प्रेम सरला का हाथ चूम लेता है फिर उठकर अपने कपड़े पहनता है। दोनों पास की एक नारियल की दुकान से नारियल खरीदते हैं। नारियल पीते-पीते किनारे पर चल पड़ते हैं। प्रेम नारियल पीकर उसे दूर पानी में फेंकता है और दौड़ने लगता है।]

सरला : अरे, यों कहाँ दौड़े जा रहे हो !

प्रेम : (रुककर) चलो भी। (फिर कुछ दूर और दौड़कर वह गीत गाने लगता है।)

दिल है दिल, दीवाना दिल मुहब्बत से भरा ये दिल
आओ हम प्यार करें, अब दूर नहीं मंजिल !
दिल ये बार-बार कहे, आओ मिलकर हम चलें,
मंजिल है ये सुहानी, हम सफर हम साथ चलें।

[दोनों साथ-साथ गाने लगते हैं। प्रेम सरला को अपनी बाँहों में ले लेता है।]

□ □

[प्रेम अपनी ऑफिस से सरला को फोन करता है। सरला अपने ऑफिस में काम में व्यस्त है। फोन की घन्टी बजने ही वह रिसीवर उठाती है।]

सरला : हैलो !

यक दो] [त्रिरेगड

देर बाद प्रेम पानी से बाहर निकल आता है और कमर पर तौलिया लपेटे हुए सरला के पास ही बिछी हुई चादर पर लेट जाता है। प्रेम के कहने पर सरला उसे थर्मस से चाय निकालकर देती है।]

प्रेम : (चाय का घूँट पीते हुए) जिन्दगी में हर बात का मज़ा तब आता है, जब कोई साथ हो।

[सरला कोई जवाब नहीं देती।]

तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया?

सरला : हर सवाल के जवाब भी तो नहीं होते।

प्रेम : एक बात कहूँ?

सरला : (मुस्कराकर) कहिए!

प्रेम : मैं सोचता हूँ, क्यों न हम शादी कर डालें?

सरला : (चौंककर) शादी। (हँसकर) हर बात के लिए इतनी जल्दी अच्छी नहीं होती।

प्रेम : जिन्दगी कितनी छोटी है। अगर हर बात के लिए हम यूँ सोचते रहे तो यह खत्म हो जाएगी।

सरला : फिर भी कुछ बातों के लिए सोचना जरूरी होता है।

प्रेम : जानता हूँ सरला। शायद तुम सोच रही होगी कि अभी तो एक दूसरे को ठीक तरह से जान भी नहीं पाए हैं, है न?

सरला : अगर ऐसी बात होती तो मैं इस तरह से अपना कदम आगे न बढ़ाती।

प्रेम : सरला, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।

[सरला का हाथ अपने हाथों में ले लेता है।]

जानती हो, मुझे इस बात की कोई जल्दी

कुछ दिनों से माँ शादी के लि

कियों को देखा, और आज

कि पहले भी कई

नहीं उतरी। लगता है.

को भी यह बता दूँ?

सरला : और लड़कियाँ क्यों .

बामठ]

सरला . (आश्चर्य) कौन-सी हरकत के लिए ?

प्रेम अभी-अभी जो मैंने फोन पर की थी।

सरला . ओह भाई गॉड ! आप थे ! मैंने तो बेचारी ऑपरेटर को बुरी तरह से झाड़ दिया।

प्रेम : और तुम्हारी ऑपरेटर ने मुझे।

सरला : (मुस्कराहट दबाते हुए) क्या कह रहे हैं आप ! क्या कहा उसने ?

प्रेम . (हँसकर) ज्यादा कुछ तो नहीं, बस यही कि अगर मुझे तुमसे बात करनी है तो अपना नाम-पता बताना पड़ेगा, वर्ना दिन भर यों ही बहुत-से लोफरों के फोन आते रहते हैं।

सरला · तो क्या आपने अपना नाम-पता बताया ?

प्रेम · और कोई चारा ही न था।

सरला आइ एम सॉरि !

प्रेम . ये तो मुझे कहना चाहिए। खैर, मैंने फोन यही कहने के लिए किया था कि आज शाम को मैं तुम्हें लेने आ रहा हूँ। ऑफिस से छूटकर मेरा इन्तजार करना।

सरला : कोई प्रोग्राम में जाना है क्या ?

प्रेम . हाँ। एक बहुत बड़े प्रोग्राम में जाना है।

सरला : मगर आप तो जानते हैं कि ·

प्रेम · (बात काटकर) घबराओ नहीं। वहाँ कोई ज्यादा देर नहीं लगेगी।

सरला मगर आप तो कह रहे हैं न, कि बड़े प्रोग्राम में जाना है ?

प्रेम · नहीं, हम जल्दी ही वापस लौट आएँगे। मिलने पर सब कुछ बताऊँगा। बाय !

□ □

[ऑफिस छूटने के बाद सरला बस-स्टाप के करीब खड़ी रहकर प्रेम का इन्तजार कर रही है। तभी प्रेम गाड़ी लेकर आ पहुँचता है।]

पंक दो] [पंगठ

सरला : लड़के और लड़कियों के फर्क की।

प्रेम : ये सब पुरानी बातें हैं।

सरला : कौन-सी बातें पुरानी नहीं है ?

प्रेम : अब बहस के लिए हमारे पास वक्त नहीं है। हम कोठी पर पहुँच गये हैं। (गाड़ी को फाटक के अन्दर मोड़ते हुए) माँ का दिमाग थोड़ा तेज है। कहीं ऐसी-वैसी बात पूछ ले तो बुरा न मानना।

सरला : क्या आपने हमारे बारे में सब कुछ बता दिया है ?

प्रेम : (गाड़ी रोकते हुए) हाँ-हाँ तुम इस बात की चिन्ता न करो।

सरला : क्या वे सब सचमुच राजी है ?

प्रेम : (दरवाजा खोलते हुए, हँसकर) खुद ही चलकर देख लो।

□ □

[जानकीदास अपने दीवानखाने में बैठे अखबार पढ़ रहे हैं। सरला और प्रेम दीवानखाने में दाखिल होते हैं।]

प्रेम : आप हैं मेरे पिताजी। और ये सरला है, पिताजी !

[सरला हाथ जोड़कर जानकीदास को प्रणाम करती है।]

जानकी : आओ बेटी, आओ। बैठो।

[सरला नजदीक के सोफे पर बैठ जाती है।]

प्रेम : (आश्चर्य से इधर-उधर देखते हुए) माँ कहाँ है ?

जानकी : तुम्हारी माँ को तो हमेशा ही सिर दर्द रहा करता है। वहीं ऊपर जाकर लेटी होगी। जाओ, उसे बुला लाओ।

[प्रेम दौड़ते हुए ऊपर की सीढ़ियाँ चढ़ता है।]

जानकी : (सरला से) बेटी, प्रेम ने तो तुम्हारी खूब तारीफ कर रखी थी, पर तुम्हें देखने के बाद तो यही लगता है कि वह भी कम थी।

[सरला कुछ लजा जाती है।]

बेटी, कौन-से सब्जेक्ट से बी. ए. पास किया है ?

प्रेम (पास आकर बालों को सहलाते हुए) [illegible] नहीं हुई मेरे आज से ?

सरला (बैठते हुए) नहीं तो। (हँसकर) ज़िन्दगी में किसी भी चीज़ को पाने के लिए इन्तज़ार तो करना ही पड़ता है।

[प्रेम सरला की बात का कुछ जवाब नहीं देता।]

प्रेम (गम्भीर होकर) सरला, आज जो कुछ भी हुआ उसके लिए बहुत शर्मिन्दा हूँ।

सरला (आश्चर्य से) ये आप क्या कह रहे हैं।

प्रेम आज की बात से एक बहुत बड़ा सबक सीखा कि ज़िन्दगी में मज़ाक हर वक्त और हर जगह नहीं किया जा सकता। तुमने उस दिन ठीक ही कहा था। आज उसे महसूस कर रहा हूँ।

सरला आप बुरा तो नहीं मान गए ?

प्रेम : (हँसते हुए) मज़ाक तब किया जाता है जब उसे बर्दाश्त करना भी आता हो। इसमें बुरा मानने की क्या बात है। (रुककर) छोड़ो इस बात को। पता है, तुम्हें आज मैं कहाँ ले जा रहा हूँ ?

सरला : आप ही ने तो कहा था कि मिलने पर बताऊँगा।

प्रेम : तो सुन लो, मैं तुम्हें अपने घर ले जा रहा हूँ।

सरला . आपके घर ?

प्रेम : क्यों डर लग रहा है ?

सरला : नहीं तो। मगर ·

प्रेम : मैंने कई दिनों से पिताजी और माँ से वादा किया था सो आज वह वादा पूरा करने जा रहा हूँ। वे दोनों आज तुम्हें देख लेंगे और फिर खुद ही तुम्हारे बाबूजी से तुम्हारा हाथ माँगने आएँगे।

सरला : मगर घर पर बाबूजी को तो अभी कुछ भी पता नहीं है।

प्रेम : (हँसकर) तो बाबूजी से जल्दी ही तुम सब कुछ बता देना।

सरला : ये सब इतनी जल्दी कैसे हो सकता है ?

प्रेम : जैसे मैंने किया है।

सरला : यही तो आप नहीं समझते।

प्रेम : क्या ?

[दृश्यान्त]

सरला : लड़के और लड़कियों के फर्क को।
प्रेम : ये सब पुरानी बातें हैं।
सरला : कौन-सी बातें पुरानी नहीं हैं ?
प्रेम : अब बहस के लिए हमारे पास वक्त नहीं है। हम कोठी पर पहुँच गये हैं। (गाड़ी को फाटक के अन्दर मोड़ते हुए) माँ का दिमाग थोड़ा तेज है। कहीं ऐसी-वैसी बात पूछ ले तो बुरा न मानना।
सरला : क्या आपने हमारे बारे में सब कुछ बता दिया है ?
प्रेम : (गाड़ी रोकते हुए) हाँ-हाँ तुम इस बात की चिन्ता न करो।
सरला : क्या वे सब सचमुच राजी हैं ?
प्रेम : (दरवाजा खोलते हुए, हँसकर) खुद ही चलकर देख लो।

□ □

[जानकीदास अपने दीवानखाने में बैठे अखबार पढ़ रहे हैं। सरला और प्रेम दीवानखाने में दाखिल होते हैं।]

प्रेम : आप हैं मेरे पिताजी। और ये सरला है, पिताजी!

[सरला हाथ जोड़कर जानकीदास को प्रणाम करती है।]

जानकी : आओ बेटी, आओ। बैठो।

[सरला नजदीक के सोफे पर बैठ जाती है।]

प्रेम : (आश्चर्य से इधर-उधर देखते हुए) माँ कहाँ हैं ?
जानकी : तुम्हारी माँ को तो हमेशा ही सिर दर्द रहा करता है। कहीं ऊपर जाकर लेटी होगी। जाओ, उसे बुला लाओ।

[प्रेम दौड़ते हुए ऊपर की सीढ़ियाँ चढ़ता है।]

जानकी : (सरला से) बेटी, प्रेम ने तो तुम्हारी खूब तारीफ कर रखी थी, पर तुम्हें देखने के बाद तो यही लगता है कि वह भी कम थी।

[सरला कुछ लजा जाती है।]

बेटी, कौन-से सब्जेक्ट से बी. ए. पास किया है ?

अंक दो]   [मध्यम

प्रेम . (पास आकर गाड़ी का दरवाजा खोलते हुए) बहुत ज्यादा देर तो नहीं हुई मेरे आने में ?

सरला · (बैठते हुए) नहीं तो। (हँसकर) जिन्दगी में किसी भी चीज को पाने के लिए इन्तजार तो करना ही पड़ता है।

[प्रेम सरला की बात का कुछ जवाब नहीं देता।]

प्रेम (गम्भीर होकर) सरला, आज जो कुछ भी हुआ उसके लिए मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।

सरला · (आश्चर्य से) ये आप क्या कह रहे हैं।

प्रेम : आज की बात से एक बहुत बड़ा सबक सीखा कि जिन्दगी मजाक हर वक्त और हर जगह नहीं किया जा सकता। तुमने ए दिन ठीक ही कहा था। आज उसे महसूस कर रहा हूँ।

सरला . आप बुरा तो नहीं मान गए ?

प्रेम : (हँसते हुए) मजाक तब किया जाता है जब उसे बर्दाश्त करना भ आता हो। इसमें बुरा मानने की क्या बात है। (रुककर) छोड़ इस बात को। पता है, तुम्हें आज मैं कहाँ ले जा रहा हूँ ?

सरला · आप ही ने तो कहा था कि मिलने पर बताऊँगा।

प्रेम . तो सुन लो, मैं तुम्हें अपने घर ले जा रहा हूँ।

सरला . आपके घर ?

प्रेम . क्यों डर लग रहा है ?

सरला . नहीं तो। मगर ··

प्रेम : मैंने कई दिनों से पिताजी और माँ से वादा किया था सो आज वह वादा पूरा करने जा रहा हूँ। वे दोनों आज तुम्हें देख लेंगे और फिर खुद ही तुम्हारे बाबूजी से तुम्हारा हाथ माँगने आएँगे।

सरला : मगर घर पर बाबूजी को तो अभी कुछ भी पता नहीं है।

प्रेम · (हँसकर) तो बाबूजी से जल्दी ही तुम सब कुछ बता देना।

सरला · ये सब इतनी जल्दी कैसे हो सकता है ?

प्रेम : जैसे मैंने किया है।

सरला : यही तो आप नहीं समझते।

प्रेम : क्या ?

[विरामट]

सरला : लड़के और लड़कियों के फर्क को ।

प्रेम : ये सब पुरानी बातें हैं ।

सरला : कौन-सी बातें पुरानी नहीं हैं ?

प्रेम : अब बहस के लिए हमारे पास वक्त नहीं है । हम कोठी पर पहुँच गये हैं । (गाड़ी को फाटक के अन्दर मोड़ते हुए) माँ का दिमाग थोड़ा तेज है । कहीं ऐसी-वैसी बात पूछ ले तो बुरा न मानना ।

सरला : क्या आपने हमारे बारे में सब कुछ बता दिया है ?

प्रेम : (गाड़ी रोकते हुए) हाँ-हाँ तुम इस बात की चिन्ता न करो ।

सरला : क्या वे सब सचमुच राजी हैं ?

प्रेम : (दरवाजा खोलते हुए, हँसकर) खुद ही चलकर देख लो ।

□ □

[जानकीदास अपने दीवानखाने में बैठे अखबार पढ़ रहे हैं । सरला और प्रेम दीवानखाने में दाखिल होते हैं ।]

प्रेम : आप हैं मेरे पिताजी । और ये सरला है, पिताजी ।

[सरला हाथ जोड़कर जानकीदास को प्रणाम करती है ।]

जानकी : आओ बेटी, आओ । बैठो ।

[सरला नजदीक के सोफे पर बैठ जाती है ।]

प्रेम : (आश्चर्य से इधर-उधर देखते हुए) माँ कहाँ हैं ?

जानकी : तुम्हारी माँ को तो हमेशा ही सिर दर्द रहा करता है । कहीं ऊपर जाकर लेटी होगी । जाओ, उसे बुला लाओ ।

[प्रेम दौड़ते हुए ऊपर की सीढ़ियाँ चढ़ता है ।]

जानकी : (सरला से) बेटी, प्रेम ने तो तुम्हारी खूब तारीफ कर रखी थी, पर तुम्हें देखने के बाद तो यही लगता है कि वह भी कम थी ।

[सरला कुछ लजा जाती है ।]

बेटी, कौन-से सब्जेक्ट में बी. ए. पास किया है ?

अंक दो]

[सहमर्ज

कुसुम : मैंने सबके लिए कहा था ।

जानकी : अच्छा, तो आपने सबके लिए कहा था !

[बनवारीलाल ट्रे रखकर जल्दी से चला जाता है ।]

कुसुम, चाय पी-पीकर तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है । व अब औरों को भी यह रोग लगाना चाहती हो ?

कुसुम : चाय ठंडी हो रही है । आप चाय पीजिए ।

जानकी : (चाय का कप उठाते हुए) अच्छा जी जो हुक्म !

(सरला से) बेटी, बिस्किट खाने के लिये ही रखे हैं ।

सरला : जी ! (बिस्किट उठाती है)

जानकी . (प्रेम की ओर देखकर) क्या भई, लगता है तुम भी आज श रहे हो !

प्रेम . (बिस्किट उठाते हुए) ओह पिताजी, आप कभी-कभी तो कर देते हैं ।

जानकी : अरे बेटे, हद तो हमने की थी जब हम कभी तुम्हारी बे थे । (रुककर) हमारे दिनों में शादी से पहले लड़कों कभी लड़कियाँ दिखाई नहीं जाती थीं । फिर भी हम तो करके तुम्हारी माँ को देखने गए थे और तब तुम्हारी माँ स आकर बैठी तो बस हम तो पहली ही नजर में अपना गो बैठे । लोग हमारे मुँह में मिठाइयाँ रखे जा रहे थे मगर ह नजर तो तुम्हारी माँ की ओर से हटती ही नहीं थी । एक दिल में ऐसा प्यार उमड़ा कि हमने एक लड्डू उठाकर जबर तुम्हारी माँ के मुँह में ठूस दिया ।

[सरला और प्रेम हँसते हैं ।]

(कुसुम से) क्यों जी !

[कुसुम मुँह बनाकर जानकीदास की बात पर क्रोध करती है ।]

सब के सब लोग दंग रह गए । बड़ों को हम पर बड़ा आया । मगर वे भी बेचारे क्या करते ! जवानी और देशों के आ सामने सबको झुकना पड़ता है ।

(सरला और प्रेम को हँसते हुए देखकर प्रेम से) अरे, यव अब दो]   [उ

कुसुम : मैंने सबके लिए कहा था।

जानकी : अच्छा, तो आपने सबके लिए कहा था!

[बनवारीलाल ट्रे रखकर जल्दी से चला जाता है।]

कुसुम, चाय पी-पीकर तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है। क्यों अब औरों को भी यह रोग लगाना चाहती हो?

कुसुम : चाय ठंडी हो रही है। आप चाय पीजिए।

जानकी : (चाय का कप उठाते हुए) अच्छा जी, जो हुक्म!

(सरला से) बेटी, बिस्किट खाने के लिये ही रखे हैं।

सरला : जी! (बिस्किट उठाती है)

जानकी : (प्रेम की ओर देखकर) क्या भई, लगता है तुम भी आज शर्मा रहे हो!

प्रेम : (बिस्किट उठाते हुए) ओह पिताजी, आप कभी-कभी तो हद कर देते हैं।

जानकी : अरे बेटे, हद तो हमने की थी जब हम कभी तुम्हारी उम्र के थे। (रुककर) हमारे दिनों में शादी से पहले लड़कों को कभी लड़कियाँ दिखाई नहीं जाती थीं। फिर भी हम तो जिद करके तुम्हारी माँ को देखने गए थे और तब तुम्हारी माँ सामने आकर बैठी तो बस हम तो पहली ही नजर में अपना होश खो बैठे। लोग हमारे मुँह में मिठाइयाँ रखे जा रहे थे मगर हमारी नजर तो तुम्हारी माँ की ओर से हटती ही नहीं थी। एकाएक दिल में ऐसा प्यार उमड़ा कि हमने एक लड्डू उठाकर जबरदस्ती तुम्हारी माँ के मुँह में ठूँस दिया।

[सरला और प्रेम हँसते हैं।]

(कुसुम से) क्यों जी!

[कुसुम मुँह बनाकर जानकीदास की बात पर क्रोध प्रकट करती है।]

सब के सब लोग दंग रह गए। कइयों को हम पर बड़ा गुस्सा आया। मगर वे भी बेचारे क्या करते! जवानी और पैसों के जोश के सामने सबको झुकना पड़ता है।

(सरला और प्रेम को हँसते हुए देखकर प्रेम से) अरे, यकीन न आता हो? [उन्नतर

सरला : जी, इंगलिश लिटरेचर।

जानकी : शेक्सपियर को तो जरूर पढ़ा होगा ?

सरला : जी।

जानकी : वाह, वाह। बेटी, फिर तो हम एक ही स्कूल के मेम्बर हैं।
[सरला कुछ मुस्करा देती है।]
(प्रेम और कुसुम को आते हुए देखकर) लो, महारानी जी आ गईं।

कुसुम : हाँ-हाँ, और कुछ कहिए।
[सरला खड़ी होकर कुसुम को नमस्ते करती है। मगर कुसुम उसका ठीक से जवाब नहीं देती।]

जानकी : बेटी, जब से प्रेम की माँ से शादी हुई है, वो हाल हुए हैं कि बस पूछो मत। इसलिये प्रेम को हमेशा यही कहता आया हूँ कि बेटे जिन्दगी में सब-कुछ सोचे बिना करना, मगर शादी नहीं। (कुसुम की ओर देखकर) क्यों जी, ठीक है न ?
[जानकीदास की बात पर सरला और प्रेम कुछ मुस्कुराते हैं।]

कुसुम : बच्चों के सामने ऐसी बातें करते हुए ... ...

जानकी : अजी, बच्चों के सामने नहीं तो यह सब क्या भरी सभा में जाकर कहूँ ?

कुसुम : ठीक है। आपके जी में जो आए कहिए।

जानकी : भागवान, तुम तो नाराज हो गईं। आखिर अपने बच्चों के साथ बैठकर मजाक करने में क्या बुरा है ?

कुसुम : आपको तो दिन-रात मजाक ही सूझता है।

जानकी : अरे भागवान, तुम भी तो कभी इसका मजा लेकर देखो। (प्रेम की ओर देखकर) क्यों बेटे ठीक है न ?

प्रेम : (मुस्कराते हुए) जी पिताजी।
[तभी घर का नौकर ट्रे में बिसुकिट और चाय लेकर आता है।]

जानकी : (नौकर से) बनवारीलाल, तुम्हें किसने कहा था कि सबके लिए चाय लेकर आओ !

बनवारी : (घबराकर) मालकिन ने सरकार।

जानकी : मालकिन ने सिर्फ अपने लिए ही कहा होगा।

कुसुम . मैंने सबके लिए कहा था ।

जानकी अच्छा, तो आपने सबके लिए कहा था !

[बनवारीलाल ढूँढ़कर जल्दी से चला आता है ।]

कुसुम, चाय पी-पीकर तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है । क्या सब लोगों को भी यह रोग लगाना चाहती हो ?

कुसुम . चाय ठंडी हो रही है । आप चाय पीजिए ।

जानकी . (चाय का कप उठाते हुए) अच्छा जी जो हुक्म !

(सरला से) बेटी, बिस्किट साथ के लिए ही रखे हैं ।

सरला . जी ! (बिस्किट उठाती है)

जानकी (प्रेम की ओर देखकर) क्या भई, लगता है तुम भी आज शर्मा रहे हो !

प्रेम . (बिस्किट उठाते हुए) आह पिताजी, आप कभी-कभी तो हद कर देते हैं ।

जानकी अरे बेटे, हद तो हमने की थी जब हम कभी तुम्हारी उम्र के थे । (रुककर) हमारे दिनों में शादी से पहले लड़कों को कभी लड़कियाँ दिखाई नहीं जाती थीं । फिर भी हम तो जिद करके तुम्हारी माँ को देखने गए थे और जब तुम्हारी माँ सामने आकर बैठी तो बस हम तो पहली ही नजर में अपना होश खो बैठे । लोग हमारे मुँह पे मिठाइयाँ रखे जा रहे थे मगर हमारी नजर तो तुम्हारी माँ की ओर से हटती ही नहीं थी । एकाएक दिल में ऐसा प्यार उमड़ा कि हमने एक लड्डू उठाकर जबरदस्ती मुँह में ठूँस दिया ।

कुसुम : (सरला से) हाँ, मगर एक बात सुन लो। शादी के बाद नौकरी छोड़नी पड़ेगी।

सरला : (सिर हिलाकर अपनी सम्मति देती हुई) जी।

जानकी : (कुसुम से) अरे छोड़ो इन बातों को। यह तो बताओ कि शादी का मुहूर्त कब निकलवाना है। क्या-क्या तैयारियाँ करवानी हैं। अभी हमें सरला बेटी के घर भी तो जाना है। (सरला से) क्यों बेटी तुम्हें इसके लिए कोई एतराज तो नहीं है ?

[सरला स्वीकार में सिर हिलाती है।]

प्रेम : पिताजी, सरला को घर जाने में बहुत देर हो जाएगी। आप कहें तो अब हम चलें ?

जानकी : हाँ, हाँ, जाओ बेटे। तुम उसे छोड़ आओ। कहीं लौटने में ज्यादा देर हो गई तो घर पर फिक्र करेंगे।

[प्रेम और सरला जाने के लिए उठ खड़े होते हैं। सरला जाते-जाते जानकीदास और कुसुम को हाथ जोड़कर नमस्ते करती है।]

कुसुम : पता नहीं इस चुड़ैल ने मेरे बेटे पर क्या जादू कर दिया है। कहाँ ये घर और कहाँ ये भिखारिन !

जानकी : प्रेम की माँ शर्म आनी चाहिये। अपनी होने वाली बहू के लिये तुम ऐसी बातें कर रही हो।

कुसुम : (और क्रोधित होकर) मेरा बस चलता तो मैं ऐसी भिख-मंगिन को अपनी बहू बनाती। (चली जाती है)

जानकी : चाहे पूरा जमाना क्यों न बदल जाए, मगर प्रेम की माँ तुम कभी नहीं बदलोगी।

□ □

[प्रेम और सरला गाड़ी में बैठे हैं। प्रेम सरला को घर छोड़ने जा रहा है।]

प्रेम : सरला घर तो पसंद आया ?

सरला : हूँ.........

प्रेम : (सरला की ओर देखकर) सिर्फ हूँ ! और कुछ नहीं कहोगी !

[सरला से रहा नहीं जाता। उसकी आँखों में आँसू गिरने लगते हैं।]

अरे तुम्हारी आँखों में आँसू ! (हाथ कंधे पर रखते हुए) सरला, क्या तुम्हें किसी बात का बुरा लगा ?

[सरला कुछ जवाब नहीं देती।]

बताओ न क्या हुआ ?

सरला : क्या इन्सान की इज्जत सिर्फ पैसे से ही होती है ?

प्रेम : क्या तुमने माँ की बात का बुरा मान लिया ?

[रुककर

बक दो]

सरला जो बात माँ को पसन्द नहीं वह आप क्यों करना चाहते हैं ?

प्रेम : सरला, यह तुम यह क्या रही हो ?

सरला . (आँसुओं को पोंछते हुए) क्या बुरा कहा है, मैंने ?

प्रेम : सरला, क्या तुम चाहती हो कि माँ की नासमझी के कारण दो जिन्दगियाँ बरबाद हो जाएँ ?

सरला : दो जिन्दगियों को बनाने के लिए एक जिन्दगी बरबाद भी तो नहीं कर सकते।

प्रेम . यह तो माँ का स्वभाव हो गया है सरला। धीरे-धीरे सब कुछ ठीक हो जाएगा। (भावुक होकर) मगर तुमने कुछ और सोचा तो मेरी जिन्दगी तो यहीं रुक जाएगी।

सरला ऐसा क्यों कहते हैं ?

प्रेम : जिससे कि शायद तुम मेरे दिल में झाँकने की कोशिश करो।

सरला : मैंने आपके लिए सब कुछ कहा है।

प्रेम हर प्यार की इमारत कुर्बानी की नींव पर बनती है। क्या तुम मेरे लिए इतनी कुर्बानी नहीं दे सकोगी सरला ?

[सरला सिसक पड़ती है। और अपना सिर प्रेम के कंधे पर रख देती है।]

सरला, यह घर तो क्या वक्त आने पर तुम्हारे लिए मैं सारी दुनिया छोड़ सकता हूँ।

[सरला प्रेम की बात का कुछ जवाब नहीं देती और यों ही अपना सिर प्रेम के कन्धे पर डाले हुए पड़ी रहती है। थोड़ी देर बाद प्रेम गाड़ी सड़क के किनारे रोक देता है।]

सरला : (चौंककर) गाड़ी क्यों रोक दी ?

प्रेम : इस वक्त मैं घर नहीं आऊँगा। यहीं से लौट चलूँगा।

[सरला फिर आँखें पोंछ लेती है और गाड़ी का दरवाजा खोलकर उतरने लगती है तो प्रेम उसका हाथ थाम लेता है।]

मुझे माफ नहीं करोगी ?

[सरला प्यार भरी नजरों से उसे देखती जाती है।

जाते हुए, कम से कम अपने प्रेम के लिए, एक बार तो मुस्करा दो

बस्तर] [दीवार

अब मां डाना का मुहूर्त निकलवाके बुलवाओ।

सरला : फिर मजाक ?

प्रेम : अच्छा बाबा भूल हो गई। मैं तुम्हें फोन करूंगा। बाय !

[सरला नीचे उतरकर हाथ हिलाती है। प्रेम गाडी लेकर चला जाता है।]

[सरला घर में आती है।]

□ □

माया : (गिरधारीलाल की ओर देखकर) लो, मैं कह रही थी न, दीदी आ गई। आप तो बस किसी के आने में थोड़ी-सी देर हुई कि अनायास ही फिकर करने लग जाते हैं।

सरला : (गिरधारीलाल से) बाबूजी, रास्ते में अचानक प्रेम बाबू मिल गए थे। इसी से आने में कुछ देर हो गई।

माया : हमने तो सोचा था कि आज फिर हमारी दीदी का ओवर टाइम होगा।

सरला : जब ओवर टाइम होगा, हम पहले ही अपनी दादी माँ को करेंगे।

न के पैसे भी दादी माँ को ही दे

टाइम के दिन पढ़ाई छोड़कर खाना

गई। मैं ही एक बेकार हूँ जो बरबस जिए जा रही हूँ। (सि-
सककर रोने लग जाती है।)

गिरधारी (मुस्कराते हुए) पगली बेटी !

□ :

[उसी रात जब माया देखती है कि सरला कुछ बेचैन है और उसे नींद नहीं आ रही, तो उससे पूछने लगती है—]

माया : दीदी, तुम अभी सोई नहीं ? क्या तबीयत ठीक नहीं है ?

[सरला माया की बात का कुछ जवाब नहीं देती और करवट बदल लेती है।]

बताओ न ?

सरला : कुछ नहीं।

[माया अपने बिस्तर से उठकर सरला के बिस्तर पर उसके साथ लेट जाती है।]

माया : (आश्चर्य से) अरे, तुम तो रो रही हो !

सरला : नहीं तो। (आँखों में उमड़ आए आँसुओं को पोंछते हुए मुस्कराने की कोशिश करती है)

माया : हूँ ! जरूर मुझसे कुछ छिपा रही हो। (रुककर) मैं हमेशा बोलती रहती हूँ क्या उसका बुरा लग गया ?

सरला : माया ! (उसे अपने गले लगा लेती है) तुम्हारी बातों का मैंने कभी बुरा माना है क्या ? तुम तो मेरी सब कुछ हो।

माया : (धीमे स्वर में) हाँ, इसलिए तो कुछ बताए बिना अकेली ही चुप-चुपकर रो रही हो ! जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती।

सरला : (माया का कपोल चूमते हुए) मुझे आज माँ की याद आ गई थी। काश, वह जिन्दा होती।

माया : (स्नेह से) जब मैं माँ को याद करके रोती हूँ तो मुझे डाँटती लगती हो और आज खुद माँ को याद करके रोने बैठी हो !

चौदह]

सरला : पगली, तुम्हें क्या रोना पड़े ? तुम्हारे लिए मैं जो हूँ।

माया : और मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं ?

[सरला फिर माया का सिर चूम लेती है।]

अब मैं तुम्हारे किसी झूठे बहकावे में नहीं आने वाली। पहले यह बताओ कि बात क्या है ?

सरला : क्या बतानी ही पड़ेगी ?

माया : (भावुक होकर) हां बिलकुल। अगर तुम सचमुच यह कहती हो कि मैं ही तुम्हारे लिए सब कुछ हूँ। वरना ...

[सरला माया के मुँह पर हाथ रख देती है।]

सरला : आज वही बात हो गई जिसका मुझे शुरू से डर था।

माया : क्या ?

सरला : आज शाम को प्रेम बाबू मुझे अपने घर ले गए थे। उनके माता-पिता हमारी शादी के लिए राजी हो गए हैं और ...

माया : (बात काटकर, खुश होते हुए) सच ?

सरला : हाँ।

माया : (गले लिपटते हुए) इससे अच्छा और क्या हो सकता है।

सरला : अब वे जल्दी ही बाबूजी से बात करने के लिए घर आना चाहते हैं। मगर यह सब मैं बाबूजी को कैसे बता सकती हूँ।

माया : ओह ! तो इसमें कौन-सी परेशानी की बात है। मैं बाबूजी को बता दूँगी।

सरला : नहीं, नहीं। इतनी जल्दी यह कैसे हो सकता है ? अभी मुझे तुम्हारा और बाबूजी का भी तो सोचना है।

माया : अरे दीदी, तुम तो मूरख हो। बाबूजी को दिन-रात हमारी फिकर लगी हुई है, और तुम हो कि मेरी और बाबूजी की फिकर लगाए बैठी हो।

सरला : अगर मैं फिकर नहीं करूँगी तो क्या कोई और करेगा ?

माया : दीदी, तुम अपना मामला निपटालो। फिर एक-आध साल बाद मैं

[illegible]

मर

सरला : फिर प्रकाश ?

माया : सच कह रही हूँ दीदी। बाबूजी हमारी शादी करके हम भी यहाँ रखना नहीं चाहते। वे तो चाहते हैं कि दोनों बहनें सारी जिन्दगी कुआँरी ही साथ रहें।

सरला : यह कैसे हो सकता है ?

माया : तो क्या तुम समझती हो कि जिन्दगी भर बाबूजी हमारी छाती पर यहाँ बैठे रहेंगे ? मैं तो अकेले में उनसे कई बार कह चुकी हूँ और कहती हूँ कि हम तुम्हें यहाँ से कहीं नहीं जाने देंगे। मेरी बात सुनकर वो हँसते हैं और कहने लगते हैं कि बेटी, ऐसी जिद कभी मत करना।

सरला : मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।

माया : घर का बोझ सँभालते-सँभालते तुम्हारा दिमाग बूढ़ा हो गया है। तुम किसी बात की चिन्ता मत करो दीदी। मौका मिलते ही बाबूजी को मैं सब-कुछ बता दूँगी। इतना अच्छा चान्स हम यूँ थोड़े ही छोड़ देंगे।

सरला : चल हट! कालेज में जाकर तो बिल्कुल ही बेशर्म हो गई है।

माया : दीदी, आजकल शर्म का ठेका बेचारे लड़कों ने ले रखा है तो हम क्यों न आजाद फिरें। (हँसकर) हम तो सदियों से गुलाम रहीं हैं, अब बारी मर्दों की है ! बोलो क्या ख्याल है ?

सरला : (गम्भीर होकर) माया, बाबूजी कहीं नाराज हो गए तो ?

माया : बाबूजी जब यह सुनेंगे तो उनकी खुशी की तो कोई सीमा नहीं रह जाएगी। वे कब किसी की परवाह करते हैं ? हमारे लिए सभी कुछ करने को तैयार रहते हैं।

सरला : फिर भी यह शादी का मामला है। इसमें बहुत-सी बातें ...

माया : (अपने बिस्तर में जाते हुए) ओह दीदी, अब मुझे सोने दो।

सरला : (माया का हाथ पकड़ते हुए) मगर यह सब तुम बाबूजी को बताओगी कैसे ?

माया : कहा न कि सब तुम मुझ पर छोड़ दो। (रुककर) मगर हाँ, मेरी एक शर्त है।

——— ?

सरला : क्या ?
माया : जब तुम्हारा काम हो जाए तो मुझे एक स्वेटर खरीद देनी होगी। दोनों मंजूर है ?
सरला (मुस्कराकर) एक नहीं, दो खरीद दूँगी। (उसका सिर चूम लेती है।)

□ □

[प्रेम अपने ऑफिस से सरला को फोन करता है। काम में व्यस्त सरला रिसीवर उठाती है।]

प्रेम डार्लिंग, मैं प्रेम बोल रहा हूँ। कहीं रिसीवर न पटक देना।
सरला · (हँसते हुए) तो आपको ठीक से याद रह गया है।
प्रेम बिल्कुल, इतनी बड़ी बात कैसे भूल सकता हूँ। मगर फिर कुछ कुछ मालूम नहीं हुई, क्या बात है ? कोई नया ऑपरेटर आया है क्या ?
सरला ऑपरेटर तो पुराना ही है। मगर इन्स्ट्रक्शन्स नई दे दी गई हैं।
प्रेम ओह यह बात है। अच्छा यह तो बताओ कि अब कहाँ तक प्रोग्रेस हुई है ?
सरला : अभी मौके की तलाश जारी है।
प्रेम एक बात बताऊँ ?
सरला क्या ?
प्रेम . जब से तुम्हें देखा है, डैडी और मम्मी को घर में तुम्हारे सिवा कुछ नजर नहीं आता।
सरला . सच ?
प्रेम · तुम्हें तुम्हारे घर से लाने के लिए वे बेचैन हैं। मैं ही उन्हें किसी तरह से टाल रहा हूँ। मगर अब ज्यादा टालना नामुमकिन है।
सरला मैं आपको दो एक दिन में ही बताऊँगी।
प्रेम : आज शाम मिलोगी ?
सरला : यहीं बाहर जाना मुश्किल है।
बस हो] [समाप्त

गिरधारी : बहुत अच्छा किया। सरला बेटी ने शाम को दफ्तर से लौटकर जब से आपके आने की खबर सुनाई, आप ही का इन्तजार हो रहा था।

[माया अन्दर से पानी का गिलास लाकर प्रेम के हाथ में देती है। प्रेम पानी पीने लगता है।]

माया : (हँसकर) बाबूजी, ये हम से मिलने थोड़े ही आए हैं। ये तो दीदी के हाथ के बनाए समोसे खाने आए हैं।

प्रेम : (पानी का गिलास लौटाते हुए) थैंक्यू। माया जी, समोसे की बात तो बाद में ही हुई थी। पहले तो सरला जी से मैंने यही कहा था कि आज शाम को मैं घर आ रहा हूँ।

गिरधारी : बेटी, घर आए मेहमान के लिए ऐसी बातें नहीं करते। ये तो प्रेम बाबू हैं, वरना और कोई होता तो तुम्हारी बातों का बुरा मान जाता।

प्रेम : जी नहीं, इसमें बुरा मानने की क्या बात है! वैसे मायाजी का कहना भी कुछ हद तक ठीक ही है। (हँसने लगता है।)

[माया प्रेम की बात का जवाब न देकर मुस्कराते हुए गिलास लेकर अन्दर चली जाती है]

गिरधारी : इतनी बड़ी हो गई है, मगर अब भी बच्चों की-सी हरकतें किया करती है।

प्रेम : बाबूजी, जिन्दगी ऐसे ही तो गुजरती है।

[सरला अन्दर के कमरे से बाहर आती है।]

सरला : (प्रेम से) कितनी देर कर दी आने में? कह रहे थे कि जल्दी ही आ जाऊँगा।

[माया भी बाहर आ जाती है।]

प्रेम : सोचा, थोड़ा टेनिस खेलकर जाऊँ तो अच्छी-सी भूख लग जाएगी। बस इसी वजह से थोड़ी देर हो गई। (सब हँस देते हैं।]

सरला : ये बताइए, समोसे और चाय साथ में लेंगे या चाय बाद में?

प्रेम : जैसे आप कहें।

अंक दो] [उन्यासी

माया : आप भी ठीक [illegible] । सरला तुम भी समोसे के साथ [illegible] [illegible] ही ली लेना है।

सरला : बातों में आप भाभी को . .

प्रेम : मैं अपना हार मान गया हूँ। चाय-समोसे साथ ही हो जाएँ।

सरला : अभी लाती हूँ। (सरला और माया दोनों ही अन्दर चली जाती हैं।)

□□

[उस रात दोनों बहनें सोने लगती हैं तो सरला धीरे से माया से कहने लगती है—]

सरला : माया !

[माया जागने पर भी सरला की बात का कुछ जवाब नहीं देती। और आँखें मूँदे पड़ी रहती है। सरला फिर उसे पुकारती है, तब जाकर कहीं माया उससे बात करती है]

माया : क्या, तुम्हें नींद नहीं आ रही है ? आँखों से प्रेम बाबू को निकाल दो, सरला, पलकें नहीं मुँद पायेंगी।

सरला : (माया का कान खींचते हुए) एक दिन तुझे ऐसी ठीक करूँगी कि याद रखेगी। आज कल बहुत कुछ बोलना सीख गई है।

माया : और क्या कहूँ ? क्यों सताती हो, नींद आ रही है।

सरला : खूब जानती हूँ, तुझे बड़ी नींद आ रही है ! (स्नेह से) एक बार मेरी बात तो सुन ले, फिर जाकर सो जाना।

माया : क्या है ?

सरला : मैं सोच रही हूँ कि अब बाबूजी को हम कैसे बताएँ ?

माया : ओफ् हो ! दीदी, मैंने पहले ही तुमसे कह दिया है न कि इस बात की चिन्ता तुम मुझ पर छोड़ दो ? मैं सब कुछ सँभाल लूँगी।

सरला : मगर आज प्रेम कह रहा था कि उनके माता-पिता अब जल्दी ही बाबूजी से बात करने घर —

माया : (सोचकर) ठीक है । उनके आने से पहले मैं बाबूजी से बात कर लूँगी । तुम अब इसकी चिन्ता छोड़कर सो जाओ । (करवट बदल लेती है ।)

□ □

[दूसरे दिन माया कालेज से कुछ देर से घर लौटती है । उसका चेहरा भी कुछ उतरा हुआ-सा नजर आता है ।]

रधारी : क्या हुआ बेटी, आज कालेज से आने में बहुत देर कर दी ?

[माया गिरधारीलाल की बात का कुछ जवाब नहीं देती ।]

सरला : (माया से) बाबूजी ने कुछ कहा, सुना नहीं क्या ?

माया : (तनिक गुस्से से) सुना ।

रधारी : बेटी तबीयत तो ठीक है ?

माया : (धीमे स्वर में) पहले दीदी से कहिए कि यहाँ से अन्दर चली जाए । मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ ।

गिरधारी : अरे, मगर बात क्या है बेटी ? दीदी कौन-सी पराई है !

माया : नहीं, मैं दीदी के सामने कुछ नहीं कहूँगी ।

[सरला माया को आश्चर्य से देखने लगती है और फिर झट से बोल उठती है—]

सरला : अच्छा बाबा, अच्छा । अगर मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती तो अन्दर चली जाती हूँ ।

[सरला अन्दर चली जाती है और दोनों की बातें सुनने के लिए दरवाजे के पास खड़ी रह जाती है । माया कुछ गुस्से में गिरधारीलाल के पलंग पर बैठ जाती है ।[

गिरधारी : बेटी, आज ये तुम्हें क्या हो गया है । कुछ बताओ तो सही ।

[माया का सिर सहलाने लगते हैं ।)

माया : आज वह प्रेम बाबू मिले थे । उनसे झगड़ा हो गया ।

गिरधारी : कहाँ मिले थे बेटी ? आखिर किस बात पर झगड़ा हो गया ?

अब दो]

[दरवाजे

माया : आप अपनी पसन्द कहिए। वरना हम तो समोसे के साथ सिर्फ पानी ही पी लेते हैं।
सरला : बोलने में आप माया को ·....
प्रेम मैं अपनी हार मानता हूँ। चाय-समोसे साथ ही हो जाए।
सरला : अभी लाती हूँ। (सरला और माया दोनों ही अन्दर चली जाती हैं।)

□□

[उस रात दोनों बहनें सोने लगती हैं तो सरला धीरे से माया से कहने लगती है—)
सरला : माया !
[माया जागने पर भी सरला की बात का कुछ जवाब नहीं देती और आँखें मूँदे पड़ी रहती है। सरला फिर उसे पुकारती है, जाकर वही माया उससे बात करती है]
माया : क्यों, तुम्हें नींद नहीं आ रही है ? आँखों से प्रेम बाबू को निकाल दो, वरना, पलकें नहीं मुँद पायेंगी।
सरला · (माया का कान खींचते हुए) एक दिन तुझे ऐसी ठीक करूँगी कि याद रखेगी। आज कल बहुत कुछ बोलना सीख गई है।
माया : और क्या कहूँ ? क्यों सताती हो, नींद आ रही है।
सरला : खूब जानती हूँ, तुझे बड़ी नींद आ रही है। (स्नेह से) एक बार मेरी बात तो सुन ले, फिर जाकर सो जाना।
माया · क्या है ?
सरला · मैं सोच रही हूँ कि अब बाबूजी को हम कैसे बताएँ ?
माया · ओह् हो ! दीदी, मैंने पहले ही तुमसे कह दिया है न कि इस बात की चिन्ता तुम मुझ पर छोड़ दो ? मैं सब कुछ संभाल लूँगी।
सरला : मगर आज प्रेम कह रहा था कि उसके माता-पिता अब जल्दी ही बाबूजी से बात करने घर पर आना चाहते हैं।
अम्मी]

माया : (सोचकर) ठीक है। उनके आने से पहले मैं बाबूजी से बात कर लूँगी। तुम अब इसकी चिन्ता छोड़कर सो जाओ। (करवट बदल लेती है।)

□ □

[दूसरे दिन माया कालेज से कुछ देर से घर लौटती है। उसका चेहरा भी कुछ उतरा हुआ-सा नजर आता है।]

रधारी : क्या हुआ बेटी, आज कालेज से आने में बहुत देर कर दी ?

[माया गिरधारीलाल की बात का कुछ जवाब नहीं देती।]

सरला : (माया से) बाबूजी ने कुछ कहा, सुना नहीं क्या ?

माया : (तनिक गुस्से से) सुना।

रधारी : बेटी तबीयत तो ठीक है ?

माया : (भीगे स्वर में) पहले दीदी से कहिए कि यहां से अन्दर चली जाए। मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं।

रधारी : अरे, मगर बात क्या है बेटी ? दीदी कौन-सी पराई है !

माया : नहीं, मैं दीदी के सामने कुछ नहीं कहूंगी।

[सरला माया को आश्चर्य से देखने लगती है और फिर झट से बोल उठती है—]

सरला : अच्छा बाबा, अच्छा। अगर मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती तो अन्दर चली जाती हूं।

[सरला अन्दर चली जाती है और दोनों की बातें सुनने के लिए दरवाजे के पास खड़ी रह जाती है। माया कुछ गुस्से से गिरधारीलाल के पलंग पर बैठ जाती है।[

गिरधारी : बेटी, आज ये तुम्हें क्या हो गया है ! कुछ बताओ तो सही।

[माया का सिर सहलाने लगते हैं।)

माया : आज वह प्रेम बाबू मिले थे। उनसे झगड़ा हो गया।

थे बेटी ? फिर किस बात पर झगड़ा हो गया ?

[इसदागी

माया : [illegible] मिले थे। अचानक ही मुझे होटल में ले गए और खाने-पीने में बड़े मजाके लेकर कहने लगे कि तुम्हारे बाबूजी से तुम्हारी दीदी का हाथ माँगते हुए नहीं बनता तो तुम ही मेरी कुछ मदद कर दो न।

गिरधारी : (सोचते हुए) तुमने क्या जवाब दिया बेटी?

माया : (जल्दी से) मैंने साफ़ मना कर दिया कि हमारी दीदी किसी ऐसे-वैसे लड़के से शादी नहीं करेगी।

गिरधारी : बेटी प्रेम बाबू कोई ऐरे-गैरे नत्थू खैरे थोड़े न हैं। उन जैसे सज्जन आदमी से ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए था। (रुककर) बेटी, तुम इतनी बड़ी हो गई मगर नादान ही रहीं।

माया : (नाराज होती हुई) तो क्या प्रेम बाबू आकर दीदी का हाथ माँगते तो आप उन्हें 'हाँ' कह देते?

गिरधारी : बेटी, अगर तेरी दीदी इसमें राजी हो तो ये कौन-सी बुरी बात है।

माया : सच बाबूजी! (खुशी से पागल होकर गले लग पड़ती है) ओह, मेरे अच्छे बाबूजी!

गिरधारी : अरे बेटी, फिर ये क्या पागलपन है?

माया : बाबूजी, ये सब बातें तो मैंने आपसे यों ही झूठ कही हैं। हकीकत में तो प्रेम बाबू के माता-पिता ने दीदी को देख लिया है और वे दो-चार दिन में ही आपसे बात करने आने वाले हैं।

गिरधारी : (साश्चर्य) सच कह रही हो बेटी?

माया : हाँ बाबूजी। अगर यकीन नहीं आता तो दीदी से ही पूछ लीजिए न।

गिरधारी : (आँखों से खुशी के आँसू पोंछते हुए) आज मेरे सिर का कितना भारी बोझ तुमने यों ही हल्का कर दिया। आखिर मेरे भगवान ने आज मेरी पुकार सुन ली!

[माया दौड़कर अन्दर के कमरे में छुपकर सब कुछ सुन रही अपनी दीदी के गले में लग जाती है।]

स्वामी]

सरला : मैं तो आज तक यही सोचती थी कि मेरी पगली के दिमाग ही नहीं है। मगर आज पता चल रहा है कि तू समझदार है।

माया : बस-बस दीदी। सिर्फ 'मस्का-पॉलिश' से काम नहीं चलेगा, हाँ। हमें तो अपना कमीशन चाहिए कमीशन !

सरला : हाँ बाबा हाँ। कमीशन भी दे दूँगी, तनख्वाह तो मिलने दो।

गिरधारी : बेटी सरला !

सरला : जी, आई बाबूजी !

[सरला कुछ लज्जित होते हुए गिरधारीलाल के पास आती है। गिरधारीलाल उसे अपने पास बैठा लेते हैं। माया भी गिरधारीलाल के पास आकर बैठ जाती है।]

गिरधारी : (सरला से) बेटी, परसों ही तुम्हारी बुआजी की चिट्ठी आई है। उन्होंने वहाँ एक लड़का देख रखा है, उसके बारे में सब कुछ लिखा है। मैं सोच ही रहा था कि तुम्हें यह सब कैसे बताऊँ। चलो, मगर भगवान जो करता है सो ठीक ही करता है। (रुककर) बेटी, प्रेम बाबू के घर के सभी लोग इस रिश्ते के लिए राजी तो हैं ?

सरला : जी बाबूजी !

गिरधारी : तो बात करने के लिए मैं खुद ही उनके यहाँ चला जाऊँ।

सरला : बाबूजी, उन्हें आपकी हालत का पता है, सो वे खुद ही चलकर यहाँ आएँगे।

गिरधारी : ठीक है बेटी। तुम तो अब समझदार हो गई हो, जो कुछ भी करोगी, अपना अच्छा-बुरा सोचकर ही करोगी। (भावुक होकर) अगर तुम्हारी माँ आज जिन्दा होती तो तुम्हें इतनी तकलीफ न उठानी पड़ती। (गिरधारीलाल की आँखों में आँसू भर आते हैं।)

सरला : बाबूजी ! (गिरधारीलाल के गले से लगकर सिसक पड़ती है) आपने हमारे लिए क्या कुछ नहीं किया है बाबूजी !

गिरधारी : कैसी बात करती हो बेटी ! तुम लोगों के लिए ऐसा मैंने किया ही क्या है। बल्कि मैं तो अपनी फूल-सी बच्चियों पर कितना भारी बोझ बनकर पड़ा हूँ। भगवान ने भी न जाने ...

भर दो]   [गिरधारी

सरला : नहीं, नहीं, बाबूजी ऐसा मत कहिए।

माया : (जल्दी में) हाँ-हाँ, आपने हमारे लिए कुछ नहीं किया। अ अपने हाथों से सिर्फ हमें रोटी खिलानी ही बाकी रह गई है।

गिरधारी : (आँखों से आँसू पोंछते हुए) मैं तो तुम्हारा बाप हूँ न, तुम्हा लिए मैं वह भी कर सकता हूँ।

माया : (गले से लिपटकर) बाबूजी !

गिरधारी : पगली, अभी बच्ची की बच्ची ही रही।

सरला : बाबूजी !

गिरधारी : (सरला की ओर देखकर) बोलो बेटी।

सरला : प्रेम बाबू के माता-पिता जब रिश्ता माँगने आएँ, तब आप उ कहना कि मँगनी भले ही हो जाए, मगर दो साल तक अभी श शादी नहीं हो सकती।

गिरधारी : (आश्चर्य से) क्यों बेटी ?

सरला : जब तक माया की पढ़ाई पूरी न हो जाए, मैं इस घर से नहीं जा सकती।

[सरला की बात सुनकर माया की आँखों में आँसू उमड़ आते हैं।]

गिरधारी : मगर बेटी, ये बात वे लोग कैसे मानेंगे ? (रुककर) दो साल तो यों गुजर जाएँगे कि कुछ पता भी नहीं चलेगा। मैं अपनी लाडली को पढ़ाऊँगा। फिर उसके लिए भी कोई अच्छा सा वर ढूँढ निकालेंगे ताकि मैं चैन से इस दुनिया से जा सकूँ।

माया : नहीं, मैं आपसे कभी नहीं बोलूँगी। मैंने कितनी बार कहा कि मैं शादी नहीं करूँगी, नहीं करूँगी। आपके साथ ही रहूँगी। (अपना सिर गिरधारीलाल के कंधे पर रख देती है।)

गिरधारी : मेरी बेटी, इतनी बड़ी हो गई मगर अभी बचपना नहीं गया। (भीगे स्वर में) कुमुद ने मरते समय कहा था कि इस बच्ची को तो माँ का दूध भी नसीब नहीं हो रहा है। मेरी इस नन्ही बच्ची को सँभालकर रखना। (गिरधारीलाल की आँखों से आँसू टपकने लगते हैं।)

लगते हैं) आज अगर वह जिन्दा होती तो तुम्हें देखकर कितनी खुश होती !

[तीनों की आँखों से आँसू बह निकलते हैं। फिर सरला और माया उठकर खाना लगाने के लिये अन्दर चली जाती है।]

□ □

[आज गिरधारीलाल के घर की सफाई आम दिनों से कुछ बढ़कर है। सरला और माया भी घर में हैं। शाम के करीब छ बजने वाले हैं और सब को प्रेम और उसके माता-पिता के आने का इन्तजार है। इतने में गाड़ी का हार्न बजता है और एक शानदार गाड़ी घर के बाहर रुकती है। माया दौड़कर घर के दरवाजे तक आती है।]

माया : (पलटकर) बाबूजी, वे सब आ गए।

गिरधारी : (लाठी के सहारे दरवाजे तक आते हुए) आइए, आइए। हमारे परम सौभाग्य हैं कि आप चलकर हमारे यहाँ पधारे हैं !

जानकी : (घर में दाखिल होते हुए, हँसकर) माँगने वाले को झुकना ही पड़ता है साहब।

गिरधारी : ये आप क्या कह रहे हैं ! लड़की का बाप तो मैं हूँ। मुझे चलकर आपके यहाँ आना चाहिए था। लड़कियों ने बहुत देर से सब बताया, वरना मैं ही चला आता।

[सब बैठ जाते हैं। कुसुम घर में चारों ओर घूर-घूर कर देखने लगती है।]

जानकी : वह वक्त गया, वह बात गई। अब तो जमाना ही बदल गया है। चलिए इसी बहाने हम आपके यहाँ तो आए।

तो आपका [illegible] है कि आप ऐसी बातें कर रहे हैं।

[illegible] के गिलास लेकर आती है।]

[[illegible]

गिरधारी : जी ! गरीब के पास अपनी इज्जत के सिवा और क्या होता है ! फिर भी हम से जो कुछ भी होगा····

जानकी : ठीक है, ठीक है। आप इस बात की बिलकुल चिन्ता न करें। यह कोई बड़ी बात नहीं है।

कुसुम : (आत्मविश्वास से) अजी इस मामले में आप बीच में कुछ मत बोलिए। प्रेम हमारा इकलौता बेटा है। उसकी शादी हम ऐसे-वैसे नहीं कर सकते।

गिरधारी : (दुखी होकर) मगर सरला बेटी तो कह रही थी कि आपको हमारे घर की हालत का पूरा पता है। फिर आप तो खुद देख ही रही हैं कि

कुसुम : ठीक है। अगर आप कुछ नहीं दे सकते तो हम ही बहू का सब कुछ पहले खरीद देंगे। और आपको वह सब कुछ दहेज में दिखाना पड़ेगा। आपको यह मंजूर है ?

गिरधारी : जैसी आपकी मर्जी।

कुसुम : और हाँ, मेरे बेटे की शादी धूमधाम से ही होगी।

गिरधारी : जी !

माया : (सरला से) दीदी, तुम चाय नाश्ता लेकर जाओ न ! क्या सोच रही हो ?

सरला : नहीं, तू ही ले जा।

माया : ओह दीदी, मैं लेकर जाऊँगी तो अच्छा नहीं लगेगा। प्लीज, जाओ न ! क्यों इस तरह···

[कुसुम की बातें सुनकर सरला का दिल भर आता है। वह उमड़ते हुए आँसुओं को रोकने में असफल हो जाती है और रो पड़ती है।]

अच्छा बाबा अच्छा। मैं ही जाती हूँ।

[माया ट्रे लेकर बाहर के कमरे में आती है।]

गिरधारी : यह मेरी छोटी बेटी है, माया। इंटर में पढ़ती है।

[माया सबकी ओर देखकर मुस्कराती है। ट्रे को तिपाई पर रखकर, सब को चाय-नाश्ता देने लगती है।]

अब लो ! [illegible]

[एक दोपहर को प्रेम सरला को आफिस में फोन करता है]

सरला : हैलो !

प्रेम : पहचान लो कौन हो सकता है ?

सरला : (मुस्कराकर धीमे स्वर में) शायद वही चोर, जो हर पल दिल में बसा हुआ है।

प्रेम : मानते हैं तुम्हारे प्यार का।

सरला : तो क्या अब तक यकीन नहीं था ?

प्रेम : हमने आपसे ये कब कहा ! मगर सुना था कि मँगनी होते-होते प्यार आधा रह जाता है और शादी के बाद खत्म ! सोचा कहीं इस हिसाब से अब तुम्हारा प्यार आधा''''

सरला : (बात काटकर) अगर ऐसा ही जानते थे तो इन सब बातों की जल्दी क्या थी ? कुछ देर और

प्रेम : सॉरी मॅडम ! अपनी हार मानता हूँ।

सरला : सच ?

प्रेम : बिल्कुल ! दरअसल बात यह है कि आज शाम को तुम्हे घर आना होगा।

सरला : कोई खास बात है क्या ?

प्रेम : माँ ने गहनों के कुछ सेट मँगवाए हैं। तुम्हे पसंद करने है।

सरला : आपको तो पता है कि मुझे इसका कोई खास शौक नहीं है। फिर''''

प्रेम : खैर, अपने लिए न सही, हमारे लिए ही सही।

सरला : (रुककर) अच्छा ! आप यहाँ आएँगे या मैं ही चली जाऊँ ?

प्रेम : आज मुझे कुछ ज्यादा काम है। अगर बुरा न मानो तो तुम''''

सरला : ठीक है। मैं चली जाऊँगी।

प्रेम : यह तो बताओ कि सर्विस कब छोड़ रही हो ?

सरला : यह महीना खत्म होते ही।

प्रेम : क्या अब भी कुछ जमा करना बाकी रह गया है ?

सरला : अपने लिए नहीं।

प्रेम : अच्छा ! खैर फिर सही—बाय !

अंक दो]

[एक दोपहर को प्रेम सरला को आफिस मे फोन करता है]

सरला : हैलो !

प्रेम : पहचान लो कौन हो सकता है ?

सरला : (मुस्कराकर धीमे स्वर मे) शायद वही चोर, जो हर पल दिल मे बसा हुआ है।

प्रेम : मानते हैं तुम्हारे प्यार को।

सरला : तो क्या अब तक यकीन नही था ?

प्रेम : हमने आपसे ये कब कहा ! मगर सुना था कि मॅगनी होते-होते प्यार आधा रह जाता है और शादी के बाद खत्म ! सोचा कहीं उस हिसाब से अब तुम्हारा प्यार आधा····

सरला : (बात काटकर) अगर ऐसा ही जानते थे तो इन सब बातों की जल्दी क्या थी ? कुछ देर और ··

प्रेम : सॉरी मॅडम ! अपनी हार मानता हूँ।

सरला : सच ?

प्रेम : बिल्कुल ! दरअसल बात यह है कि आज शाम को तुम्हें घर आना होगा।

सरला : कोई खास बात है क्या ?

प्रेम : माँ ने गहनों के कुछ सेट मँगवाए हैं। तुम्हें पसद करने है।

सरला : आपको तो पता है कि मुझे इसका कोई खास शौक नही है। फिर ···

प्रेम : खैर, अपने लिए न सही, हमारे लिए ही सही।

सरला : (रुककर) अच्छा ! आप यहाँ आएँगे या मैं ही चली जाऊँ ?

प्रेम : आज मुझे कुछ ज्यादा काम है। अगर बुरा न मानो तो तुम····

सरला : ठीक है। मैं चली आऊँगी।

प्रेम : यह तो बताओ कि सर्विस कब छोड़ रही हो ?

सरला : यह महीना खत्म होते ही।

प्रेम : क्या अब भी कुछ जमा करना बाकी रह गया है ?

सरला : अपने लिए नहीं।

प्रेम : अच्छा ! खैर फिर सही—बाय !

बंद दो] [

जानकी : हाँ-हाँ, मोतीलालजी आप तो यही कहेंगे, वरना आपके गहने कैसे
बिकेंगे ! (सब हँस देते हैं) ।
[कुसुम को आते हुए देखकर) लो महारानीजी भी आ गई ।
[सरला कुसुम को नमस्ते करती है ।]

कुसुम : (सरला से) क्यों, बहूरानी को गहने पसन्द आए ?

सरला : जी ।

कुसुम : (व्यंग्यपूर्ण स्वर में) क्या पसन्द न आएँ पास में दयालु मगरुजो
जो बैठे हैं । उनके होते हुए कमी किस बात की हो सकती है ।

जानकी : भगवान, बस एक तुम्हारी कमी थी, सो अब पूरी हो गई ।

जौहरी : सेठजी, तो मैं चलूँ ?

जानकी : मोतीलालजी, आप बिल भिजवा दीजियेगा ।

जौहरी : (उठते हुए) जी, बहुत अच्छा । राम-राम जी ।

जानकी : राम-राम जी । (जौहरी चला जाता है)
(सरला से) क्यों बेटी, प्रेम नहीं आया ?

सरला : उनका फोन आया था । कह रहे थे कि उनसे कोई जरूरी
काम है ।

जानकी : काम तो वह क्या करता है, मैं जानता हूँ । उसे शुरू से ही इस
यहाँ वहाँ घूमने-फिरने की आदत है । मगर बेटी शादी के बाद
तुम उसे सँभाल कर रखना ।

कुसुम : क्यों मेरे बेटे की नाहक बुराई कर रहे हैं ।

जानकी मैं तो तुम्हारे बेटे का गुणगान गा रहा हूँ ।
[नौकर चाय-नाश्ता लेकर आता है । सब चाय नाश्ता लेते हैं ।]

सरला : अब मैं चलूँ ? अगर घर पहुँचने में ज्यादा देर हो जाएगी, तो
बाबूजी फिकर करने लगेंगे ।

जानकी : हाँ-हाँ बेटी, तुम चलो । मैं ड्राइवर को भेजता हूँ, तुम्हें घर छोड़
देगा ।

सरला : (उठते हुए) जी, मैं बस से चली जाऊँगी ।

जानकी : अरे बेटी, घर में इतनी गाड़ियाँ हैं, वे किस काम की हैं ।

□ □

सरला . बाय !

[सरला रिसीवर रखकर काम मे व्यस्त हो जाती है ।]

□ [

[शाम को आफिस से छूटकर सरला प्रेम के घर आती है। जानकीदास और जौहरी दीवानखाने मे हैं ।]

जानकी आओ बेटी आओ । कब से तुम्हारी ही राह देख रहे है ।

[सरला हाथ जोड़कर पहले जानकीदास और फिर जौहरी नमस्ते करती है । और जानकीदास के कहने पर उसके करीब हुए सोफे पर बैठ जाती है ।]

सरला (बैठते हुए) पिताजी आने मे थोडी देर हो गई ।

जानकी कोई बात नही बेटी ।

[जौहरी एक के बाद एक गहनो के सेट दिखाने लगता है ।]

अरे, क्या सोच मे डूब गई बेटी ! तुम्हे ही ये सब पसन्द करना है । (रुककर) क्या ये डिजाइनें ठीक नही है ?

सरला : (धीमे स्वर मे) जी, मुझे पसन्द है । मगर इतने सेटो की क्या जरूरत है ।

जानकी . (मुस्कराकर) बेटी, मैं तो ये समझता हूँ । मगर प्रेम की माँ की यही इच्छा है तो तुम इन्हे पसन्द कर लो । यह सब अमीरी की शान है बेटी । इसे तुम अभी नही समझोगी । जब बड़ी-बड़ी पार्टियो मे जाने लगोगी तब जाकर पता चलेगा कि वहाँ जेवरो की क्या कीमत होती हैं । वहाँ चर्चा इन्सानो की नही, उनके पहने हुए जेवरो की ही होती है ।

जौहरी : सेठजी बिल्कुल ठीक कह रहे हैं बेटी । एक जमाना था जब पूछ लोगो की होती थी । अब तो इन्सान की कोई ... नही

जानकी : हाँ-हाँ, मोतीलालजी आप तो यही कहेंगे, वरना आपके गहने कैसे बिकेंगे ! (सब हँस देते हैं)।
(कुसुम को आते हुए देखकर) लो महारानीजी भी आ गईं।
[सरला कुसुम को नमस्ते करती है।]

कुसुम : (सरला से) क्यों, बहूरानी को गहने पसन्द आए ?

सरला : जी।

कुसुम : (व्यंग्यपूर्ण स्वर में) क्या पसन्द न आएँ, पास में दयालु ससुरजी जो बैठे हैं। उनके होते हुए कमी किस बात की हो सकती है।

जानकी . भगवान, बस एक तुम्हारी कमी थी, सो अब पूरी हो गई।

जौहरी सेठजी, तो मैं चलूँ ?

जानकी · मोतीलालजी, आप बिल भिजवा दीजियेगा।

जौहरी : (उठते हुए) जी, बहुत अच्छा। राम-राम जी।

जानकी : राम-राम जी। (जौहरी चला जाता है)
(सरला से) क्यों बेटी, प्रेम नहीं आया ?

सरला : उनका फोन आया था। कह रहे थे कि उनको कोई जरूरी काम है।

जानकी : काम तो वह क्या करता है, मैं जानता हूँ। वैसे शुरू से ही उसे यहाँ वहाँ घूमने-फिरने की आदत है। मगर बेटी शादी के बाद तुम उसे सँभाल कर रखना।

कुसुम : क्यों मेरे बेटे की सामखाह बुराई कर रहे हैं।

जानकी · मैं तो तुम्हारे बेटे का गुणगान गा रहा हूँ।
[नौकर चाय-नाश्ता लेकर आता है। सब चाय नाश्ता लेते हैं।]

सरला : अब मैं चलूँ ? अगर घर पहुँचने में ज्यादा देर हो जाएगी, तो बाबूजी फिकर करने लगेंगे।

जानकी . हाँ-हाँ बेटी, तुम चलो। मैं ड्राइवर को भेजता हूँ, तुम्हें घर छोड़ देगा।

सरला : (उठते हुए) जी, मैं बस से चली जाऊँगी।

जानकी : अरे बेटी, घर में इतनी गाड़ियाँ हैं, वे किस काम की हैं।

□ □

अरे हो] [दस्तावेज़

गिरधारी : नहीं बेटी नहीं। भगवान् के लिए ऐसा न कहो, ऐसा न कहो। (आँखों से आँसू पोंछते हुए) अभी मैं जो तुम्हारे लिए जिन्दा हूँ। किसकी यह कहने की हिम्मत है कि मेरी बेटी किसी के सिर पर बोझ है? मेरी टाँग कट गई है, मगर अभी हाथ तो नहीं कटे। (सरला की पीठ सहलाने लगते हैं)

सरला : बाबूजी। (अपना सिर गिरधारीलाल के कंधे पर रख देती है।

गिरधारी : हाँ बेटी, जब तक मैं जिन्दा हूँ, तुम्हें कोई यह नहीं कह सकता कि तुम किसी पर बोझ बनी हुई हो।

[गिरधारीलाल, सरला और माया तीनों की आँखों से टप् टप् आँसू गिरने लगते हैं।]

□ □

[कुसुम गिरधारीलाल के घर जाने के लिए तैयार होकर बैठक-खाने में आती है। जानकीदास आराम से मोढ़े पर बैठकर अख-बार पढ़ रहे हैं। कुसुम आकर उनको इस हालत में देखकर कुछ गुस्से से पूछती है–]

कुसुम : आप अभी तक तैयार नहीं हुए?

जानकी : भगवान! मैंने तुमसे एक बार कह दिया कि जानकीदास अच्छे कामों के लिए साथ देता है, बुरे के लिए नहीं। तुम्हारे साथ यह रिश्ता जुड़वाने के लिए गया था। मगर तुमसे यह तो नहीं कहा था कि रिश्ता तुड़वाने भी मैं चलूँगा। अपने लड़के को ही साथ क्यों नहीं ले जाती?

कुसुम : हाँ हाँ, मुझे किसी की जरूरत नहीं है। मैं खुद ही चली जाऊँगी। मेरा बेटा एक भिखारी की अन्धी लड़की से शादी नहीं कर सकता।

जानकी : क्यों उनका सर्वनाश करने पर तुली हुई हो? आखिर क्या बिगाड़ा है उन्होंने तुम्हारा? अब भी कहता हूँ [illegible]।

[सरला ऑफिस जाने को तैयार होकर घर से निकलने लगी कि गिरधारीलाल उससे पूछ बैठते हैं–]

गिरधारी : बेटी, अभी तक तुम्हारा इस्तीफा मंजूर होकर नहीं आया ?

सरला बाबूजी, मैं आपसे बताना भूल गई कि कल ही हेड ऑफिस से मेरे रेजिग्नेशन पेपर्स साइन होकर आ गए हैं। इस पहली तारीख से मेरी छुट्टी हो जाएगी। फिर न जाने बिना काम किए दिन कैसे कटेंगे।

गिरधारी : बेटी, अब शादी के लिए ज्यादा दिन भी तो नहीं रह जाएंगे। और अभी तो तुम्हें बहुत से काम करने हैं।

[उसी दिन शाम को जब सरला ऑफिस से लौटकर घर आने लगती है तो ...

माया : तो क्या लेंगी आप, चाय या कॉफी ?

कुसुम : कुछ नहीं। मुझे जाने की जल्दी है। घर पर मेहमान ठहरे हुए हैं।

धारी : अब डाक्टरों का कहना है कि थोड़े ही दिनों में सरला बेटी का दुबारा ऑपरेशन करना पड़ेगा। फिर सरला बेटी भी देख सकने की उम्मीद है। तब तक तो शादी ...

कुसुम : शायद आपको कुछ पता नहीं। प्रेम ने मुझे सब कुछ बता दिया है। सरला का अब दुबारा कोई ऑपरेशन नहीं हो सकता। डॉक्टरों का कहना है कि यहां तो क्या, दुनिया के किसी भी कोने में जाकर दुबारा ऑपरेशन करवाने पर भी उसकी आँखों की रोशनी नहीं लौट सकती।

रधारी : नहीं-नहीं, ये आप क्या कह रही हैं ! यह सब झूठ है। यह बिल्कुल झूठ है। (उनकी आँखों में आँसू भर आते हैं)

कुसुम : यही सच है। प्रेम के लिए अब मैंने दूसरी लड़की पसन्द कर ली है।

रधारी . नहीं-नहीं, यह कैसे हो सकता है। मेरी बेटी की जिन्दगी तबाह हो जाएगी। हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ, आप ऐसा न कीजिए। भगवान् के लिए

सरला बाबूजी यह आपको क्या हो गया है ?

रधारी बेटी तुम चुप रहो मुझे बोलने दो। प्रेम बाबू की माँ हमारा घर उजड़ जाएगा हम गरीब की पगड़ी आपके पाँव में है। इसे यूँ न ...

कुसुम : (उठते हुए) हम क्या, अगर हमारी जगह आप भी होते तो क्या अन्धी को अपनी बहू बना लेते ? हमें यह रिश्ता हर्गिज मंजूर नहीं।

गिरधारी : (उठकर गिड़गिड़ाते हुए) नहीं-नहीं, भगवान् के लिए ऐसा न कीजिए।

[गिरधारीलाल कुसुम के हाथ जोड़ने लगते हैं लेकिन कुसुम झट से बाहर निकल जाती है और ड्राईवर को गाड़ी ले चलने को कहती है। गिरधारीलाल के घर में जैसे कि एक तूफान आकर चला जाता है।]

अंक दो]

३

[शाम के करीब पाँच बज रहे हैं। माया कॉलेज से घर लौट रही है। तभी सड़क पर उसके पीछे से एक कार आकर ब्रेक के साथ रुक जाती है। माया वहीं खड़ी रह जाती है।]

राजेश : (हँसकर) ये बात हुई न ! हमारी आँखें आगे से, पीछे से, ऊपर से, नीचे से, कहीं से भी धोखा नहीं खा सकतीं। (गाड़ी का दरवाजा खोलते हुए) आइए मायाजी, मैं आपको घर तक छोड़ दूँ।

माया : जी शुक्रिया मैं चली जाऊँगी। (वह चलने लगती है)

राजेश : (गाड़ी से उतरकर उसे रोकते हुए) अरे अरे ! आपकी मुस्कान कुछ फीकी-सी है। मायाजी, लगता है शायद आप मुझ से बहुत नाराज़ हैं ?

माया : जी नहीं।

गिरधारी . हे भगवान ! मेरी बेटी पर यह कैसा अन्याय हो रहा !
(बिलखकर) मुझे ये सब देखने से पहले क्यों नहीं उठा लि
(बच्चों की तरह रो उठते हैं ।)

माया बाबूजी, यह आप क्या कर रहे हैं ! देखिए तो, दीदी भी
हैं । छोड़िए न, जिनको किसी बात की तमीज़ न हो, ऐसे
रिश्ता रखकर क्या फायदा ?

गिरधारी · (कुछ क्षण बाद आँसू पोंछते हुए) हाँ बेटी ! अब तो हमारे
यही तसल्ली की बात है । भगवान भी न जाने कैसा है ! बच
ही तुम से माँ का सुख छीन लिया । मुझे लँगड़ा बना दिया।
और न जाने क्या बाकी रह गया है कि मेरे मासूम बच्चे
खुशियाँ छीनने पर तुला है ।

[गिरधारीलाल की आँखों से फिर आँसू बह निकलते हैं । म
अन्दर से पानी लाकर गिरधारीलाल और सरला को पिला
और सरला के पास जाकर बैठ जाती है । घर में एक भया
सन्नाटा छा जाता है ।]

□ [

राजेश : (तुरन्त) तो आपको डर लग रहा होगा कि कहीं आपको छोड़ने के बहाने मैं घर तक ही न चला आऊँ, है न ? सच-सच बताइए क्या बात है ?

माया : जी, ऐसी कोई बात नहीं है।

राजेश : फिर आइए न ! प्लीज।

[माया राजेश की बात टालने में असमर्थ होने से गाड़ी में बैठ जाती है। दोनों के बीच कुछ क्षण चुप्पी में कटते हैं। फिर यह देखकर कि राजेश कुछ सोच में डूब गया है, माया बोल उठती है—]

माया : आप कहीं मेरी बात का बुरा तो नहीं मान गए ?

राजेश : (मुस्कराकर माया की ओर देखते हुए) नो-नो, नॉट एट ऑल। आपने यह कैसे सोच लिया ? शायद आपको पता नहीं कि अगर दुनिया में बुरा न मानने वाले इन्सानों के बीच कोई कॉम्पिटीशन हो तो मेरा नम्बर फर्स्ट आ सकता है।

[माया राजेश की बात पर मुस्करानी है।]

मायाजी, घर में सब ठीक तो है ?

[माया कुछ जवाब नहीं देती और एकदम गम्भीर हो जाती है।]

आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया ? (उसकी ओर देखते हुए) अरे मायाजी, आपकी आँखों में आँसू ! आई एम सॉरी अगर मेरी बात से आपको कोई दुख पहुँचा है।

माया : (आँसुओं को पोंछते हुए) नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।

राजेश : जिन्दगी भी कैसी अजीब है ! देखिए न आज से कुछ दिन पहले आप, आपका घर मेरे लिए कुछ नहीं था। मगर जब से हमारी जान-पहचान हुई है, न जाने क्यों जाने-अनजाने ही बार-बार आप सबके ख्याल आते रहते हैं।

और दिमाग में तूफान उमड़ता है। उसका अपना ही प्रतिबिम्ब उसे पुकार उठता है—]

प्रतिबिम्ब : राजेश, गिरधारीलाल के सभी दुखों का कारण तुम हो।

राजेश : (चिल्लाकर) नहीं-नहीं, यह झूठ है ! यह झूठ है !

प्रतिबिम्ब : तो सच क्या है ? तुमने माया से यह क्या कहा कि उसके दुख के जिम्मेदार तुम खुद हो ?

[राजेश कुछ जवाब नहीं देता।]

बोलो, कुछ बोलते क्यों नहीं ? अगर तुम बेकसूर हो तो चुप क्यों हो ?

राजेश : (चीखकर) ओह यू शट् अप !

प्रतिबिम्ब : यू शट् अप। अपने दिल से पूछकर देखो कि गिरधारीलाल की हर मुसीबतों का कारण तुम हो या नहीं ? उसकी बरबादी का कारण तुम हो या नहीं ? (रुककर) राजेश, अगर तुम अपने आपको इन्सान कहलाते हो तो सिर्फ इन्सानियत की बातें करने से कुछ नहीं होगा। तुम्हें उसका बोझ उठाना होगा। तुम अपने आपको धोखा नहीं दे सकते। धोखा नहीं दे सकते।

राजेश : (हारकर) मगर यह सब कैसे हो सकता है ?

प्रतिबिम्ब यह तुम्हें सोचना होगा।

राजेश · ओह गॉड ! (बिना कपड़े बदले ही बिस्तर पर लेट जाता है।)

[शाम का वक्त है। सरला अकेली ही घर में है और पलंग पर लेटी हुई है। दरवाजे पर दस्तक होती है।]

राजेश : जी, मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

सरला : (पलंग पर से उठते हुए) कौन ?

राजेश : (शर्मिन्दा होकर) आपने शायद मुझे पहचाना नहीं। मैं राजेश हूँ।

सरला किशन के लिए बड़ा होगा ?

माया हाँ मैंने बहुत मना भी किया तो बुरा मानने लगे। और ——

सरला तुम बैठकर यहाँ तक चली आई !

माया (चौंककर) हाँ ! मगर तुम इस तरह क्यों बातें कर रही हो?

सरला आजकल आदमियों के लिए ऐसा अच्छा नहीं होता। वह [illegible] भूल न सकता।

गिरधारी अरे बेटी, राजन बाबू बेचारे सज्जन आदमी हैं। उनके लिए ऐसे क्यों बोल रही हो !

सरला (भर्राई आवाज़ में) दुनिया में सभी तो सज्जन हैं बापूजी। [illegible] हम ही नहीं हैं।

गिरधारी नहीं-नहीं बेटी ! दुनिया में सभी लोग एक-से नहीं होते। दुर्जनों के साथ कुछ सज्जन लोग भी तो हैं। इसी से तो इस दुनिया का व्यवहार चल रहा है। (माया की ओर देखते हुए) बेटी, राजन बाबू को घर आने के लिए कहती ?

माया उन्हें कोई जरूरी काम था। कहने लगे कि फिर कभी आऊँगा। वे घर का हाल पूछ रहे थे। और जब मैंने सब बताया तो बहुत दुःखी हो गए। मुझ से कहने लगे कि मैं तुम लोगों का गुनहगार हूँ। मैं ही तुम्हारे दुःख का जिम्मेदार हूँ। तुम्हें मेरी गाड़ी में नहीं बैठना चाहिए था। मैं भी शायद तुम्हारी जगह होता तो यही करता।

गिरधारी बेटी, सचमुच वे बहुत ही नेक और भले इन्सान हैं, वरना उन्हें किस बात की कमी है। वह भला क्यों हमारे लिए सोचने लगे।

□.□

और दिमाग में तूफान उमड़ता है। उसका अपना ही प्रतिबिम्ब उसे पुकार उठता है—]

प्रतिबिम्ब : राजेश, गिरधारीलाल के सभी दुखों का कारण तुम हो।

राजेश : (चिल्लाकर) नहीं-नहीं, यह झूठ है! यह झूठ है!

प्रतिबिम्ब : तो सच क्या है? तुमने माया से यह क्यों कहा कि उसके दुख के जिम्मेदार तुम खुद हो?

[राजेश कुछ जवाब नहीं देता।]

बोलो, कुछ बोलते क्यों नहीं? अगर तुम बेकसूर हो तो चुप क्यों हो?

राजेश : (चीखकर) ओह, यू शट् अप!

प्रतिबिम्ब : यू शट् अप। अपने दिल से पूछकर देखो कि गिरधारीलाल की हर मुसीबतों का कारण तुम हो या नहीं? उसकी बरबादी का कारण तुम हो या नहीं? (रुककर) राजेश, अगर तुम अपने आपको इन्सान कहलाते हो तो सिर्फ इन्सानियत की बातें करने से कुछ नहीं होगा। तुम्हें उसका बोझ उठाना होगा। तुम अपने आपको धोखा नहीं दे सकते। धोखा नहीं दे सकते।

राजेश : (हारकर) मगर यह सब कैसे हो सकता है?

प्रतिबिम्ब : यह तुम्हें सोचना होगा।

राजेश : ओह गॉड! (बिना कपड़े बदले ही बिस्तर पर लेट जाता है।)

□ □

[शाम का वक्त है। सरसा अकेली ही घर में है और पलंग पर लेटी हुई है। दरवाजे पर दस्तक होती है।]

राजेश : जी, मैं अन्दर आ सकता हूँ?

सरसा : (पलंग पर से उठते हुए) कौन?

राजेश : (दाखिल होकर) आपने शायद मुझे पहचाना नहीं। मैं राजेश हूँ।

सरला . लिफ्ट के लिए कहा होगा ?

माया हाँ, मैंने बहुत मना भी किया तो बुरा मानने लगे। और ......

सरला तुम बैठकर यहाँ तक चली आईं !

माया (चौंककर) हाँ ! मगर तुम इस तरह क्यों बातें कर रही हो

सरला अनजान आदमियों से लिफ्ट लेना अच्छा नहीं होता। आ ऐसी भूल न करना।

गिरधारी अरे बेटी राजेश बाबू बेचारे सज्जन आदमी हैं। उनके लिए ऐ क्यों बोल रही हो !

सरला · (भर्राई आवाज में) दुनिया में सभी तो सज्जन हैं बाबूजी। ए हम ही नहीं हैं।

गिरधारी नहीं-नहीं बेटी ! दुनिया में सभी लोग एक-से नहीं होते। दुर्ज के साथ कुछ सज्जन लोग भी तो हैं। इसी से तो इस दुनिया व्यवहार चल रहा है। (माया की ओर देखते हुए) बेटी, राजे बाबू को घर आने के लिए कहती ?

माया उन्हें कोई जरूरी काम था। कहने लगे कि फिर कभी आऊँगा। वे घर का हाल पूछ रहे थे। और जब मैंने सब बताया तो बहुत दुखी हो गए। मुझ से कहने लगे कि मैं तुम लोगों का गुनहगार हूँ। मैं ही तुम्हारे दुख का जिम्मेदार हूँ। तुम्हें मेरी गाड़ी में नहीं बैठना चाहिए था। मैं भी शायद तुम्हारी जगह होता तो यही करता।

गिरधारी . बेटी, सचमुच वे बहुत ही नेक और भले इन्सान हैं, वरना उन्हें किस बात की कमी है। वह भला क्यों हमारे लिए सोचने लगे।

□.□

और दिमाग में तूफान उमड़ता है। उसका अपना ही प्रतिबिम्ब उसे पुकार उठता है—]

प्रतिबिम्ब : राजेश, गिरधारीलाल के सभी दुखों का कारण तुम हो !

राजेश : (चिल्लाकर) नहीं-नहीं, यह झूठ है ! यह झूठ है !

प्रतिबिम्ब : तो सच क्या है ? तुमने माया से यह क्यों कहा कि उसके दुख के जिम्मेदार तुम खुद हो ?

[राजेश कुछ जवाब नहीं देता।]

बोलो, कुछ बोलते क्यों नहीं ? अगर तुम बेकसूर हो तो चुप क्यों हो ?

राजेश : (चीखकर) ओह, यू शट् अप !

प्रतिबिम्ब : यू शट् अप। अपने दिल से पूछकर देखो कि गिरधारीलाल की हर मुसीबत का कारण तुम हो या नहीं ? उसकी बरबादी का कारण तुम हो या नहीं ? (रुककर) राजेश, अगर तुम अपने आपको इन्सान कहलाते हो तो सिर्फ इन्सानियत की बातें करने से कुछ नहीं होगा। तुम्हें उसका बोझ उठाना होगा। तुम अपने आपको धोखा नहीं दे सकते। धोखा नहीं दे सकते।

राजेश : (हारकर) मगर यह सब कैसे हो सकता है ?

प्रतिबिम्ब : यह तुम्हें सोचना होगा।

राजेश : ओह गॉड ! (बिना कपड़े बदले ही बिस्तर पर लेट जाता है।)

□ □

[शाम का वक्त है। सरला अकेली ही घर में है और पलंग पर लेटी हुई है। दरवाज़े पर दस्तक होती है।]

राजेश : जी, मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

सरला : (पलंग पर से उठते हुए) कौन ?

राजेश : (दाखिल होकर) आपने शायद मुझे पहचाना नहीं। मैं राजेश हूँ।

सरला — लिफ्ट के लिए कहा होगा ?

माया — हाँ, मैंने बहुत मना भी किया तो बुरा मानने लगे। और.....

सरला — तुम बैठकर यहाँ तक चली आई !

माया — (चौंककर) हाँ ! मगर तुम इस तरह क्यों बातें कर रही हो

सरला — अनजान आदमियों से लिफ्ट लेना अच्छा नहीं होता। आइ ऐसी भूल न करना।

गिरधारी — अरे बेटी राजेश बाबू बेचारे सज्जन आदमी हैं। उनके लिए ऐ क्यों बोल रही हो !

सरला — (भर्राई आवाज में) दुनिया में सभी तो सज्जन हैं बाबूजी। प हम ही नहीं है।

गिरधारी — नहीं-नहीं बेटी ! दुनिया में सभी लोग एक-से नहीं होते। दुर्ज के साथ कुछ सज्जन लोग भी तो हैं। इसी से तो इस दुनिया क व्यवहार चल रहा है। (माया की ओर देखते हुए) बेटी, राजेश बाबू को घर आने के लिए कहती ?

माया — उन्हें कोई जरूरी काम था। कहने लगे कि फिर कभी आऊँगा। वे घर का हाल पूछ रहे थे। और जब मैंने सब बताया तो बहुत दुखी हो गए। मुझ से कहने लगे कि मैं तुम लोगों का गुनहगार हूँ। मैं ही तुम्हारे दुःख का जिम्मेदार हूँ। तुम्हें मेरी गाड़ी में नहीं बैठना चाहिए था। मैं भी शायद तुम्हारी जगह होता तो यही करता।

गिरधारी — बेटी, सचमुच वे बहुत ही नेक और भले इन्सान हैं, वरना उन्हें किस बात की कमी है। वह भला क्यों हमारे लिए सोचने लगे।

□.□

[माया की बात सुनकर राजेश के दिल को कहीं चैन नहीं पड़ता। वह खूब परेशान हो उठता है। रात को घर लौटकर जब वह अपने कमरे में दर्पण के सामने खड़ा हो जाता है तो उसके दिल में]

[दीवार

और दिमाग मे तूफान उमड़ता है। उसका अपना ही प्रतिबिम्ब उसे पुकार उठता है—]

प्रतिबिम्ब : राजेश, गिरधारीलाल के सभी दु:खों का कारण तुम हो !

राजेश : (चिल्लाकर) नहीं-नहीं, यह झूठ है ! यह झूठ है !

प्रतिबिम्ब : तो सच क्या है ? तुमने माया से यह क्यों कहा कि उसके दु:ख के जिम्मेदार तुम खुद हो ?

[राजेश कुछ जवाब नहीं देता ।]

बोलो, कुछ बोलते क्यों नहीं ? अगर तुम बेकसूर हो तो चुप क्यों हो ?

राजेश : (चीखकर) ओह, यू शट् अप !

प्रतिबिम्ब : यू शट् अप । अपने दिल से पूछकर देखो कि गिरधारीलाल की हर मुसीबतों का कारण तुम हो या नहीं ? उसकी बरबादी का कारण तुम हो या नहीं ? (रुककर) राजेश, अगर तुम अपने आपको इन्सान कहलाते हो तो सिर्फ इन्सानियत की बातें करने से कुछ नहीं होगा। तुम्हें उसका बोझ उठाना होगा। तुम अपने आपको धोखा नहीं दे सकते। धोखा नहीं दे सकते।

राजेश : (हारकर) मगर यह सब कैसे हो सकता है ?

प्रतिबिम्ब : यह तुम्हें सोचना होगा।

राजेश : ओह गॉड ! (बिना कपड़े बदले ही बिस्तर पर लेट जाता है।)

□ □

[शाम का वक्त है। सरला अकेली ही घर में है और पलग पर लेटी हुई है। दरवाजे पर दस्तक होती है।]

राजेश : जी, मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

सरला : (पलग पर से उठते हुए) कौन ?

राजेश : (दाखिल होकर) आपने शायद मुझे पहचाना नहीं। मैं राजेश हूँ।

और दिमाग में तूफान उमड़ता है। उसका अपना ही प्रतिबिम्ब उसे पुकार उठता है—]

प्रतिबिम्ब : राजेश, गिरधारीलाल के सभी दुखों का कारण तुम हो !

राजेश : (चिल्लाकर) नहीं-नहीं, यह झूठ है ! यह झूठ है !

प्रतिबिम्ब : तो सच क्या है ? तुमने माया से यह क्यों कहा कि उसके दुख के जिम्मेदार तुम खुद हो ?

[राजेश कुछ जवाब नहीं देता।]

बोलो, कुछ बोलते क्यों नहीं ? अगर तुम बेकसूर हो तो चुप क्यों हो ?

राजेश : (चीखकर) ओह, यू शट् अप !

प्रतिबिम्ब : यू शट् अप। अपने दिल से पूछकर देखो कि गिरधारीलाल की हर मुसीबतों का कारण तुम हो या नहीं ? उसकी बरबादी का कारण तुम हो या नहीं ? (रुककर) राजेश, अगर तुम अपने आपको इन्सान कहलाते हो तो सिर्फ इन्सानियत की बातें करने से कुछ नहीं होगा। तुम्हें उसका बोझ उठाना होगा। तुम अपने आपको धोखा नहीं दे सकते। धोखा नहीं दे सकते।

राजेश : (हारकर) मगर यह सब कैसे हो सकता है ?

प्रतिबिम्ब : यह तुम्हें सोचना होगा।

राजेश : ओह गॉड ! (बिना कपड़े बदले ही बिस्तर पर लेट जाता है।)

☐ ☐

[शाम का वक्त है। सरला अकेली ही घर में है और पलंग पर लेटी हुई है। दरवाजे पर दस्तक होती है।]

राजेश : जी, मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

सरला : (पलंग पर से उठते हुए) कौन ?

राजेश : (दाखिल होकर) आपने शायद मुझे पहचाना नहीं। मैं राजेश हूँ।

सरला : आइए।

राजेश : कैसी हैं आप ?

सरला : जी ठीक हूँ। बैठिए।

राजेश : (बैठते हुए) शुक्रिया। बाबूजी और मायाजी घर पर हैं क्या ?

सरला : बाहर गए हैं। अभी आते होंगे।

[उसी वक्त लाठी के सहारे गिरधारीलाल अन्दर आते हैं राजेश को देखकर बोल उठते हैं—]

गिरधारी : अरे, राजेश बाबू आप ! कब आए हैं ?

राजेश : बस यही, अभी-अभी। सरला जी से आप ही का जिक्र रहा था।

गिरधारी : क्या करूँ ! सोचा, कई दिनों से घर में बैठे-बैठे दम घुट रहा कुछ काम ही शुरू कर दूँ।

राजेश : कौन-सा काम ?

गिरधारी : मालिक से पुराना रिश्ता है। कुछ छोटा-मोटा लिखने का क मिल जाए तो वक्त भी गुजर जाएगा और थोड़ी बहुत आमद भी हो जाएगी।

राजेश : आप इस उम्र में क्यों इतनी तकलीफ उठा रहे हैं ?

गिरधारी : (तनिक मुस्कराकर) राजेश बाबू, आदमी तब तक अच्छा लगा है जब तक काम करे। मैं अभी कहाँ इतना बूढ़ा हो गया हूँ सोचता हूँ, थक जाऊँगा तो एक दिन अपने आप ही गिर जाऊँगा

[सरला अन्दर से दोनों के लिए पानी लेकर आती है।]

बेटी, थोड़ी-सी चाय बना दे।

सरला : जी, बाबूजी।

राजेश : आप सरलाजी को इस हालत में क्यों तकलीफ दे रहे हैं ! मैं अभी-अभी चाय पीकर आ रहा हूँ।

सरला : मैं चाय बना सकती हूँ। मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी।

गिरधारी : (मुस्कराते हुए) राजेश बाबू, आप आए हैं तो इस बहाने चाय के दो घूँट हम भी पी लेंगे। वरना इस उम्र में अब कोई ज्यादा एहमो की]

[दीवार

शौक तो रहा नहीं है।

राकेश : जैसी आपकी मरजी।

[सरला खाली गिलास लेकर वापस चली जाती है।]

परसों जब मायाजी ने घर का हाल सुनाया तो यह जानकर मुझे बड़ा दुख हुआ।

गिरधारी : भगवान् की मरजी के सामने किसी की क्या चलती है। न जाने कौन-से जन्म के पापों का फल अब मिल रहा है।

राकेश इस दुख में आप स्वयं को अकेला मत समझिए। अगर मुझे भी आपकी कुछ मदद करने का मौका देंगे तो मैं अपने आपको बहुत खुशनसीब समझूँगा।

गिरधारी . राकेश बाबू आप आकर हम गरीबों का हाल पूछ लेते हैं, इतना ही क्या कम है ! आपकी बातों से ही हमारा आधा दुख दूर हो जाता है।

राकेश : लगता है, आपने अभी तक मुझे माफ नहीं किया।

गिरधारी : नहीं, नहीं, राकेश बाबू ऐसा न कहिए। (अपनी आंख पोंछ लेते हैं)

[सरला अन्दर से चाय लेकर आती है। राकेश उठकर उसके हाथों से चाय के दोनों प्याले ले लेता है। और एक प्याला गिरधारीलाल के हाथ में देता है और एक खुद लेकर बैठ जाता है।]

राकेश . (चाय पीते हुए) मायाजी अब तक नहीं आईं ?

सरला आज से उनके इन्टर के युनिवर्सिटी एग्जाम्स शुरू हुए हैं। एग्जाम के बाद वहीं अपनी सहेलियों के साथ

राकेश : ओह-आई-सी ! पढ़ाई को छोड़े काफी दिन हो गए, अब इन बातों का ध्यान ही नहीं रहता।

[तभी माया घर में दाखिल होती है।]

माया : लो राकेश बाबू आए हैं ! कहिए, यों ही बिना कुछ बताए चाय पीने कैसे पहुँच गए ?

अब शेष]

[एकांकी शेष

से आना। एट योर सर्विस, सर!

राजेश : थैंक्यू डियर।

मनोज : अरे छोड़! सुन रिज्जी, एक बात याद आ गई। जस्ट ए मिनिट।

[उसी वक्त मेज पर पड़े दूसरे फोन की घण्टी बज उठती है। मनोज रिसीवर उठाता है।]

ऑपरेटर : सर, देअर इज ए इम्पॉर्टेण्ट कॉल। शैल आइ कनेक्ट इट?

मनोज : मिस यू, प्लीज होल्ड डाउन फोर सम टाइम। (रिसीवर रख देता है)

रिज्जी···

राजेश : किससे बात कर रहा था?

मनोज : ऑपरेटर थी। उस बेचारी को क्या पता था कि हम किस मूड में बात कर रहे हैं। अच्छा सुन, मैं कह रहा था कि परसों एक पार्टी में तेरी मम्मीजी मिल गई थीं। मुझे और तेरी भाभी से कह रही थीं कि किसी तरह तुझे शादी के लिए समझाएँ। भई क्यों

राजेश : यह बात फिर सही। मैं जल्दी में हूँ। कहीं बाहर जाना है। और कुछ?

मनोज : वरना तुम हम से बच के निकल सकते हो मगर अपनी भाभी से नहीं। वह तुम्हें घर पर याद कर रही है।

राजेश : ठीक है। वक्त मिलते ही मैं घर आ जाऊँगा। बाय!

[मनोज की ओर से बाई की आवाज सुनते ही राजेश रिसीवर रख देता है।]

□ □

[शाम के करीब छः बज रहे हैं। राजेश अपनी कार लेकर मनोज के बंगले पर आता है। मनोज अभी-अभी बाहर से घर लौटा है बस ठीक]

[एकाएक आज

और अपने बँगले के लॉन में बैठा अखबार पढ़ रहा है। मीना भी वहीं बैठकर चाय बना रही है।]

मनोज . (राजेश को आते देखकर) अरे मीना, देखो तो सही आज ये कैसे महाराजा हमारे यहाँ पधार रहे हैं।

राजेश · भाभी नमस्ते ! कैसी हो !

मीना · नमस्ते, आइए। जिस भाभी की खबर पूछने वाले आप जैसे देवर हों, उसे क्या तकलीफ हो सकती है।

राजेश . ये हुई न बात, भाभी ! (मनोज की ओर देखते हुए) देखा, कि भाव है हमारा ?

मनोज · अरे बैठ। कभी हमारा भी इससे बढ़कर भाव था। ये तो घर की मुर्गी दाल बराबर होती जा रही है।

[इस बात पर सब मुस्करा देते हैं। राजेश वहाँ पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ जाता है।]

मीना · (राजेश से) आपके लिए क्या बनाऊँ, चाय या कॉफी ?

राजेश : भाभी चाय ही सही। कॉफी की ज्यादा आदत नहीं। (मनोज से) डैडी-मम्मी घर पर नहीं हैं क्या ?

मनोज . अभी-अभी बाहर गए हैं। आजकल शोभा के मैरिज की बातें चल रही हैं।

राजेश . बढ़िया। शोभा कब आ रही है ?

मनोज . इन वेकेशन में घर नहीं आएगी। अपनी सहेलियों के साथ कश्मीर जा रही है।

राजेश आई सी !

राकेश : भाभी, क्या यह जरूरी है कि हर इन्सान शादी ही करे ? क्या बिना शादी किए इन्सान अपनी जिन्दगी नहीं गुजार सकता ?

मीरा : कितनी शक्कर ?

राकेश : एक चम्मच ।

मीरा : क्या बिना शक्कर की चाय नहीं पी सकते ?

राकेश : पी सकता हूँ ।

मीरा : (मुस्कराकर) मगर फीकी लगेगी । और इसकी शायद आपको आदत नहीं । वैसे बिना शादी किए जिन्दगी तो जी सकते हो मगर कभी जिन्दगी में कुछ कमी महसूस होगी । जिन्दगी फीकी-सी लगेगी । (चाय का कप देते हुए) जवानी के दिन तो इन्सान किसी भी तरह गुजार सकता है । लेकिन जब जवानी ढल जाती है तब जाकर उसे अकेलेपन का एहसास होने लगता है । उस समय अकेलापन खटकता है । बहुत बुरा लगता है । अकेलेपन का दर्द भी तो असीम होता है । (चाय का प्याला मनोज के हाथ में देती है और खुद भी लेती है) मगर इन्सान जब इन सब बातों को महसूस करने लगता है तब न ही वह बात रहती है, न वक्त । और बहुत-कुछ सोचने पर भी वह अपने लिए कुछ नहीं कर सकता ।

मनोज : (आश्चर्य से) मीरा डार्लिंग ये कहीं तुम्हारे पिछले जन्म का एक्सपीरियन्स तो नहीं है ?

मीरा : (मुस्कराते हुए) यह सब उमेश भइया के एक्सपीरियन्स की बातें कर रही हूँ ।

मनोज : ओह-आई-सी ! तो तुम्हारे कदम अब जाकर पड़ना रहे हैं ।

राकेश : (हँसकर) भाभी हर बात के लिए सबके अपने-अपने ख्याल होते हैं । और मगर इस पर मैं आपसे बहस नहीं करना चाहता ।

मनोज : अरे छोड़ो मीरा । तुम अभी हमारे मित्र को पूरी तरह नहीं जानती । कालिज में इस पट्ठे पर न जाने कितनी लड़कियाँ मरा करती थी । हमारे मुँह में तो पानी छूटने लगता था । मगर यह उन्हें देखकर कभी फिसला नहीं । और आखिर मोहब्बत का चक्कर मंडप जाकर ही थमा जाता ।

अंक तीन] [[illegible]

मे कोई शर्म नहीं आती कि डैडी, मीट हर, शी इज माई वाइफ ! और बाप भी क्या खुश होगा कि उसका बच्चा क्या माल उड़ा लाया है ! (राकेश और मीना खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं) सोचता हूँ, हमारे पोते यानी कि बेटे के बेटे क्या इश्क लड़ाएँगे क्या रोमांस करेंगे ! अहा, वाह वाह वाह ! मालो का ये जमाना आएगा कि बस पूछो ही मत ।

मीना : (मुस्कराते हुए) आपकी फिलासफी तो प्लेटो से भी दो कदम बढ़कर है । क्यों न इस पर कोई किताब लिख दें ? हो सकता है आपका नाम भी अमर ..."

मनोज : अरे डार्लिंग क्या प्लेटो-अरिस्टोटल की मौत बुलवाना चाहती हो ? अगर हमने कहीं गुस्से में आकर सचमुच कुछ लिख दिया, तो इन बेचारों के नाम ही मिट जाएँगे ।

राकेश : मानता हूँ दोस्त । आज तुमने भाभी को बहस में हरा दिया ।

मनोज : आओ फिर इसी बात पर एक-एक कप चाय और हो जाए ।

[मीना चाय बनाने लगती है ।]

राकेश : मुझे जाने में बहुत देर हो जाएगी ।

मनोज : अरे कुछ देर और हो जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता ।

राकेश : भाभी, यह तो बताओ कि आप दोनों घर कब आ रहे हैं ?

मीना : परसों तो मैं रामनगर जा रही हूँ । अब लौटकर ही आऊँगी ।

राकेश : (आश्चर्य से) राम नगर, याने मैके ! क्या भाभी कोई झगड़ा वगड़ा करके तो नहीं जा रही हो ?

मनोज : हाँ, ये झगड़ा करके ही जा रही हैं । और अब आते वक्त जरूर इसी अपने साथ एक छोटे मेहमान को भी लेती आयेंगी !

राकेश : (आश्चर्य) व्हाट यू मीन !

मनोज : यस डियर, आई मीन, ए जूनियर मनोज ।

राकेश : ओह ! कांग्रेचुलेशन्स ।

मनोज : थैंक्यू ।

राकेश : (मीना से) भाभी यह क्या बात है ।

[मीना लजा जाती है ।]

अब सीन]

[एकांकी -

[रात के ग्यारह बज रहे हैं। राजेश के कमरे
उठती है। राजेश, जो शराब पीते हुए बैठा है, उठकर दरवाजा खोलता है।]

राजेश : ओह सुरेन, इस वक्त ! आओ। (अन्दर चलकर बैठते हुए) कहो, तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है ?

सुरेन : जी नहीं लगता।

राजेश : क्यों ?

सुरेन : जब बड़े भाई की तबीयत को चैन न हो, छोटे भाई को कहाँ से चैन आ सकता है ?

राजेश : (पेग को खत्म करके मुस्कुराते हुए) सुरेन, तुम वाकई हिन्दुस्तानी भाई हो। कभी-कभी मैं बचपन में सुनी हुई राम-लक्ष्मण की बातों पर सोचा करता था, तो लगता था कि वह सब बकवास है। पर अब तुम्हें देखकर उन पर यकीन करने को दिल करता है।

सुरेन : भैया, तुम शराब पी रहे हो न ?

राजेश : (हँसकर) अभी तो शुरू ही की है। सिर्फ आधी बोतल हुई है।

सुरेन : दुनिया में कौन दुखी नहीं है ?

राजेश : हाँ ! अभी तो हैं। और अपनी-अपनी तरह से सब अपने गमों को मिटा लेते हैं, है न ?

सुरेन : मैं तुम्हारे दुख और कड़वाहट को जानता हूँ। परन्तु क्या उसका कोई रास्ता नहीं निकल सकता ? हमारी अनेक गलतियाँ माँ-बाप माफ कर देते हैं, तो क्या हम उनकी एक गलती भी माफ नहीं कर सकते ?

राजेश : सुरेन, मैं यह कब कहता हूँ कि मुझे किसी से कोई शिकायत है ? मैं चाहता तो कुछ दिन पहले लन्दन भी लौट सकता था। मगर मुझे जो कुर्बानी देनी चाहिए, वह मैंने दे दी है। अब और मुझ से क्या लेना है तुम सबों को ?

सुरेन : भैया, यह तुम नहीं, तुम्हारी शराब बोल रही है। वरना तुम महसूस करते कि एकाएक तुम्हारी इस उखड़ी हुई हालत को देखकर

माँ और पिताजी पर क्या गुजर रही है। घर में किसी को सुख नहीं है, कोई चैन नहीं है।

राजेश सुरेन मेरी समझ नहीं, मेरे दिल की आवाज यह सब कुछ बोल रही है। मैं तो आज भी वही हूँ जो पहले था। मैंने खुद तो अपनी यह हालत नहीं बनाई ? (रुककर) तुम्हीं बताओ, जो दुनिया मुझे अपने ढंग से सोचने नहीं देती, जीने नहीं देती, मरने नहीं देती, उस दुनिया के लिए मैं क्या कर सकता हूँ ? (चीखकर) बताओ, क्या कर सकता हूँ ?

सुरेन मैं तुम्हारी यह हालत नहीं देख सकता भैया ! बेहतर यही है कि तुम लन्दन वापस चले जाओ। तुम इस हालत में यहाँ नहीं रह सकते नहीं रह सकते। (उसकी आवाज भर्रा जाती है)

राजेश (पीठ थपथपाते हुए) नहीं दोस्त, बहुत देर हो चुकी है। वक्त का तीर जब एक बार हाथ से निकल जाए तो फिर उसे पकड़ नहीं सकते।

सुरेन (भीगे स्वर में) मैं तुम्हारे लिए और क्या कर सकता हूँ !

राजेश : तुम्हारी हमदर्दी ही मेरे दिल को राहत पहुँचाती है।

सुरेन भैया, कम-से-कम तुम मेरी खातिर, जल्दी-से-जल्दी अपने अतीत को भूल जाओ वरना इस घर का सुख-चैन हमेशा के लिए उड़ जाएगा।

राजेश : जिसकी जिन्दगी ही लुट गई हो, उसे सुख-चैन से क्या मतलब !

सुरेन . नहीं, तुम्हें जीना होगा, अपने लिए न सही, किसी और के लिए। मेरे लिए।

राजेश (सुरेन को गले से लगाते हुए) मैं कोशिश करूँगा। जरूर करूँगा।

□ □

[सुबह के आठ बज रहे हैं, राजेश अभी बिस्तर में ही है। पलग के करीब छोटी मेज पर शराब की खाली बोतल और गिलास पड़े हैं। नौकर दरवाजा खटखटाता है, लेकिन कोई जवाब नहीं मिलता दरवाजे को धक्का मारने ही वह खुल जाता है।]

दयाल : उठिए छोटे सरकार। आठ बज रहे हैं। बड़े सरकार तो नाश्ता करके मिल भी चले गए।

राजेश : हूँ ! कमबख्त घड़ी रुकती भी नहीं। (पलग पर उठ बैठता है।)

दयाल : (हँसते हुए) छोटे सरकार, यह उम्र ही कुछ ऐसी है, बेफिक्र और मस्त। (कमरे की सफाई करते हुए) आपकी उम्र में हम भी कभी यह शौक किया करते थे। लेकिन सरकार, इसकी आदत अच्छी नहीं।

राजेश : दयाल चाचा आदत कहाँ है ! कभी-कभी पी लेता हूँ।

दयाल : सरकार, जब जिम्मेदारियाँ सिर पर आ जाएँगी तो ठीक हो जाएगा।

राजेश : चाचा, ये जिम्मेदारियाँ हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

दयाल : (मुस्कराकर) कभी हम भी यही सोचा करते थे, सरकार। परन्तु ये जिम्मेदारियाँ तो रात भर में इन्सान के बालों को सफेद कर देती हैं।

राजेश : (उठते हुए) मान गए चाचा। सुबह ही सुबह क्या बात सुनाई है ! बस आप जरा जल्दी से मेरा नाश्ता लगवाइए। मैं अभी तैयार होकर आता हूँ।

दयाल : जी सरकार ! मालकिन ने भी अब तक नाश्ता नहीं किया शायद आपका ही इन्तजार कर रही है।

☐ ☐

[टेबल पर नाश्ता लगा हुआ है। राजेश तैयार होकर नाश्ता करने के लिए आता है। शारदा भी आकर बैठ जाती है।]

राजेश : (चिढ़कर) माँ, तुम नाश्ता कर लिया करो। मुझे कभी-कभी उठने में देरी हो जाती है।

शारदा : (हँसकर) अपना लाड़ला जब तक भूखा हो, माँ के गले से कौर कैसे उतर सकता है।

राजेश : ओह माँ, अब मैं इतना छोटा नहीं रहा। तुम मेरी इतनी फ़िक्र मत किया करो।

शारदा : अरे माँ के लिए तो अपने बच्चे, बच्चे ही रहते हैं, चाहे वे कितने ही बड़े क्यों न हो जाएँ।

दयाल : मालकिन ठीक कह रही हैं सरकार। इसीलिए तो माँ को दुनिया पूजती है। (कुछ क्षण चुप्पी में कटते हैं)

शारदा : बेटा, मैं और तुम्हारे पिताजी कुछ दिनों के लिए दिल्ली जाने की सोच रहे हैं।

राजेश : (लापरवाही से) ठीक है। एक अच्छा चेंज मिल जाएगा।

शारदा : (मुस्कराकर) लेकिन बेटे, इस घर को कौन सँभालेगा?

राजेश : दयाल चाचा जो हैं।

दयाल : (हँसकर) सरकार मैं तो हूँ ही। लेकिन मालकिन अब घर में छोटी मालकिन लाने के लिए कह रही हैं।

राजेश : दयाल चाचा, ये घर छोटी मालकिन के बिना भी तो चल सकता है।

[राजेश नाश्ता खत्म करके उदास होता हुआ चला जाता है।]

शारदा : (निराश होकर) भगवान् जाने मेरे बेटे का गुस्सा कब उतरेगा!

दयाल : मालकिन, भगवान सब ठीक कर देगा। आप क्यों इतनी चिन्ता करती हैं।

शारदा : (भर्राए स्वर में) मैं अपने बेटे को जानती हूँ। बड़ा ज़िद्दी है वह। अपनी की हुई बात कभी नहीं छोड़ेगा।

गिरधारी : अच्छा तो चलो (जाते हुए सरला से) बेटी, संभलकर रहना ।

सरला : जी बाबूजी !

☐ ☐

[राजेश माया और गिरधारीलाल को अपनी कार में लेकर चल देता है । थोड़ी दूर पहुँचने पर गिरधारीलाल रास्ते में उतर जाते हैं । राजेश और माया मनोज के आफिस में आते हैं ।]

राजेश : (रिसेप्शनिस्ट से) मिस, आई वॉण्ट टु सी मिस्टर मनोज जवेरी । (उसे अपना विजिटिंग कार्ड देता है)

रिसेप्श० : (डिक्टाफोन पर बात करते हुए मनोज से) सर, मिस्टर राजेश कोठारी वॉण्ट्स टु सी यू ।

मनोज : सिस, सेण्ड हिम इन ।

रिसेप्श० : यस सर । (राजेश की ओर देखकर) यू कैन सी हिम सर ।

राजेश थैंक्यू ।

[राजेश और माया मनोज के केबिन में दाखिल होते हैं ।]

मनोज : (उठकर) आइए, आइए जनाब ।

राजेश ये हैं मिस मायाजी । (माया से) और मेरे अजीज दोस्त मनोज कुमार । (मुस्कराकर) फिल्म वाले नहीं ।

[माया राजेश की बात पर मुस्करा देती है ।]

माया : (मनोज से) नमस्ते !

मनोज . नमस्ते ! बैठिए । (राजेश से) अरे, तुझे भी इनके लिए कहना पड़ेगा क्या ! (सब बैठ जाते हैं)

(डिक्टाफोन पर रिसेप्शनिस्ट से) मिस, प्लीज सेण्ड इन वाटर एण्ड फोर कोल्ड ड्रिंक्स ।

राजेश अरे दोस्त इसकी बिलकुल इच्छा नहीं है ।

मनोज : तो तुझे पूछ भी कौन रहा है ? ये तो मायाजी यहाँ पहली ही बार आई हैं, उनकी खातिर हो रही है ।

अब तीन] [शको

डीसा : थैंक्यू सर। जस्ट कमिंग।

[मिसेज डीसा केबिन में प्रवेश करती है।]

डीसा : (राजेश से) गुड मार्निंग सर।

राजेश : गुड मार्निंग मिसेज डीसा। हाउ डू यू डू।

डीसा : वेरि काइण्ड आफ यू सर। आई एम जस्ट फाइन।

मनोज : मिसेज डीसा।

डीसा : यस सर।

मनोज : मीट योर न्यू असिस्टेंट मिस माया आफ हूम आइ टोल्ड यू यस्टरडे।

डीसा : ओह, वेरी नाइस सर। (माया की ओर देखकर हाथ बढ़ाते हुए) वेरी ग्लेड टू मीट यू।

माया : (मुस्कराकर) थैंक्यू। सो एम आई।

मनोज : प्लीज हैव योर सीट, मिसेज डीसा।

डीसा . (बैठते हुए) थैंक्यू सर।

मनोज . शी विल जॉइन यू फ्रॉम टुमॉरो ऑनवर्ड्ज। होप देअर इज नो ऑब्जेक्शन ?

डीसा . (हँसते हुए) नो सर, नॉट एट ऑल। इट विल बी ए ग्रेट प्लेजर सर।

मनोज · (ड्रिंक्स की ओर इशारा करते हुए) प्लीज हेल्प योर सेल्व्ज। (सब ड्रिंक्स पीने लगते हैं)
(माया से) मायाजी, हमारे वर्किंग आवर्स सुबह दस से पाँच बजे तक हैं। (मुस्कराकर) मगर वैसे सुबह ऑफिस पहुँचने में सेक्रेटरी के सिवा किसी की घड़ी ठीक नहीं चलती। एम आइ राइट, मिसेज डीसा ?

डीसा : नो सर, दीज डेज यू आर क्वाइट पन्क्चुअल।
(सब हँस देते हैं)

मनोज : मिसेज डीसा, जब आदमी की नई-नई शादी होती है तो कुछ दिन के लिए सब इर्रेगुलर हो जाता है। मगर शादी जब पुरानी पड़ जाती है, तो फिर से धीरे-धीरे वही रूटीन आ जाता है। अगेन

[माया के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान फैल जाती है ।]

राजेश : (माया से) ये मेरा पुराना दोस्त है, वैसे दुश्मन ज्यादा ।

मनोज : दुश्मन ही नहीं, हमारे नाम से भी तुम्हें मोहब्बत है ।

[नौकर पानी लेकर आता है और फिर खाली गिलास लेकर वापस चला जाता है ।]

मनोज : (माया से) मायाजी आप ड्यूटी कब से ज्वाइन कर सकती हैं ?

माया : जी, आप जब से कहें ।

मनोज : नाइस । वैसे आजकल हमारी सेक्रेटरी पर काम का बोझ भारी है कि वी नीड ए पर्सन वेरि मच टु असिस्ट हर । आपके बारे में राजेश ने मुझे पहले ही सब कुछ बताया है । काम के बारे में आप बिल्कुल चिन्ता न करें । हमारी सेक्रेटरी मिसेज डीसा बहुत ही हार्डवर्किंग लेडी हैं । वह आपको धीरे-धीरे काम सिखा देंगी ।

माया : थैंक्यू सर ।

मनोज : तो आप कल से ड्यूटी ज्वाइन कर लें तो अच्छा होगा ।

माया : जी ।

मनोज : आपकी तनख्वाह चार सौ से शुरू होगी, इसके लिए आपको कोई एतराज तो नहीं ?

माया : जी नहीं । थैंक्यू वेरी मच सर ।

मनोज : (मुस्कराकर) हाँ मायाजी, और एक बात आपने ठीक याद दिलाई । वैसे आफिस में आप मुझे औरों की तरह सर-बास जो चाहे कह सकती हैं, पर आफिस से बाहर मुझे अपना भाई या दोस्त समझें । आई मीन, आई एम देअर इन आल द वे टु हेल्प ।

माया : जी, शुक्रिया !

[नौकर कोल्ड ड्रिंक्स लेकर आता है और टेबल पर रखकर चला जाता है ।]

मनोज : (डिक्टाफोन पर मिसेज डीसा से) मिसेज डीसा !

डीसा : यस सर ।

मनोज : प्लीज कम टु गिव अस कम्पनी फार कोल्ड ड्रिंक्स ।

माया : रोज आप किस वक्त मिल जाते हैं ?

राजेश : यही, कोई नौ बजे तक पहुँच जाता हूँ। मगर कभी-कभी देर भी हो जाती है ।

माया : देर से पहुँचने पर ...

राजेश : (मुस्कराते हुए) अगर नहीं भी गया तो कोई फर्क नहीं पड़ता किसी के जाने न जाने से कब दुनिया रुकती है ।

माया : आज तो आपको मेरी वजह से ही इतनी देर हुई है ।

राजेश : हर बात के लिए कोई न कोई तो निमित्त बनता ही है । चलिए अपना मुकाम आ गया ।

[राजेश मिल के कम्पाउण्ड में अपनी कार खड़ी कर देता है । फिर माया को लेकर अपने केबिन मे आता है ।]

राजेश : (प्रवेश करके) बैठिए । यही मेरा जेलखाना है ।

माया : (बैठते हुए आश्चर्य से) क्यों ?

राजेश : (हँसकर) देखिए न, जितनी देर यहाँ बैठता हूँ, सिर्फ वही करता हूँ जो इस कुर्सी की हैसियत से कर सकता हूँ। अपनी मर्जी से कुछ नहीं करता। (रुककर) कहिए, क्या पीयेंगी आप—ठंडा या गरम ?

माया : जी कुछ नहीं। अभी तो पीकर आए हैं।

राजेश : यह कैसे हो सकता है ?

माया : आप तो खुद तकल्लुफ को नहीं मानते फिर....

राजेश : चलिए आपकी बात मान ली। (रुककर) तो अब आप ऐसा कीजिए कि मेरी सेक्रेटरी के साथ हमारे मिल का स्टोर डिपार्टमेण्ट देख आइए, तब तक मैं कुछ इम्पॉर्टेण्ट पेपर्स हैं, उन्हें देख लेता हूँ। होप यू वोन्ट माइण्ड दिस ?

माया : जी नहीं।

राजेश : (डिक्टाफोन पर अपनी सेक्रेटरी से) मिस व्यास !

व्यास : गुड मार्निंग सर !

राजेश : गुड मार्निंग टु यू। प्लीज कम इन।

व्यास : कमिंग सर।

[सेक्रेटरी केबिन में दाखिल होती है।]

[illegible]

[illegible]

डोरा (हँसकर) यू आर [illegible] सर। (फिर सब हँसते हैं)
[illegible] ?

मनोज (मुस्कराकर) [illegible] मिसेज़ डोरा, [illegible]
[illegible]
[illegible]।

राजेश (मुस्कराते हुए) [illegible] मिसेज़ डोरा। (मनोज से) अब तो हम चलें, मुझे देर हो रही है।
[राजेश और माया दोनों ही उठ खड़े होते हैं]
(मिसेज़ डोरा से) मिसेज़ डोरा [illegible]।

डोरा थैंकू सर।

मनोज (उठकर) मायाजी, तो फिर आप कल से ही आ रही हैं न?

माया जी। नमस्ते! (मिसेज़ डोरा से) थैंकू मैडम।

डोरा : [illegible]।

□ □

[राजेश और माया बाहर निकलकर कार के पास आते हैं।]

राजेश : अगर आपको लौटने की जल्दी न हो तो मेरे साथ मिल पर चलिए थोड़ी देर बाद खाने के वक्त हम साथ ही लौट चलेंगे।

माया : मुझे कुछ खास जल्दी नहीं है, मगर मेरे चलने से शायद आपका वक्त बिगड़ेगा। मैं यहीं से घर चली जाऊँगी।

राजेश : जैसी आपकी मर्ज़ी। वैसे मैं तो इसलिए कह रहा था कि न जाने फिर कब ऐसा मौका मिले कि आप हमारी मिल देखने आएँ!

माया : (मुस्कराते हुए) तो चलिए मैं [illegible] चलती हूँ।

माया : रोज आप किस वक्त मिल जाते हैं ?
राजेश : यही, कोई नौ बजे तक पहुँच जाता हूँ। मगर कभी-कभी देर भी हो जाती है।
माया : देर से पहुँचने पर....
राजेश : (मुस्कराते हुए) अगर नहीं भी गया तो कोई फर्क नहीं पड़ता किसी के आने न आने से कब दुनिया रुकती है।
माया : आज तो आपको मेरी वजह से ही इतनी देर हुई है।
राजेश : हर बात के लिए कोई न कोई तो निमित्त बनता ही है। चलिए, अपना मुकाम आ गया।

[राजेश मिल के कम्पाउण्ड में अपनी कार खड़ी कर देता है। फिर माया को लेकर अपने केबिन में आता है।]

राजेश : (प्रवेश करके) बैठिए। यही मेरा जेलखाना है।
माया : (बैठते हुए आश्चर्य से) क्यों ?
राजेश : (हँसकर) देखिए न, जितनी देर यहाँ बैठता हूँ, सिर्फ वही करता हूँ जो इस कुर्सी की हैसियत से कर सकता हूँ। अपनी मर्जी से कुछ नहीं करता। (रुककर) कहिए, क्या पीयेंगी आप—ठंडा या गरम ?
माया : जी कुछ नहीं। अभी तो पीकर आए हैं।
राजेश : यह कैसे हो सकता है ?
माया : आप तो खुद तकल्लुफ को नहीं मानते फिर....
राजेश : चलिए आपकी बात मान ली। (रुककर) तो अब आप ऐसा कीजिए कि मेरी सेक्रेटरी के साथ हमारे मिल का स्टोर डिपार्टमेण्ट देख आइए, तब तक मैं कुछ इम्पॉर्टेण्ट पेपर्स हैं, उन्हें देख लेता हूँ। होप यू डोन्ट माइण्ड दिस ?
माया : जी नहीं।
राजेश : (डिक्टाफोन पर अपनी सेक्रेटरी से) मिस व्यास !
व्यास : गुड मार्निंग सर !
राजेश : गुड मार्निंग टु यू। प्लीज कम इन।
व्यास : कमिंग सर।

[सेक्रेटरी केबिन में दाखिल होती है।]

ब्लैक आउट]

राजेश : (मिस व्यास से) ये हैं मिस मायाजी, हमारी मेहमान-और (माया की ओर घूमकर) मिस स्मिता व्यास।

व्यास : प्लीज्ड टु मीट यू मेडम।

माया : आई टू!

राजेश : आप इन्हें ले जाकर हमारा स्टोर्स डिपार्टमेंट दिखलाइए, तब तक मैं सब पेपर्स साइन कर देता हूँ। फिर मुझे जाना है।

व्यास : यस सर! (माया से) आइए। (दोनों चली जाती हैं)

[राजेश मनोज को फोन करता है।]

राजेश : मैं राजेश बोल रहा हूँ।

मनोज : कहो, जाते जाते रास्ते में कोई और तकलीफ तो नहीं आ पड़ी?

राजेश : (मुस्कराकर) नहीं यार। सोचा, तुम्हारा शुक्रिया अदा कर दूँ और साथ-साथ कॉनग्रेच्युलेशन्स भी दे दूँ।

मनोज : किस बात के लिए?

राजेश : शुक्रिया माया की नौकरी के लिए और कॉग्रेच्युलेशन्स जो ग्रेट ऐक्टिंग आज तुमने की उसके लिए।

मनोज : शुक्रिया की बात तो छोड़। ये बात कि हमारी ऐक्टिंग के लिए हमें गुरु मानना है या नहीं?

राजेश : आज तक तो नहीं मानता था, मगर अब मानना पड़ेगा।

मनोज : ये बात हुई न! बच्चू, तुमने तो बस यही समझ रखा है कि दुनिया में एक तुम्हीं समझदारी का ठेका लिए बैठे हो।

राजेश : तुम्हें यह गलतफहमी कैसे हुई?

मनोज : तो ठीक है। आइन्दा हमारा नाम भी याद रखना, भूलना मत, हाँ!

राजेश : दोस्त मैं तो यह सोच रहा था कि तुम्हें अगर कहीं फिल्म में काम मिल जाता तो तुम एक काफी अच्छे "

मनोज : बस-बस रहने दे। मुझे कहाँ मालूम है कि कितने प्रोड्यूसर्स हमारे पीछे पड़े हुए हैं। यहाँ फुरसत ही किसको है। और कुछ सुना?

राजेश : डियर, नथिंग स्पेशल। फिर मिलेंगे, बाय!

मनोज : बाय!

[illegible] जाते हैं। माया घूमकर

केबिन में वापस आती है। राजेश भी ऑफिस का काम खत्म करके घर लौटने को तैयार हो जाता है।]

राजेश : घूम आईं आप ?

माया : जी हाँ।

राजेश : कैसा लगा हमारा स्टोर्स ?

माया : रिअली वन्डरफुल !

राजेश : सच ?

माया : जी

राजेश : चलिए, मेरा भी काम खत्म हो गया, हम चलें।

माया : मुझे जल्दी नहीं है, अगर आपको और बैठना हो।

राजेश : (उठते हुए) यहाँ की चहार दीवारी, कभी-कभी यूँ लगता है, कि खाने को दौड़ती है। चलिए, यहाँ से निकल चलें। (दोनों हँसते हुए केबिन से बाहर निकल आते हैं)

[राजेश और माया गाड़ी में बैठते हैं। राजेश गाड़ी स्टार्ट करता है।]

माया : राजेश बाबू आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ।

राजेश : (मुस्कराते हुए) कहिए, मैं कभी किसी बात का बुरा नहीं मानता, यह तो आपसे पहले भी कह चुका हूँ।

माया : आप मुझे आप क्यों पुकारते हैं ? अच्छा नहीं लगता आप मुझसे बड़े हैं। अगर आपको एतराज न हो तो मुझे तुम कहिएगा।

राजेश : मायाजी आप और तुम का सम्बन्ध छोटों-बड़ों से नहीं, अपनेपन से है। वैसे ये अधिकार इतनी जल्दी सबको हासिल नहीं होते।

माया : क्या आप बिना किसी अपनेपन को महसूस किए हमारे लिए यह सब-कुछ कर रहे हैं ?

राजेश : नहीं मायाजी, ऐसी बात तो नहीं है। यह जिन्दगी भी कुछ अजीब-सी है।

माया : क्यों ?

राजेश : न जाने हम यहाँ कितने इन्सानों से मिलते हैं, कइयों को हम अपना बनाना चाहते हैं, अपने महसूस करने लगते हैं, और फिर भी न

बैक तीन] [...

राजेश : (मिस व्यास से) ये हैं मिस मायाजी, हमारी मेहमान और (म
की ओर घूमकर) मिस स्मिता व्यास ।

व्यास : प्लीज्ड टु मीट यू मेडम ।

माया : आई टू !

राजेश : आप इन्हें ले जाकर हमारा स्टोर्स डिपार्टमेंट दिखलाइए, तब
मैं सब पेपर्स साइन कर देता हूँ । फिर मुझे जाना है ।

व्यास : यस सर ! (माया से) आइए । (दोनों चली जाती हैं)
[राजेश मनोज को फोन करता है ।]

राजेश : मैं राजेश बोल रहा हूँ ।

मनोज : कहो, जाते जाते रास्ते में कोई और तकलीफ तो नहीं आ पड़ी

राजेश : (मुस्कराकर) नहीं यार । सोचा, तुम्हारा शुक्रिया अदा कर
और साथ-साथ कॉनग्रेच्युलेशन्स भी दे दूँ ।

मनोज : किस बात के लिए ?

राजेश : शुक्रिया माया की नौकरी के लिए और कॉग्रेच्युलेशन्स जो श
एँक्टिंग आज तुमने की उसके लिए ।

मनोज : शुक्रिया की बात तो छोड़ । ये बात कि हमारी एँक्टिंग के लि
हमें गुरु मानता है या नहीं ?

राजेश : आज तक तो नहीं मानता था, मगर अब मानना पड़ेगा ।

मनोज : ये बात हुई न ! बच्चू, तुमने तो बस यही समझ रखा है कि दुनि
में एक तुम्हीं समझदारी का ठेका लिए बैठे हो । ।

राजेश : तुम्हें यह गलतफहमी कैसे हुई ?

मनोज : तो ठीक है । आइन्दा हमारा नाम भी याद रखना, भूलना मत,हाँ

राजेश : दोस्त मैं तो यह सोच रहा था कि तुम्हें अगर कहीं फिल्म में का
मिल जाता तो तुम एक काफी अच्छे ·

मनोज : बस-बस रहने दे । तुझे नहीं मालूम है कि कितने प्रोड्यूसर्स हमा
पीछे पड़े हुए हैं । यहाँ फुरसत ही किसको है । और कुछ सुना ?

राजेश : डियर, नथिंग स्पेशल । फिर मिलेंगे, बाय !

मनोज : बाय !

[द

एक

सरला : (आंसू पोंछती हुई) सोचती हूँ भगवान् ने मुझे यह कैसी सजा दी है। माँ ने जाते वक्त तुझे मेरे हाथों में सौंपा था। कैसी बद-नसीब हूँ, माँ को दिया हुआ वचन भी पूरा नहीं कर सकती। आज मेरी फूल-सी कोमल बहन को इस दुनिया की ठोकरें खाने की नौबत आ गई।

माया : दीदी, आज तक तुमने मेरे लिए क्या कुछ नहीं किया ? खुद भूखे रहकर भी तो मुझे खिलाया है। तुम्हारे लाड प्यार में मैंने कब माँ की कमी महसूस की है ? और अब तुम्हारी इस हालत में क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकती ? क्या मैं इतनी छोटी रह गई हूँ ?

सरला : (उसे अपने सीने से भींच लेती है) अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है ? इस दुनिया के लिए तुम अनजान हो, नासमझ हो। अभी दुनिया के लोगों को तुम नहीं समझ सकोगी। तुम्हें नहीं पता कि ये दुनिया के लोग कितने जालिम हैं। ये सूरत से जितने अच्छे दिखाई पड़ते हैं, उतने ही अन्दर से कातिल होते हैं। इनका कोई भी कदम अपने मकसद के बिना आगे नहीं उठता। (रुककर) माया, तुम अपने आप को संभाल कर रखना। न जाने लोग तुम्हें बहकाने के लिए कैसी-कैसी बातें करेंगे, मगर इन सबसे बचकर रहना। इनके मुँह में कुछ और होता है, मन में कुछ और।

माया : दीदी, ये सब कहीं राजेश बाबू के लिए तो नहीं कह रही हो ?

सरला : (धीमे स्वर में) कोई भी हो सकता है, ईश्वर ही जानता है।

माया : नहीं दीदी, अगर तुम राजेश बाबू के लिए कह रही हो तो यह तुम्हारी भूल है। उनके विचार साधारण आदमियों जैसे नहीं हैं। उनके लिए ऐसा सोचना भी पाप है। (भावुक होकर) आज वे मुझसे जुदा हो रहे थे तो कहने लगे कि सरलाजी का ध्यान रखना। उन्हें उदास न होने देना। जानती हो, उनकी आवाज में कितना दर्द था ! ऐसा दर्द कभी किसी धोखेबाज इन्सान के दिल में पैदा नहीं हो सकता। तुम्हीं बताओ दीदी, उनके पास किस बात की कमी है ? दुनिया में पैसे बिखेरने पर क्या नहीं मिलता ? आखिर,

अंक तीन] [एकमौ

माया : बहुत ही अच्छे। और हमारे बॉस तो राजेश बाबू से भी अच्छे हैं।

गिरधारी बेटी यह क्या कह रही हो ! ऐसा नहीं कहते।

माया हाँ बाबूजी, हमारे बॉस बहुत ही दिलचस्प और उदार आदमी हैं। मुझसे कहते हैं कि मायाजी आप मुझे ऑफिस में 'सर' या 'बॉस' कुछ भी कहें, मगर ऑफिस के बाहर आपकी हर मुश्किल के लिए मुझे अपना भाई या दोस्त समझ सकती हैं।

गिरधारी बेटी राजेश बाबू तो भगवान् के आदमी हैं। ऐसे इन्सान दुनिया में बहुत कम मिलते हैं।

सरला बाबूजी आप हाथ-मुँह धो लीजिए। खाना तैयार है।

गिरधारी ठीक है बेटी। सबकी थालियाँ लगा दो। मैं तब तक मुँह-हाथ धो लेता हूँ।

□□

[रात का समय है। सरला को नींद नहीं आ रही है। उसके दिल को कहीं चैन नहीं है। माया भी जाग रही है और उससे सरला की परेशानी छिपी नहीं रहती।]

माया . दीदी, कुछ परेशान-सी नजर आती हो ?

सरला : नहीं तो।

माया : (पास आ जाती है) क्या मुझे नौकरी मिल गई यह तुम्हें अच्छा नहीं लगा ?

सरला : पगली, कैसी बातें करती है !

माया : दीदी, तुम कुछ छिपा रही हो। अब मैं इतनी बच्ची नहीं हूँ। बताओ न, क्या बात है ?

सरला : कुछ नहीं। (सिसक पड़ती है)

[माया सरला के गले से लग जाती है और वह भी रो पड़ती है]

माया : दीदी मेरी वजह से दुखी हो ? बताओ न, क्या बात है ?

[illegible] है ? (सरला बढ़ी आती है)

सरला : [illegible] मेरी बात का बुरा मान गई ? [illegible] थी। तुम ना जानती हो कि तुम्हारी दीदी [illegible] किसी की [illegible] और [illegible] कर गई थी। [illegible], वही तुम्हें जिन्दगी में [illegible] (सिसक पड़ती है)

माया : (उठ [illegible] हुए) [illegible] दीदी। [illegible] हूँ, मुझे [illegible] जिन्दगी दिया है। मगर मैं भी अब [illegible] को भी नहीं।
[सरला [illegible] का सिर चूम लेती है।]

□ □

[शाम के पाँच बजे हैं। सरला बाहर सूखे हुए कपड़ों को तह रही है। उसी वक्त बाहर राजेश की कार आकर रुकती है।]

राजेश : जी, मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

सरला : कौन राजेश बाबू !

राजेश : जी।

सरला : आइए।

राजेश : (बैठते हुए) बाबूजी और माया अभी लौटे नहीं हैं ?

सरला : जी, दोनों को लौटते हुए करीब छ बज जाते हैं। शायद अभी आधे घण्टे की देर है।

राजेश : (घड़ी की ओर देखते हुए आश्चर्य से) अरे, आपका अन्दाज़ा बिल्कुल ठीक है। अभी साढ़े पाँच ही बजे हैं। मगर आपने किस हिसाब से यह अन्दाज़ लगा लिया ?

सरला : दोपहर के धुले हुए कपड़े जब तक सूखते हैं, रोज़ाना करीब यही समय हो जाता है।

राजेश : [illegible] तरीका ढूँढ निकाला है।

सरला : हर मुश्किल में कोई-न-कोई तरीका सूझ ही आता है। (बगल के कमरे मे पानी लेने चली जाती है)

राजेश : (पानी का गिलास लेते हुए) शुक्रिया।

सरला : क्या पीएँगे आप—चाय या कॉफी ?

राजेश : पानी तो पी ही रहा हूँ और इस हालत म आपको कोई और तकलीफ देना नही चाहता।

सरला (राजेश की बात पर तनिक मुस्कराते हुए) जी, मुझे कोई तकलीफ नही होगी।

राजेश · (पानी का गिलास तिपाई पर रखते हुए) सच पूछिए तो जो खुशी मुझे आपके पास कुछ देर बैठने से होगी वह चाय पीने से नही। मैं अभी-अभी चाय पीकर आ रहा हूँ।

सरला . आप तो हर वक्त यही कहते ।

राजेश (मुस्कराकर) मगर झूठ नही कहता।

[सरला बैठ जाती है।]

माया को सर्विस से कोई तक्लीफ तो नही है ?

सरला · जी नही। सारे दिन अपने बॉस और औरों की खूब तारीफ करती रहती है। (रुककर) आपने हम सब पर बहुत बड़ा एहसान किया है।

राजेश · अगर आप भी ऐसा कहने लगी तो मुझे बडा दुख होगा।

सरला आप मुझे गलत न समझिएगा।

राजेश : सरलाजी, अगर आप बुरा न मानें तो एक बात पूछूँ ?

सरला . जी पूछिए।

राजेश लगता है आप मुझसे बहुत नाराज हैं। मैं जब भी आता हूँ, आपके चेहरे पर एक अजीब उदासी उतर आती है। जानता हूँ, मैं आपका गुनहगार हूँ। दोषी हूँ। पर क्या आप मुझे कभी क्षमा न कीजिएगा ?

सरला : नहीं, नहीं, राजेश बाबू, ऐसी कोई बात नही है। इस ससार रूपी समुद्र मे न जाने रोज कितनी ही जीवन रूपी कश्तियाँ ० खाकर डूब जाती हैं। इसमे कौन किसे दोषी ठहरा ...।

हमारे लिए इतना सोचने की उन्हें क्या जरूरत है ? (आवाज भर्रा आती है)

सरला माया, मेरी बात का बुरा मान गई ? मैं तो तुम्हें यों ही कह रही थी। तुम तो जानती हो कि तुम्हारी दीदी खुद किसी की भोली सूरत और बातों का शिकार बन गई थी। सोचा, कहीं तुम भी जिन्दगी में अपनी दीदी की तरह ...(सिसक पड़ती है)

माया . (गले लगते हुए) मेरी अच्छी दीदी। जानती हूँ, तुम्हें मेरे लिए कितनी फिक्र है। मगर मैं भी अब इतनी नादान तो नहीं रही !

[सरला माया का सिर चूम लेती है।]

□ □

[शाम के पाँच बजे हैं। सरला धोकर सूखे हुए कपड़ों को रख रही है। उसी वक्त बाहर राजेश की कार आकर रुकती है]

राजेश जी, मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

सरला कौन राजेश बाबू !

राजेश जी।

सरला आइए।

राजेश · (बैठते हुए) बाबूजी और माया अभी लौटे नहीं हैं ?

सरला . जी, दोनों तो लौटते हुए करीब छः बज जाते हैं। शायद अभी आधे घन्टे की देर है।

राजेश : (घड़ी की ओर देखते हुए आश्चर्य से) अरे, आपका अन्दाजा बिल्कुल ठीक है। अभी साढ़े पाँच ही बजे हैं। मगर आपने किस हिसाब से यह अन्दाज लगा लिया ?

सरला · दोपहर के धुले हुए कपड़े जब तक सूखते हैं, रोजाना करीब यही समय हो जाता है।

राजेश · (मुस्कराकर) भाई आपने बहुत अच्छा तरीका ढूँढ निकाला है।

सरला . हर मुश्किल में कोई-न-कोई तरीका मिल ही जाता है। (बगल के कमरे में पानी लेने चली जाती है)

राजेश : (पानी का गिलास लेते हुए) शुक्रिया।

सरला क्या पीएँगे आप—चाय या कॉफी ?

राजेश · पानी तो पी ही रहा हूँ और इस हालत में आपको कोई और तकलीफ देना नहीं चाहता।

सरला (राजेश की बात पर तनिक मुस्कराते हुए) जी मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी।

राजेश . (पानी का गिलास तिपाई पर रखते हुए) सच पूछिए तो जो खुशी मुझे आपके पास कुछ देर बैठने से होगी वह चाय पीने से नहीं। मैं अभी-अभी चाय पीकर आ रहा हूँ।

सरला : आप तो हर बात यही कहते ।

राजेश (मुस्कराकर) मगर झूठ नहीं कहता।

[सरला बैठ जाती है।]

माया को सर्विस से कोई तकलीफ तो नहीं है ?

सरला : जी नहीं। सारे दिन अपने बॉस और औरों की खूब तारीफ करती रहती है। (रुककर) आपने हम सब पर बहुत बड़ा एहसान किया है।

राजेश अगर आप भी ऐसा कहने लगीं तो मुझे बड़ा दुख होगा।

सरला आप मुझे गलत न समझिएगा।

राजेश : सरलाजी, अगर आप बुरा न मानें तो एक बात पूछूँ ?

सरला . जी पूछिए।

राजेश लगता है आप मुझसे बहुत नाराज हैं। मैं जब भी आता हूँ, आपके चेहरे पर एक अजीब उदासी उभर आती है। जानता हूँ, मैं आपका गुनहगार हूँ। दोषी हूँ। पर क्या आप मुझे कभी क्षमा न कीजिएगा ?

सरला . नहीं, नहीं, राजेश बाबू, ऐसी कोई बात नहीं है। इस संसार रूपी समुद्र में न जाने रोज कितनी ही जीवन रूपी कश्तियाँ ट-कराकर डूब जाती हैं। इसमें कौन किसे दोषी ठहरा सकता

[एकसौ ६ .

है जो कुछ अखबार की बातें हैं, किसी और से क्या बातें हो सकती हैं।

राजेश : मुझे शायद यह हक तो नहीं, फिर भी क्या पूछ सकता हूँ कि आप अपने आपसे इतनी हद तक क्यों नाराज़ हैं?

सरला : जब दिल के अरमान टूट जाते हैं तो जीवन में रह ही क्या जाता है?

राजेश : सरला जी, ज़िन्दगी में सभी के सभी अरमान तो पूरे नहीं हो पाते। फिर भी इन्सान किसी न किसी सहारे जी ही लेता है। (रुककर) आप कुछ समय के लिए कालिज क्यों नहीं ज्वॉइन कर लेतीं? आप वहाँ काफी पीछे छोड़ सकती हैं। और आपका दिल भी लग जाएगा।

सरला : राजेश बाबू अगर जीने की ख्वाहिश हो फिर तो सब कुछ हो जाता है। लेकिन आदमी क्या टूटी समझकर भी जी सकता है?
[राजेश कुछ जवाब नहीं देता।]
आप बुरा तो नहीं मान गए। मैं भी न जाने आपसे कैसी बातें करने लगी। (रुककर) मैंने भी पहले तो यह सोचा था कि कॉलिज ज्वॉइन कर लूँगी। माया और बाबूजी का भी यही ख्याल था। मगर अब घर के काम से ही फुरसत नहीं मिलती। वक्त यों ही गुजर जाता है।

राजेश : आपका कहना भी ठीक है।

सरला : आप बैठिए, आपके लिए मैं थोड़ी चाय बनाकर लाती हूँ।

राजेश : नहीं, नहीं, सरलाजी, काफी देर हो गई है, अब मैं चलूँ।
[राजेश उठ खड़ा होता है।]

सरला : कुछ देर और बैठिए, माया और बाबूजी आते ही होंगे।

राजेश : (मुस्कराकर) नहीं सरलाजी, मुझे किसी काम से बाहर जाना है। फिर आऊँगा। (जाते हुए) नमस्ते!

सरला : जी, नमस्ते!

□ □

बातें सुनूँगी ।

गिरधारी : राजेश बाबू हमारी माया बेटी बहुत जिद्दी है । अगर आपको एत-
राज न हो तो हमारे घर की रूखी-सूखी खा लीजिए ।

राजेश : जी, इसमें एतराज की क्या बात है ! चलिए, मैं भी आपके साथ
थोड़ा खा लेता हूँ ।

[राजेश की बात से माया खुश हो उठती है । सरला के चेहरे पर
हल्की-सी मुस्कान उतर आती है । दोनों बहनें अन्दर के कमरे में
चली जाती हैं ।]

गिरधारी : (राजेश से) मैंने सोचा कि शायद आपको गरीब के घर की
रोटी अच्छी न लगे । मगर माया बेटी अपनी जिद पूरी करके
ही रही ।

राजेश : आप कैसी बातें कर रहे हैं ! गरीब और अमीर दोनों इन्सान ही
तो हैं । फिर गरीब की रोटी तो और भी ज्यादा मीठी होती है ।
उसमें मेहनत का पसीना ज्यादा होता है !

गिरधारी : (मुस्कराते हुए) काश, सभी अमीर राजेश बाबू होते ! पर ऐसा
नहीं होता ।

राजेश : क्यों नहीं हो सकता ! क्या सभी अमीर इन्सान नहीं होते ?

[माया अन्दर से दो थालियाँ लेकर आती है और मेज पर रख
देती है ।]

गिरधारी : राजेश बाबू यह तो न खत्म होने वाली बात है । आइए, पहले
खाना ही खा लेते हैं ।

राजेश : (थाली देखकर माया से) अरे आलू की सब्जी है !

माया : क्यों अच्छी नहीं लगती ?

राजेश : यही तो एक सब्जी है, जो मुझे पसन्द है । मगर बाबूजी तो कह
रहे थे कि रूखी-सूखी रोटी, और तुमने ये इतनी सारी चीजें लाकर
रख दीं ?

माया : सिर्फ चार चीजें हैं । देखती हूँ, आप और कितने खा सकते हैं ?

अंक तीन] [एकांकी सौरभ

माया : आपको मेरा टेलीफोन मेसेज मिल गया था ?

राजेश : (हँसते हुए) जी हाँ। मगर आप शायद घबरा रही हैं कि खाने की दावत तो आपने कल की दी थी और मैं आज ही आ टपका, है न ?

माया : नहीं तो, बिल्कुल नहीं। हम खाना खाने बैठ ही रहे थे, आप भी शामिल हो जाइए।

राजेश : सच्चे दिल से कह रही हैं आप ?

माया : हाँ ... तो क्या आपको कोई शक है ?

गिरधारी : बेटी इनको आज तुम क्या खाना खिलाओगी। इनके लिए कुछ चाय-नाश्ता ही बनाओ।

[सरला अन्दर से पानी का गिलास लाकर राजेश को देती है।]

राजेश : आप क्यों इतनी तकलीफ करती हैं ?

सरला : क्या घर आए मेहमान को पानी पिलाना कोई तकलीफ होती है ?

राजेश : (पानी का गिलास वापस देते हुए मुस्कराकर) जी नहीं, मेरे कहने का मतलब यह नहीं था।

माया : कहिए, आप नाश्ते के साथ क्या लेंगे—चाय या कॉफी ?

राजेश : (हँसकर) इसका मतलब यह हुआ कि अभी-अभी तुमने खाने के लिए झूठ ही कहा था। क्यों अब फार्मलिटी से रीएलिटी पर उतर आई न ?

माया : बिल्कुल नहीं। मगर देखिए न, बाबूजी कह रहे हैं कि आपको हमारा आज का खाना अच्छा नहीं लगेगा।

राजेश : अरे, ये कैसे हो सकता है।

माया : (तुरन्त) फिर कह दीजिए हाँ।

राजेश : मैं तो मजाक कर रहा था। घर पर खाने के लिए माँ मेरा इन्तजार कर रही होंगी।

माया : आपको खाना नहीं है तो बहाना क्यों बना रहे हैं ?

राजेश : (हँसकर) माया, दरअसल मैं मैं कुछ और बात करने के लिए यहाँ आया था।

माया : पहले आप खाना खाने के लिए 'हाँ' कहिए फिर जाकर मैं आपकी बातें सुनूँगी ।

गिरधारी : राजेश बाबू हमारी माया बेटी बहुत ज़िद्दी है । अगर आपको एत-राज न हो तो हमारे घर की रूखी-सूखी खा लीजिए ।

राजेश : जी, इसमें एतराज की क्या बात है । चलिए, मैं भी आपके साथ थोड़ा खा लेता हूँ ।

[राजेश की बात से माया खुश हो उठती है । सरला के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान उतर आती है । दोनों बहनें अन्दर के कमरे में चली जाती हैं ।]

गिरधारी · (राजेश से) मैंने सोचा कि शायद आपको गरीब के घर की रोटी अच्छी न लगे । मगर माया बेटी अपनी ज़िद पूरी करके ही रही ।

राजेश . आप कैसी बातें कर रहे हैं ! गरीब और अमीर दोनों इन्सान ही तो हैं । फिर गरीब की रोटी तो और भी ज्यादा मीठी होती है । उसमें मेहनत का पसीना ज्यादा होता है !

गिरधारी : (मुस्कराते हुए) काश, सभी अमीर राजेश बाबू होते ! पर ऐसा नहीं होता ।

राजेश . क्यों नहीं हो सकता ! क्या सभी अमीर इन्सान नहीं होते ?

[माया अन्दर से दो थालियाँ लेकर आती है और मेज पर रख देती है ।]

रधारी : राजेश बाबू यह तो न खत्म होने वाली बात है । आइए, पहले खाना ही खा लेते हैं ।

राजेश : (थाली देखकर माया से) अरे, आलू की सब्जी है !

माया : क्यों अच्छी नहीं लगती ?

राजेश : यही तो एक सब्जी है, जो मुझे पसन्द है । मगर बाबूजी तो क रहे थे कि रूखी-सूखी रोटी, और तुमने ये इतनी सारी चीजें लाक रख दीं ?

माया : सिर्फ चार परौंठे हैं । देखती हूँ, आप और कितने खा सकते हैं ?

दीदी जब घर में अकेले होते हुए खाना पकाती हैं तो बहुत डर लगता है।

राजेश : माया, दिल की रोशनी आँखों की रोशनी से कई गुना बढ़कर होती है। सरला जी, मैं ठीक कह रहा हूँ न ?

सरला : जी, आप यों ही मेरी इतनी तारीफ कर रहे हैं।

राजेश : नहीं सरला जी, मैं सही कह रहा हूँ। दुनिया में लोगों को आँखों के होते हुए भी कुछ दिखाई नहीं देता। उनके पास दिल की रोशनी जो नहीं होती।

माया : (हँसकर) अरे राजेश बाबू आपकी बातों से तो यह लगता है कि पिछले जन्म में आप कहीं फिलॉसफर रहे होंगे !

राजेश : जी हाँ, मुझे भी अक्सर ऐसे ही ख्याल आते रहते हैं।

[सब मुस्कराते हैं]

(सरला से) वैसे सरला जी माया ठीक कह रही है। आपको कुछ कामों से दूर रहना चाहिए और अपने आपको सँभाल कर रखना चाहिए।

सरला : अब हर काम करने की कुछ आदत हो गई। फिर घर में बैठे-बैठे वक्त भी तो नहीं कटता।

गिरधारी : (माया से) अरे बेटी देखो तो, बातों-बातों में राजेश बाबू के पराँठे खत्म हो गए।

माया : अभी लाई बाबूजी। (रसोई में दौड़ कर जाती है)

राजेश : (गिरधारीलाल से) जी, आप मेरी फिक्र मत कीजिए। मैं माँग कर खा लूँगा। इस बात में मैं कोई शर्म नहीं करता।

माया : (परोसते हुए) क्या सचमुच हमारा खाना पसन्द आया ?

राजेश : सिर्फ पसन्द ही नहीं, बेहद पसन्द। जानती हो, बड़े घरों में बावर्ची खाना पकाते हैं। वहाँ बर्तन अच्छे होते हैं, खाने का स्वाद नहीं। और फिर आज जैसा खाना तो कभी-कभी ही नसीब होता है।

माया : आप बातें बनाना खूब जानते हैं।

राजेश : क्या तुम्हें ...

माया : बिल्कुल न...

अब मौन

राजेश : तो तुम्हें एक काम करना होगा। बड़े घराने की किसी लड़की से अगर तुम्हारी भेंट हो जाए तो उसे कहीं एक कोने में ले जाकर पूछना कि क्या वह खाना बनाना जानती है? बस, इसी से तुम्हें मेरी बात का यकीन हो जाएगा।

माया : मैं किसी से क्यों पूछूँ?

राजेश : फिर तो तुम्हें मेरी बात माननी पड़ेगी। (गिरधारीलाल की ओर देखकर मुस्कराते हुए) आपकी क्या राय है?

गिरधारी : आप पहले इन्सान हैं जिसे मैं स्वयं अपनी बुराई करते हुए देख रहा हूँ।

राजेश : आप तो मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं। (रुककर) न जाने बातों-बातों में कितना खा लिया! अब पानी के लिए भी जगह नहीं रही।

गिरधारी : क्यों, इतनी जल्दी!

राजेश : नौजवानों का तो हर काम जल्दी होता है। आप आराम से खाइए। मैं बैठा हूँ।

गिरधारी : (माया से) बेटी, राजेश बाबू के हाथ धुला दो।

राजेश : जी, मुझे ऐसी कोई जल्दी नहीं है।

माया : आप थाली में ही हाथ धो लीजिए।

राजेश : अच्छा नहीं लगता।

गिरधारी : बेटी अन्दर ही हाथ धुला दो।

राजेश : जी नहीं। मैंने जूते पहन रखे हैं। बाहर चलकर ही हाथ धो लेता हूँ।

[हाथ धो लेता है।]

(बैठते हुए) अच्छा माया, अब तुम्हें बात सुननी होगी।

माया : कहिए।

राजेश : पहले तो यह बताओ कि कल तुम किस खुशी में दावत दे रही हो?

गिरधारी : (मुस्कराकर) आप नहीं जानते क्या, आज हमारी माया बेटी को उसकी पहली तनख्वाह मिली है।

माया : और यह भी नहीं।

राजेश : मैं समझा नहीं।

माया : मनोज भाई साहब ने मेरे काम से खुश होकर बीस दिन के बजाय पूरे महीने की तनख्वाह दी है।

राजेश : अच्छा! फिर तो यह बड़ी खुशी की बात है।

गिरधारी : बस यह सब आपकी बदौलत है।

राजेश : लगता है अब भी आप मुझे अपना महसूस नहीं करते।

गिरधारी : ऐसी कोई बात नहीं है राजेश बाबू। बुरा न मानिएगा। (भावुक होकर) कभी-कभी कुछ बातें यों ही दिल से निकल छलक आती हैं।

माया (राजेश से) बाबूजी की बात को छोड़िए। यह बताइए, कल आप आ रहे हैं न?

राजेश : इसके लिए मेरी एक शर्त है।

माया . क्या?

राजेश खाना हम अपने साथ ले जाकर कहीं बाहर चलकर ही खाएँगे। आई मीन, ए पिकनिक।

माया : मगर कहाँ जाएँगे?

राजेश (मुस्कराते हुए) बम्बई शहर में कई जगह है।

माया फिर बाबूजी तो साथ नहीं चलेंगे।

गिरधारी : राजेश बाबू, माया बेटी ठीक कह रही है। सरला और माया बेटी चली जाएँगी। मैं बूढ़ा भला साथ चलकर वहाँ क्या करूँगा।

राजेश : आपको छोड़कर हम कैसे जा सकते हैं।

माया : (राजेश से) अगर आपको एतराज न हो तो एक बात हो सकती है।

राजेश क्या!

माया : सब इकट्ठे बैठकर यहीं पर खा लेंगे, फिर घूमने चलेंगे।

राजेश : एक्सीड, गुड आइडिया।—और हाँ, फिर तो खाना भी शाम को ही हो जाए तो ठीक रहेगा, ताकि खाकर तुरन्त बाहर जा सकें।

माया : मंजूर है। (सरला से) दीदी ये ठीक है न?

[गिरधारीलाल खाना खत्म करके हाथ धोते हैं।]

सरला : मैं बाहर चलकर क्या करूँगी। तुम और राजेश बाबू ही घूम आना।

राजेश : आप कैसी बात कर रही हैं। माया तो रोजाना ही बाहर जाती है। मैं तो सिर्फ आपके लिए ही यह प्रोग्राम बना रहा था। क्या आपको मेरे साथ चलने में कोई एतराज है ?

सरला : ऐसी बात नहीं है राजेश बाबू "...

राजेश : फिर आपको चलना ही होगा।

माया : दीदी, जब राजेश बाबू इतना कह रहे हैं, तो तुम्हें चलने में क्या एतराज है ? तुम्हें मैं जो तैयार कर दूँगी। (राजेश की ओर देखते हुए) राजेश बाबू आप बेफ़िक्र रहिए, दीदी जरूर हमारे साथ चलेंगी। वरना दीदी से हमारा बोलना बन्द ! ठीक है न ?

राजेश : जी, बिल्कुल।

माया : अच्छा, यह तो बताइए कि कल आप खाना क्या खाएँगे ?

राजेश : जो भी आप बनाएँ।

माया : ओ हो राजेश बाबू मैं आपकी पसन्द पूछ रही हूँ।

राजेश : वैसे जो भी बनाओगी सो खा लूँगा। पर हो सके तो साथ में समोसे जरूर बनाना। मेरी सब में बड़ी पसन्द यही है।

माया : दीदी, समोसे बहुत अच्छे बनाती हैं। क्यों दीदी बनाओगी न ?
[सरला का चेहरा फीका पड़ जाता है।]

सरला : अब शायद इतने अच्छे नहीं बनेंगे। तुम राजेश बाबू को अपने हाथ की बनाई हुई कचौरियाँ ही खिला देना।

राजेश : (हठ पूर्वक) जी नहीं, मैं तो समोसे ही खाऊँगा। चाहे आप जैसे भी बनाएँ।

गिरधारी : बेटी, जब राजेश बाबू इतना चाहते हैं तो तुम समोसे ही बना देना।

सरला : जी, बाबूजी।

राजेश : फिर तो मजा आ जाएगा। (गिरधारीलाल से) अब इजाजत दें तो मैं चलूँ। आप सबको आज बहुत परेशान किया है।
(उठ जाता है)
[दृश्य का अंत]

माया अगर यही बात है तो फिर क्यों न हम समुन्दर के किनारे ही चलें

राजेश : चलिए वहीं चलते हैं। वैसे आज इतना खा लिया है कि मुझे डर है, कहीं समुन्दर के किनारे बैठे बैठे नींद न आ जाए।

माया क्या सचमुच इतना खा लिया है ?

राजेश बिल्कुल, और समोसों ने तो बस कमाल ही कर दिया। दिल तो यह हो रहा था कि कुछ समोसे जेब में भर लूँ। (सरला और माया हँसती है।)

माया तो आपने मुझे बताया क्यों नहीं ?

राजेश . क्या करूँ अब थोड़ा बड़ा हो गया हूँ, इसलिए दुनिया की शर्म से कुछ आदतें छोड़नी पड़ी हैं। (फिर दोनों हँसती हैं) (सरला से) सरलाजी बुरा न मानें तो एक बात कहूँ !

सरला जी कहिए।

राजेश अगर सोने के अन्दर हीरा जड़ दिया जाए तो उसका रूप और निखर आता है। आज जिस तरह माया ने आपको सजाया है, सचमुच आप बहुत ही सुन्दर लग रही हैं।

सरला : (लजाकर) आप सिर्फ औरों की तारीफ करना ही जानते हैं।

राजेश : जो इसके काबिल है उसकी तारीफ करने में क्या बुराई है ?

माया : राजेश बाबू आप ठीक कह रहे हैं। दीदी जब कालेज में थी तो न जाने कितने बेचारों के दिल टूटकर चूर हो गये होंगे।

सरला (चुटकी लेते हुए) कैसी बेशर्मी की बातें कर रही हो।

राजेश : (मुस्कराते हुए) चलिए, हमारी जगह आ गई। (कार रोक देता है)

[तीनों कार से उतरकर चलने लगते हैं।]

माया : (हाथ पकड़कर सरला से) दीदी, तुम आराम से इस तरह चलो कि किसी को यह मालूम भी न हो पाए कि तुम देख नहीं सकती।

राजेश : सरलाजी, आप जिस तरह कदम उठाकर चलती हैं, कोई यह सोच भी नहीं सकता कि आप देख नहीं सकती।

[चाँदनी होने से समुद्र तट पर काफी भीड़ है। तीनों चलकर एक जगह रेत में बैठ जाते हैं। उनसे थोड़ी दूरी पर एक युगल के

साथ बैठे हुए दो बच्चे रेत का घर बना रहे हैं। राजेश यह देख
है और बोल उठता है—]

राजेश : (माया से) बचपन कितना अच्छा है। देखो तो, बच्चे किस
से घर बना रहे हैं।

सरला : जिस घर को चलते वक्त तोड़ देना पड़े, उसे बनाकर क्या फायद

राजेश (हँसकर) सरलाजी अगर सब लोग यही सोचते तो यह दुनि
बन नहीं पाती। देखिए न, हर किसी के लिए यहाँ कितना थो
वक्त है। फिर भी कैसी भीड़ है। कैसा लगाव है। लगता
किसी को यहाँ से लौटकर जाना ही नहीं है।

माया : अरे राजेशबाबू आप तो फिलासफी पर उतर आए।

राजेश (गम्भीर होकर) हाँ माया। कभी-कभी सोचता हूँ कि जिन्द
कितनी छोटी है। फिर भी न जाने क्यों इन्सान इतना स्वार्थी है
घमंडी है। क्या-क्या सपनों के महल रचाकर बैठता है। आरि
क्या ले जाना है उसे यहाँ से ? कुछ भी तो नहीं, है न ?

माया आप ठीक कह रहे हैं।

राजेश : इन्सान है ही क्या, मांस का लोथड़ा है, चलते-फिरते कभी
चोट से, बीमारी की झपेट से, रहे न रहे। इतनी सहज और स
बात को दुनिया के लोग समझते क्यों नहीं ? (हँसकर) इन व
पर बहुत सोचता हूँ मगर किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पात
मेरा सोचना शायद दुनिया के लिए काम का न हो।

माया : (मुस्कराते हुए) राजेश बाबू आपको तो वाकई कहीं प्रोफेसर हो
चाहिए था।

[एक फेरीवाला वहाँ से गुजरता है।]

फेरीवाला : गोल्ड स्पॉट-पेप्सी।

राजेश : (हँसते हुए) क्या बात कही है। मैं भी न जाने कहाँ खो गया।
चलो, इसी बात पर कुछ ठण्डा हो जाए।

सरला : अभी तो आप कह रहे थे कि पेट में बिल्कुल जगह नहीं है।

राजेश : सरलाजी, इन्सान की भूख कब खत्म हुई ! फिर थोड़ा पी लेने
क्या फर्क पड़ जाएगा।

[एरसो तेता
अब सीन]

(फेरीवाले की ओर देखकर) ओ गोल्ड-स्पॉट !

फेरीवाला : आया साब। (पास आता है)

राजेश : ठण्डे हैं क्या ?

फेरीवाला : बिल्कुल ठण्डे हैं साब।

राजेश : दोस्त, साहब तो अभी गर्म हैं, ठंडे नहीं, वरना लोग कब के कब्रिस्तान पहुँचा देते। ये कहो कि गोल्ड-स्पॉट ठण्डे हैं।

[सरला और माया हँसती हैं।]

फेरीवाला : साब मैं तो गोल्ड स्पॉट के लिए ही कह रहा हूँ।

राजेश : अच्छा फिर तीन दे दो।

फेरीवाला : जी साब।

[फेरीवाला गोल्ड स्पॉट निकालकर देता है। तीनों गोल्ड स्पॉट पीने लगते हैं।]

राजेश : (फेरीवाले से) कितने पैसे हुए ?

फेरीवाला : दो रुपये दस पैसे साब।

माया : (राजेश से) पैसे मैं दे देती हूँ।

राजेश : बड़े जब साथ हों तो छोटों को यह बात नहीं सोचनी चाहिए।

माया : मगर मैं भी तो अब कमाती हूँ।

राजेश : सरला, तुम इसलिए खुश हो? इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम बड़ी हो गई हो ? (फेरीवाले को पैसे देता है)

[फेरीवाला जाते-जाते तीनों की ओर मुड़-मुड़कर देखने लगता है।]

(माया से) न जाने घूर-घूरकर क्या देख रहा है ?

माया : (हँसते हुए) बेचारा सोच रहा होगा कि एक लड़का और दो-दो लड़कियों को लेकर घूम रहा है, है न राजेश बाबू ?

सरला : बहुत बेलगाम हो गई है। इतनी बड़ी हो गई है पर बोलने की कुछ तमीज नहीं है।

राजेश : सरलाजी, क्यों माया पर नाहक नाराज हो रही हैं। इसने ठीक ही तो कहा है। हमारा आज का समाज मॉडर्न होने का दावा करते हुए भी कितना दूर तक गिर चुका है। यहाँ तक कि [illegible] भी राह में साथ चलने से डरता है।

माया : वाह-वाह, एक्सिलेण्ट ! क्या बात कही है ! क्या तमाचा मारा है, उनके मुँह पर जो हिन्दुस्तान की सभ्यता का नारा लगाए हुए हैं। काश. आपको कोई लीडर बनाकर भाषण देने के लिए खड़ा कर देता।

राजेश : पर मुझे शायद तुम्हारे जैसे श्रोता नहीं मिलते।

माया . (मुँह बनाते हुए) फिर तो आप अभी लीडर बनने के काबिल नहीं हैं।

राजेश . (आश्चर्य से) बस इतनी जल्दी अपना विचार बदल दिया ?

माया और नहीं तो क्या, आपको तो ये भी मालूम नहीं कि लीडर के भाषण में श्रोता से अधिक गधे ही होते हैं।

राजेश : वाह-वाह, इतना कुछ जानती हो, फिर तो लीडर बनने के काबिल वाकई तुम हो।

माया : (खुश होकर) सच ?

राजेश . जी, बिल्कुल।

माया : थैंक्यू वेरी मच। दीदी ने आजतक मेरी बराबरी सिर्फ गधों से की है। आप पहले इन्सान हैं जिनने आज मेरी इस काबिलियत को पहचाना है।

राजेश ओह माई गॉड ! फिर तो बात बुरी हो गई।

माया क्यों ?

राजेश · कहीं तुम्हारी दीदी अब मुझे भी तुम्हारे बराबर न समझने लगे।
(सब हँसते हैं)

सरला . अगर लौटने में देर हो गई तो बाबूजी फिकर करेंगे।

माया : दीदी, हर बात के लिए इतना ज्यादा मत सोचा करो। थोड़ी और हवा खा लो। मुफ्त में ही तो मिल रही है।

राजेश : नहीं माया, सरलाजी ठीक कह रही हैं। हमें अभी घर पहुँचने में पहुँचने काफी देर हो जाएगी।
[सब उठकर गाड़ी की ओर चल देते हैं।]

□ !

[मनोज अपने ऑफिस से राजेश को फोन करता है। राजेश अपने ऑफिस में काम में व्यस्त है। टेबल पर पड़े हुए टेलीफोन की घण्टी बजते ही वह रिसीवर उठाता है।]

राजेश : हैलो, राजेश स्पीकिंग।

मनोज : यार हम भी तुम्हारे चाहने वालों में से ही हैं।

राजेश : ओहो तो आप हैं ! कहिए आज हमारी याद कैसे आ गई ?

मनोज : बस प्यारे यों ही समझो।

राजेश : शायद इतने शरीफ तो आप भी नहीं हैं।

मनोज : चलो फिर तुम्हारा कहना मान लेते हैं। दोस्त, तुम्हें याद तो होगा कि कुछ दिन पहले मैंने तुम्हें एक फैक्टरी प्लॉन के बारे में कहा था।

राजेश : हाँ-हाँ, याद है।

मनोज : गुरु वह प्लॉन अब कंक्रीट हो गया है। कहो फिर इनवेस्ट करने का क्या इरादा है ?

राजेश : डियर मैं तुम्हें बताना भूल ही गया कि डैडी से मैंने वह बात की थी। मगर उन्होंने कोई खास इण्टरेस्ट नहीं दिखाया। वैसे तुम्हें कुछ फाइनेंस की जरूरत हो तो मैं इन्तजाम किये देता हूँ।

मनोज : नहीं यार, फाइनेंस की कोई प्रोब्लम नहीं है। दो-तीन पार्टियाँ ऑल रेडी इण्टरेस्टेड हैं। यह तो मैंने सोचा था कि फर्स्ट प्रिफरेन्स अपनों को दी जाए। बस इतनी-सी बात थी।

राजेश : थैंक्यू डियर। और कोई नई-ताजी बात ?

मनोज : अरे हाँ, मैं तो यह पूछना भूल ही गया, तुम्हें पता है न माया की बहुत सख्त बीमार है ?

राजेश : क्या कहते हो ? मुझे कुछ भी मालूम नहीं।

मनोज : दोस्त, माया तो पाँच दिनों से ऑफिस नहीं आ रही है। आज फिर उसका फोन आया था कि और दो दिनों की छुट्टी चाहिए।

राजेश : तुमने क्या कहा ?

मनोज : मैंने कहा

दीदी बिल्कुल ठीक न हो जाए, आखिर आने की वह चिन्ता
करे। यहाँ साला कौन-सा गवर्नर का काम अटका हुआ है।

राजेश : थैंक्यू डियर, थैंक्यू। मैं अभी उनके घर जाता हूँ।

मनोज : ओ के, डेन।

राजेश : बॉय!

[रिसीवर रखकर राजेश जल्दी से अपना काम निपटाने
जाता है।]

☐

[राजेश कार लेकर कुछ घबराया हुआ गिरधारीलाल के
पहुँचता है। घर का दरवाजा यों ही अटकाया हुआ दिखाई पड़
है। राजेश दरवाजा खोलकर घर में दाखिल होता है तो सरला
सिवा कोई नजर नहीं आता। सरला पलंग पर लेटी हुई है।
वाजा खुलने की आहट से वह चौंक पड़ती है।]

सरला : कौन?

राजेश : सरला मैं हूँ, राजेश।

सरला : (धीमे स्वर में) आइए, राजेश बाबू।

राजेश : (पास आकर) यह तुम्हें क्या हो गया सरला! मुझे आज
खबर क्यों नहीं दी? कम-से-कम फोन ही कर दिया होता।

सरला : माया तो कह रही थी पर मैंने ही मना किया था। हम सब
परेशान थे ही, व्यर्थ में इस परेशानी में आपको भी शामिल क
से लाभ?

राजेश : खैर, अगर आप नहीं चाहती कि मैं यहाँ आऊँ, तो मुझे शायद

सरला : नहीं, नहीं, राजेश बाबू ऐसा न कहिए (भीगे स्वर में) हरी
में मैं अब किसी पर बोझ बनना नहीं चाहती। मैं अब जीना
चाहती। मुझे इस हालत में जीने का कोई अधिकार नहीं
अब तीन]   [एक्सो

राजेश : सरला ! (उसका हाथ फिर अपने हाथों में लेकर भावुक होते हुए) मुझे खुद यह नहीं मालूम कि क्यों दिन-रात मुझे तुम्हारे ख्याल आते रहते हैं। क्यों पल भर के लिए तुम्हारी दूरी मुझ से बर्दाश्त नहीं हो पाती। पर एक तरफ तुम हो कि जिसने अपनी इस हालत में भी मुझे अपने आप से दूर रखा।

सरला : नहीं, नहीं, राजेश बाबू, मैं तो अब आप लोगों के लिए सिर्फ एक मुसीबत बन गई हूँ। सोचती हूँ, मर क्यों नहीं जाती ? (रो पड़ती है)

राजेश : जानता हूँ सरला, दिल के गम को भुला देना बहुत मुश्किल है। फिर भी इन्सान को हर हालत में मन को काबू में रखना चाहिए।

सरला : (कुछ देर बाद आँसू पोंछती हुई) कोशिश तो करती हूँ पर

[उसी वक्त माया घर में दाखिल होती है। उसके हाथ में थैली और दवा है।]

माया : (आश्चर्य से) अरे राजेश बाबू आप ! और इस वक्त !

राजेश : मैं तुम से कभी बात नहीं करूँगा।

माया : मगर क्यों ?

राजेश : खुद अपने दिल से ही पूछ लो।

माया : (राजेश की बात समझकर) ओह, राजेश बाबू मैं क्या करती ! दीदी ने आपको कुछ बताने के लिए मुझे मना जो कर रखा था। अगर आपको मेरी बात का विश्वास न हो तो दीदी से ही पूछ लीजिए।

राजेश : क्या ऐसी बातों के लिए कभी मरीज की राय भी ली जाती है।

माया : अच्छा बाबा, भूल हो गई, बस ! इस बार माफ कर दो।

राजेश : प्रॉमिस तुम्हारा ऐसी भूल कभी नहीं करोगी ?

माया : (तुरन्त) प्रॉमिस, प्रॉमिस, एक बार नहीं, कहो जितनी बार प्रॉमिस।

([illegible]) हाँ ठीक है। अब जल्दी से दवाई लाओ।

माया : (पास आकर दवा की बोतल देते हुए) लीजिए, इसे जग का मे डालिए, मैं पानी लाती हूँ ।

[राजेश और माया दोनों मिलकर सरला को दवा [illegible] है ।]

दीदी, थोड़ी देर बाद मौसम्मी का जूस पीओगी न ? मैं मौसम्मी ले आई हू ।

सरला : अभी नहीं ।

माया : डॉक्टर ने कहा है कि ज्यादा भूखे पेट मत रहना ।

राजेश : माया, एक काम करते है । मैं मौसम्मी का जूस निकालता हूँ और तुम मुझे एक कप चाय बना दो ।

माया ([illegible]) आप जूस निकालेंगे ?

राजेश क्यो ? कोई एतराज है ?

माया नही तो, लेकिन (राजेश जिस तरह सरला की ओर देखता है कुछ आगे बोलते से रुक जाती है) अच्छा तो आप रस निकालिए, मैं चाय बनाकर लाती हूँ ।

[illegible]श थैंक्यू ।

[माया अन्दर जाती है । राजेश मौसम्मी काटकर मेज पर रखे हुए यन्त्र से मौसम्मी का जूस निकालने लगता है]

[illegible]रा आपको देर तो नही हो रही है ?

[illegible]श (मुस्कराते हुए) पहले तो यह लग रहा था कि देर हो रही है, पर अब रुकने को जी चाहता है ।

[सरला कुछ जवाब नहीं देती । माया चाय लेकर आती है ।]

ओह, वेरी नाइस सर्विस ।

[illegible]जेश : इट इज ओवर । (उठते हुए) जरा मेरे हाथ तो धुला दो ।

[माया राजेश के हाथ धुलाती है । राजेश चाय पीने लगता है । माया मौसम्मी के रस मे ग्लूकोज डालती है और सरला से पीने को कहती है ।]

माया : लो दीदी, पी लो ।

[illegible]रला : अभी रहने दो । मेरा जी नहीं कर रहा है ।

अंक तीन] [एकमो इस्यामन

आराम की जरूरत है। मैं कुछ दवाएँ लिख देता हूँ, उससे इन्हे पूरा आराम आ जाएगा।

□ □

[शाम का वक्त है। राजेश की गाडी गिरधारीलाल के घर के सामने आकर रुकती है।

गिरधारी : आइए, आइए, राजेश बाबू।

राजेश : नमस्ते।

गिरधारी : नमस्ते, बैठिए।

राजेश : अब कैसी है सरला की तबीयत ?

गिरधारी : बिल्कुल ठीक है। राजेश बाबू, आपके सब एहसानो का बदला न जाने हम किस जन्म मे चुका पाएँगे !

राजेश : कैसी बात कर रहे हैं आप। डॉक्टर आज भी आया था न ?

माया : (आते हुए) जी हाँ। और आज से तो दीदी को घूमने-फिरने की भी पूरी इजाजत मिल गई है।

राजेश : वेरि गुड। फिर तो कल हम सब घूमने चलेंगे। ठीक है न ?

माया : जरूर चलेंगे। लेकिन आप जरा जल्दी आइएगा। (सरला की ओर देखकर) दीदी चलोगी न ?

सरला : अभी मुझे बहुत कमजोरी महसूस हो रही है।

माया : बिस्तर पर पड़े-पड़े कमजोरी महसूस नही होगी तो और क्या होगा ?

राजेश : सरला, तुम बाहर की ताजी हवा लोगी तो कमजोरी भाग जाएगी।

गिरधारी : बेटी, राजेश बाबू ठीक कह रहे हैं। कल थोडी देर बाहर घूम आना।

सरला : जी।

माया : (मुस्कराते हुए राजेश से) क्या लेंगे आप ?

अंक तीन] [एलमो ...

राजेश : (सरला के हाथ सहलाते हुए मधुर स्वर में) [illegible]
कौन-सी चीज मुझे तुम्हारे इतने करीब खींच लाई है। पर सिर्फ इतना जानता हूँ कि तुम्हारे बिना अब मैं जिन्दा नहीं रह सकता। तुम मेरे रोम-रोम में बस गई हो। सरला कह दो कि शादी से इन्कार नहीं करोगी। नहीं बल्कि यह कह दो कि तुम मुझसे प्यार करती हो। सरला, एक बार कह दो कि मुझसे प्यार करती हो।

सरला : राजेश बाबू, मुझे और कुछ दिन यों ही जी लेने दीजिए। मैं किसी पर बोझ बनना नहीं चाहती, बोझ बनना नहीं चाहती। (सिसक पड़ती है)

राजेश : क्या इन्हीं कुछ दिनों के लिए तुम मेरा सहारा नहीं बन सकती? मेरा साथ नहीं दे सकती?

सरला : (आँखें पोंछते हुए) राजेश बाबू, यह दुनिया कभी इन्सान को अपनी मरजी से नहीं जीने देती। क्यों आप

राजेश : मैं इस दुनिया को आग लगा दूँगा, सरला। मुझे अपने रास्ते से कोई नहीं हटा सकता। अगर यह दुनिया मेरे रास्ते में आई तो तुम्हारे लिए मैं इस दुनिया की हर चीज का टकरा दूँगा।

सरला : जिन्दगी में कई बातों का कहना और सोचना आसान होता है, राजेश बाबू। लेकिन अब

राजेश : सरला क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है? क्या तुम्हें मेरे प्यार का यकीन नहीं? मैं तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूँ, सरला। कहो तो अपनी आँखें फोड़ सकता हूँ मगर मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं

[सरला राजेश के मुँह पर हाथ रखने की कोशिश करती है। उसकी आँखों से टप्-टप् आँसू गिरने लगते हैं।]

सरला : नहीं-नहीं, ऐसा न कहिए। मैंने आपको पहचान लिया है।
[राजेश सरला को अपने गले से लगा लेता है।]

राजेश : सरला, तुम मेरी ही हो। न जाने कितने जन्म-जन्मान्तरों से

अब तीन] [परदा गिरता

[illegible]
कौन-सी चीज़ मुझे तुम्हारे इतने करीब खींच लाई है। पर सिर्फ इतना जानता हूँ कि तुम्हारे बिना अब मैं जिन्दा नहीं रह सकता। तुम मेरे रोम-रोम में बस गई हो। सरला कह दो कि शादी से इन्कार नहीं करोगी। नहीं बल्कि यह कह दो कि तुम मुझसे प्यार करती हो। सरला एक बार कह दो कि मुझसे प्यार करती हो।

सरला : राजेश बाबू, मुझे और कुछ दिन यों ही जी लेने दीजिए। मैं किसी पर बोझ बनना नहीं चाहती, बोझ बनना नहीं चाहती। (सिसक पड़ती है)

राजेश : क्या इन्हीं कुछ दिनों के लिए तुम मेरा सहारा नहीं बन सकती? मेरा साथ नहीं दे सकती?

सरला : (आँखें पोंछते हुए) राजेश बाबू यह दुनिया कभी इन्सान को अपनी मरजी से नहीं जीने देती। क्या आप

राजेश : [illegible]

मेरी ही तो। न जाने क्यों और कैसे मैं तुमसे बिछुड़ गया था, अब फिर एक होकर तुमसे मिलने आया हूँ। (रुककर) चुप क्यों हो सरला? बोलती क्यों नहीं? (उसकी आवाज भर्रा जाती है)

सरला : राजेश बाबू, मुझे जिन्दगी की थकान उतार लेने दो, ताकि मैं आपकी नई जिन्दगी का साथ दे सकूँ।

राजेश : सरला ! (राजेश अपनी बाँहों को और कस लेता है। दोनों कुछ देर एक दूसरे की बाँहों में समाए रहते हैं।)

□ □

[उसी शाम राजेश जब घर आता है तो बहुत खुश नजर आता है। वह दीवानेखाने में दाखिल होता है तो शारदा को देखता है जो सोफे पर बैठकर कुछ पढ़ रही है।]

शारदा : (साश्चर्य) बेटे, आज इतनी जल्दी लौट आए।

राजेश : (पास आकर मुस्कराते हुए) हाँ माँ ! तुमसे कुछ जरूरी काम है। (उसके करीब सोफे पर बैठ जाता है)

शारदा : (आश्चर्य से) क्या काम है बेटा ?

राजेश : आज मैं तुम्हें एक खुशखबरी सुनाना चाहता हूँ।

शारदा : कौन-सी खुशखबरी बेटा ?

दयाल : (आकर राजेश को पानी का गिलास देते हुए) लगता है, आज छोटे सरकार बहुत ही खुश हैं।

राजेश : (गिलास लौटाते हुए) हाँ दयाल चाचा, बहुत खुश हूँ। जानते हैं क्यों ?

शारदा : ऐसी क्या बात है बेटा ! (आँखों से हर्ष के आँसू निकल आते हैं) न जाने आज कितने दिनों के बाद अपने बेटे के चेहरे पर मुस्कान देख रही हूँ। (आँखें पोंछती है)

राजेश : माँ मुझे इसलिए [illegible]
करने आ रहा हूँ। और इससे बढ़कर मेरे लिए खुशी की बात भला
क्या हो सकती है ? (जेब से लड़की की तस्वीर निकालकर) यह
देखो माँ।

शारदा (तस्वीर देखते हुए) बेटे देखने में तो परी लगती है।

राजेश (हँसकर) मानो [illegible] को अप्सरा ढूँढ लाया है
अप्सरा।

शारदा बेटे कौन है यह लड़की ? किस खानदान की है ?

राजेश माँ तुम्हें याद होगा कुछ दिन पहले मैंने कहा था कि मेरी कार का
एक्सिडेन्ट हो गया है और एक लड़की के सिर में गहरी चो
आई है।

राजेश हाँ बेटे।

राजेश : माँ, यह वही लड़की है। साधारण परिवार की है। मगर ना
बहुत ही ऊँचे हैं। (रुककर) हाँ इसमें एक बात और भी है।

शारदा क्या ?

राजेश : यह लड़की देख नहीं सकती माँ। और अब शायद जिन्दगी भ
नहीं देख सकेगी।

शारदा . क्या वह अन्धी है ?

राजेश हाँ माँ !

शारदा नहीं-नहीं, यह हमारे घर की बहू नहीं बन सकती। एक माँ अप
बेटे की शादी किसी अंधी लड़की से कैसे कर सकती है ? यह न
हो सकता, यह नहीं हो सकता।
(आँखों से आँसू बह निकलते हैं)

राजेश : माँ, अगर मैं अन्धा होता तो क्या तुम मेरी शादी नहीं करती
क्या किसी के सामने अपने बेटे के लिए हाथ नहीं फैलाती ?

शारदा : अन्धे हों तुम्हारे दुश्मन। आज यह कैसी खुशी लेकर तुम माँ
पास चले आए ? (और रोती है)

राजेश : ठीक कहती हो माँ। शायद इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। ५.

सिर्फ तब रो उठता है जब मुसीबत उसके सिर पर आ पड़े। वर्ना औरों की हालत पर तो उसे दया भी नहीं आती।

[शारदा वहाँ से उठकर चली जाती है।]

दयाल छोटे सरकार, ऐसा क्या रोग हुआ है बिटिया को जो ठीक नहीं हो सकता ?

राजेश (उठते हुए नाराज होकर) दयाल चाचा, रोग बिटिया को नहीं इस दुनिया को हुआ है। (चला जाता है)

□ □

[दूसरे दिन सुबह डाइनिंग टेबल पर बलराज, शारदा, राजेश और सुरेन नाश्ता ले रहे हैं। मगर नाश्ता खत्म होने तक कोई किसी से कुछ बात नहीं करता। जब सब नाश्ता खत्म कर लेते हैं तो राजेश उठकर जाने लगता है। तभी बलराज उसे रोकते हैं।]

लराज : राजेश बेटे।

राजेश : (रुककर) जी !

लराज : (जेब से लिफाफा निकालकर राजेश की ओर बढ़ाते हुए) लो बेटे यह एक लाख रुपये का चैक है। इसे अपने पास रख लो।

राजेश : (आश्चर्य से) लेकिन किस लिए पिताजी ?

[बलराज लिफाफा राजेश के हाथ मे दे देता है।]

लराज : (मुस्कराकर) क्या यह भी मुझे समझाना होगा ? (उठकर) बेटे, कल रात तुम्हारी माँ ने सब कुछ बता दिया है। यह उस अंधी लड़की की कीमत है, जिससे तुम शादी करना चाहते हो। जाकर उसे यह रकम चुका दो ताकि वह तुम्हें हमेशा के लिए भूल सके।

बलराज : (हंसकर पलटते हुए) क्या यह कम है? अगर तुम चाहो तो मैं····

राजेश : (एकदम बिगड़कर) इन्सानों के सौदे करना आपने सीखा है पिताजी। मैंने नहीं।

बलराज : (पास आकर) तुमने सीखा नहीं है तो दुनिया तुम्हें एक न एक दिन यह शिक्षा देगी। (कंधे पर हाथ रखते हुए) अभी तुमने इस दुनिया को पहचाना नहीं है। प्रेम का जाल एक धोखा है बेटे। इन्सान नहीं, पैसे के सामने लोग झुकते हैं। जानते हो, दुनिया में हर इन्सानी रिश्ता प्यार को सिर्फ पैसे की आड़ में ही देखता है। तुम्हें इन बातों को समझने में अभी बहुत देर लगेगी। पर मैं यह नहीं चाहता कि तुम अपनी नासमझी के कारण अपने सही रास्ते से भटक जाओ और जिन्दगी को बरबाद कर दो। तुम चाहो तो उस लड़की को एक नहीं दो लाख दे सकते हो। वह पैसे एक तो क्या उसके दो जन्मों तक बैठकर खाने से भी खत्म न हो पाएँगे

राजेश : आपके और मेरे उसूलों के बीच जमीन-आसमान का फर्क है, आज मुझे इस बात का पूरा यकीन हो गया है।

बलराज : (मुस्कराते हुए) बेटे, उसूलों की बात कहने और सुनने के लिए होती है। उसूलों से कहीं पेट नहीं भरता। उसूलों की बात कहने वाले भी पैसे को ही तरसते हैं। बिना पैसे के उसूलों की कोई पूछ नहीं होती। (रुककर) यह शुक्र करो कि तुम इस घर में पैदा हुए हो, वरना सड़कों पर कई राजेश दो वक्त की रोटियों के लिए मारे-मारे फिरते हैं। उन्हें कोई पूछता तक नहीं।

राजेश : आपकी नजरों में हो सकता है, लेकिन मेरी नजरों में इन्सान से बढ़कर कोई नहीं।

बलराज : (मुस्कराकर) क्योंकि तुम इस घर में पले हुए हो। तुमने अपने बाप की तरह इस दुनिया की ठोकरें नहीं खाईं, वरना खुद यह समझते कि लोग इन्सान को उसकी शख्सियत से नहीं, ... और पैसे से पहचानते हैं। (थपककर) बेटे, तुम अपनी यह

छोड़ दो, इसी में तुम्हारी भलाई है। यह सब मैंने तुममें इसलिए कहा है कि मैं तुम्हारा बाप हूँ और इस दुनिया में मुझसे बढ़कर तुम्हारी भलाई के लिए और कोई नहीं सोच सकता। मेरी बात मान जाओ बेटे।

राजेश : पिताजी, मेरे लिए अब इसका सवाल ही पैदा नहीं होता। मैंने यह शादी करने का फ़ैसला कर लिया है। (लिफ़ाफ़े को मेज पर रख देता है।)

बलराज : (क्रोधित होकर) क्या यह तुम्हारा आख़िरी फ़ैसला है ?

राजेश : हाँ पिताजी।

बलराज : तो अब मेरा भी फ़ैसला सुन लो। तुम्हें अपनी और ख़ानदान की इज्जत की परवाह नहीं है, लेकिन हम अभी समाज और दुनिया की परवाह है। अगर तुमने यह शादी कर ली तो तुम्हारे लिए इस घर के दरवाजे हमेशा-हमेशा के लिए बन्द हो जाएँगे। (जाते हुए) मैं समझूँगा कि तुम मेरे लिए मर चुके हो।
[बलराज गुस्से में घर से बाहर निकल जाते हैं।]

☐ ☐

[शाम गहरी हो चुकी है। सोच में डूबा राजेश नरीमन पॉइंट पर बैठा हुआ, बम्बई शहर का नजारा देखते-देखते एक पल के लिए अपने आप में कहीं खो जाता है। तभी एक बूढ़े भिखारी की आवाज से वह चौंकता है।]

भिखारी : सुबह से भूखा हूँ साँब। गरीब पर कुछ दया करो।

राजेश : (भिखारी के गले में लटकती हुई हारमोनियम की पेटी को देखकर) बाबा आप गाना गाते हैं क्या ?

भिखारी : साँब, गाता तो हूँ लेकिन आज गाते-गाते गला सूख गया है। खाने

राजेश : (जेब से पाँच रुपये का नोट निकालकर देते हुए) यह लीजिए।

भिखारी : (आश्चर्य से) पाँच रुपये !

राजेश : बाबा, रख लीजिए। आपके काम आएँगे।

भिखारी . (लेकर) आपके बाल-बच्चे खुशी रहें। (आँख से आंसू निकल पड़ते हैं। जाते लगता है, फिर जाते-जाते अचानक रुककर पलटते हुए) सा'ब गाना सुनोगे ?

राजेश : (मुस्कराकर) अगर आप सुना दें।

भिखारी : (पास आकर हारमोनियम की पेटी गले से उतारकर नीचे रखते हुए) सा'ब, बम्बई शहर में नए आए हो क्या ?
[भिखारी की बात सुनकर राजेश के चेहरे पर हल्की-सी मु तान उभर आती है।)

राजेश . हाँ, अभी यहाँ बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए ।

भिखारी : यह बड़े-बड़े चोरों की नगरी है सा ब, जरा सँभलकर रहना। लोग मतलब के यार हैं यहाँ। सिर्फ पैसों के यार। बस कोई नसीब वाले को ही सच्चा यार मिलता है यहाँ।

राजेश वात तो आपकी सही है। यहाँ तो ढूँढ़ने पर भी शायद ही कोई सच्चा यार मिल सके। लेकिन आपका कोई ऐसा यार है क्या यहाँ ?

भिखारी : कहाँ सा'ब ! हमसे तो जो पल-दो पल के लिए रुककर हमदर्दी से बात कर ले, वही हमारा यार बन जाता है।

राजेश (तनिक मुस्कराते हुए) फिर तो इस शहर में आपके ऐसे बहुत यार होंगे ?

भिखारी : मुश्किल से कभी कोई मिलता है सा'ब। भिखारी का कौन यार . बनता है ?

राजेश : (आश्चर्य से) अरे, लेकिन आपने तो अभी-अभी यह कहा था कि आप गाना गाते हैं। फिर इसमें भीख माँगने की बात कहाँ से आ गई ? बल्कि आप तो लोगों का दिल बहलाते हैं।

भिखारी : सा'ब, गाना गाकर हाथ फैलाने पर भी तो कोई मुश्किल से कुछ देता है। सब भिखारी कहकर ही तो टालते हैं।

अक तीन] [एवमो ...

[रास्ते पर आते-जाते लोग गाना सुनने के लिए जरा-सी देर रुकते हैं और जाने लगते हैं ।]

जमाने से हँसकर मुलाकात करना
जो दिल में है, लब से वही बात करना
जमाना अगर लाख नफरत करे भी
मुहब्बत हर एक से तू दिन-रात करना ।
यहाँ पे रहेगा यहाँ का झमेला
यहाँ तुझको चलना है राही अकेला ।

[राजेश गाना सुनकर, बहुत प्रभावित होता है]

जेश . वाह, आप तो बहुत खूब गाते हैं !

ारी . (मुस्कराते हुए) फिर भी दो वक्त के लिए पूरी रोटी नहीं मिलती ।

जेश : आप रहते कहाँ हैं ?

ारी वहीं जहाँ कोई घर नहीं ।

जेश : मतलब ?

ारी · यह धरती बिछौना है और आसमान छत ।

जेश मगर कोई तो होगा आपका ?

ारी . कोई नहीं है साब-पैसा जो नहीं है । पैसा होता तो माँ होती, बाप होता, भाई-बहन-सब-कोई होता । पैसा नहीं है तो यहाँ किसी का कोई नहीं ।

ाजेश आप भी एक अजीब इन्सान हैं !

खारी : इन्सान नहीं साब, भिखारी कहिए । (रुककर) इन्सान तो कभी था जब अपनी खेती थी । घर था । लेकिन कर्ज में सब-कुछ डूब गया । मैं घर में बेघर हो गया । किसान से मजदूर बन गया । अब तो इन बूढ़ी हड्डियों से मजदूरी भी नहीं होती साब । आखिर मजदूर से गाने वाला बन गया हूँ—पैसा जो नहीं है, इन्सान से भिखारी बन गया हूँ ।

राजेश : फिर भी आप इन्सान तो हैं ।

खारी : (उठकर आँखों में आँसू लिए) बहुत दिनों के बाद आज आप

[रास्ते पर आने-जाते लोग गाना सुनने के लिए जरा-सी देर रुकते हैं और जाने लगते हैं।]

जमाने से हँसकर मुलाकात करना
जो दिल मे है, लब से वही बात करना
जमाना अगर लाख नफरत करे भी
मुहब्बत हर एक से तू दिन-रात करना।

यहाँ पे रहेगा यहाँ का झमेला
यहाँ तुझको चलना है राही अकेला।

[राजेश गाना सुनकर, बहुत प्रभावित होता है]

राजेश : बाबा, आप तो बहुत खूब गाते हैं!

भिखारी : (मुस्कराते हुए) फिर भी दो वक्त के लिए पूरी रोटी नही मिलती।

राजेश : आप रहते कहाँ हैं?

भिखारी : वहीं जहाँ कोई घर नहीं।

राजेश : मतलब?

भिखारी : यह धरती बिछौना है और आसमान छत।

राजेश : मगर कोई तो होगा आपका?

भिखारी : कोई नही है सा'ब–पैसा जो नही है। पैसा होता तो माँ होती, बाप होता, भाई-बहन-सब-कोई होता। पैसा नही है तो यहाँ किसी का कोई नहीं।

राजेश : आप भी एक अजीब इन्सान हैं!

भिखारी : इन्सान नही सा'ब, भिखारी कहिए। (रुककर) इन्सान तो कभी था जब अपनी खेती थी। घर था। लेकिन कर्ज में सब-कुछ डूब गया। मैं घर से बेघर हो गया। किसान से मजदूर बन गया। अब तो इन बूढ़ी हड्डियों से मजदूरी भी नहीं होती सा'ब। आखिर मजदूर से गाने वाला बन गया हूँ—पैसा जो नहीं है, इन्सान से भिखारी बन गया हूँ।

राजेश : फिर भी आप इन्सान तो हैं।

भिखारी : (उठकर आँखों में आँसू लिए) बहुत दिनों के

मनोज नौकरी करके क्या करोगे ?

राजेश गुजारा। अब घर वालों से जुदा होने की नौबत आ गई है।

मनोज लेकिन किस लिए ? आखिर बात क्या है ? बता तो सही।—अरे हां कहीं सरला वाली बात तो नहीं है ?

राजेश हां दोस्त ! घर वालों को यह हरगिज मंजूर नहीं कि मैं सरला से शादी करूँ। लेकिन मेरा फैसला अटल है।

मनोज (मुस्कराते हुए) ऐंड सो, कान्ग्रेच्युलेशन्स डियर। तुम वाकई एक ऐसा रैडिकल स्टेप लेने जा रहे हो जो शायद आज तक किसी मोहब्बत करने वाले ने नहीं लिया होगा। मगर बुरा न मानो तो एक बात कहूं ?

राजेश कहो !

मनोज दोस्त यह दुनिया तुम्हारे-जैसे नर्म दिल इन्सान के जीने के लिए नहीं है। यहां जीने के लिए तो दिल पत्थर का चाहिए, पत्थर का ! समझे !

राजेश दुनिया न सही तुम्हारे जैसे दोस्त तो हैं !

मनोज चलो यह भी ठीक है ! (रुककर) वैसे रिजी तुम बिल्कुल ठीक मौके पर आए हो। जानते हो, कुछ दिनों से हमें अपनी नई 'प्राइमडेल' फैक्टरी के लिए बिजनेस मैनेजर की तलाश है। और तुम से बढ़कर कैंडिडेट हमें और कहाँ मिल सकता है ?

राजेश (आश्चर्य से) लेकिन तू तो कह रहा था कि तुम्हारा एक पार्टनर उसे मैनेज कर रहा है !

मनोज यार, उसका यहां दिल नहीं लगता। बाइ द एण्ड आफ दिस मन्थ ही इज लीविंग फॉर होम। आई मीन बैक टु स्टेट्स।

राजेश ओह, आई सी। (हाथ बढ़ाते हुए) थैंक्यू वेरी मच डियर।

मनोज क्यों फालतू बात कर रहा है ! सुन, इस पोस्ट के लिए शुरू में अठारह सौ तनख्वाह है और इसके अलावा गाड़ी और क्वार्टर्स की फैसिलिटी भी।

राजेश बस यार। इससे ज्यादा और क्या चाहिए।

मनोज : (हँसते हुए) अगर चाहिए भी तो बंदा हर वक्त तुम्हारे लिए मौजूद है ।

राजेश : दोस्त, तूने तो हर मौके पर दोस्ती का फ़र्ज़ निभाया है । लेकिन आज तक मैंने तुम्हारे लिए एक भी ऐसा काम नहीं किया ।

मनोज : रिजी, हाउ मीन यू आर ! यदि मैं तेरी जगह पर होता तो क्या तू मुझे इस कदर सोचने पर मजबूर कर देता ?

राजेश : नहीं दोस्त, ऐसी बात नहीं है । मगर कभी-कभी यह दिल यों भर आता है कि एहसानों का बोझ बर्दाश्त नहीं हो पाता ।

मनोज : अरे यार, दोस्त, दोस्त पर कभी कोई एहसान नहीं करता । फ़र्ज़ नहीं निभाता । वक्त पर जो काम न आए वह दोस्त कैसा ! वह दोस्ती किस काम की ! (रुककर) और फिर तुमने मुझ पर क्या कम एहसान किया है ! अगर मुझे तुमने अपना यह विश्वास न दिया होता हो तो किस पर अपना यह प्यार बरसाता ? दोस्त, एहसान तुमने मुझ पर किया है । मैंने तुम पर नहीं ।

राजेश : मनोज !

मनोज : रिजी, आइन्दा कभी ऐसी बात अपने मुँह से न निकालना ।

राजेश . (गम्भीर होकर) मनोज, तुम तो मेरे कहने से पहले ही मेरे मन की बात समझ लेते हो । लेकिन घर के लोग सब कुछ बताने पर भी कुछ नहीं समझ सकते । कहते हैं पागलपन कर रहा हूँ । कभी-कभी सोचता हूँ, माँ-बाप, भाई-बहन यह सब रिश्ते अगर सिर्फ़ कहने के लिए ही हैं, तो आखिर किस काम के हैं ? क्यों न इन रिश्तों को तोड़ दिया जाए ?

मनोज : दोस्त, इसके बारे में मैं तुम्हें बहुत कुछ तो नहीं कह सकता, लेकिन इतना जरूर कहता हूँ कि सच्चा रिश्ता खून से नहीं, बल्कि प्यार से होता है। उस प्यार से जिसमें किसी को एक दूसरे से कोई गरज न हो ।

[एक पल के लिए दोनों के दिल इन्सानी रिश्तों की गहराई में डूब जाते हैं । फिर मनोज दिल की कमजोरी से दूर होने का यत्न करते हुए मुस्करा उठता है [illegible]

[illegible] : अरे बातों-बातों में [illegible] भूल गया ।

राजेश : कौन-सी खुशखबरी।

मनोज : (मेज पर हाथ पटकते हुए) मैं बाप बन गया हूँ, बाप !

राजेश : रीअली ! (हाथ बढ़ाकर) कॉनग्रेच्युलेशन्स् ! भाभी कैसी हैं ?

मनोज : ओह, हमारी घोड़ी को क्या होना है ! बिल्कुल तन्दुरुस्त है। अ
अब थोड़े ही दिनों में अपने छोटे-से मेहमान को साथ लेकर लौ
आएगी।

राजेश : अच्छा, यह तो बता, हम चाचा कहने वाला कौन पैदा हुआ है–
भतीजा या भतीजी ?

मनोज : मेरे शेर, जिन्दगी में आज तक मनोज कभी हारा नहीं है। तु
चाचा कहने वाला नहीं, कहने वाली पैदा हुई है।

राजेश : दोस्त, मानता हूँ तुम्हें ! फिर तो अब वाकई तुम्हारे घर का चौ
दार बनना पड़ेगा।

मनोज : यह बात हुई न !
[दोनों हँसते हैं।]
बोल, क्या खाएगा-पिएगा ?

राजेश : अभी-अभी घर से चाय-नाश्ता लेकर निकला हूँ। बस
चलता हूँ। (उठ जाता है)

मनोज : अरे आज हम किसी ...

) —चोप !

शारदा : (आह भरते हुए) बेटा, क्या तुम अपनी माँ को भी छोड़कर जा रहे हो।

राजेश : माँ, जब तुमने खुद ही यह फैसला किया है, तो मुझसे क्यों पूछ रही हो?

शारदा : क्या फैसला किया है मैंने?

राजेश : कि सरला से मैं न तो शादी करूँ, और न उसे इस घर में लाऊँ। अब सिवाय इस घर छोड़ने के मेरे लिए और रास्ता ही क्या हो सकता है?

शारदा : बेटे, यह तुम्हारी जिद है। माँ-बाप जो भी करते हैं अपने बच्चों की भलाई के लिए ही करते हैं। भला एक माँ अपने बेटे का बुरा क्या कभी सोच सकती है? (और रोती है।)

राजेश : माँ, अब मैं अपना भला-बुरा अच्छी तरह समझता हूँ। लेकिन तुम लोग यह नहीं चाहते कि मैं कभी अपनी मर्जी से जी सकूँ। अगर तुम इसे अपना प्यार कहती हो तो वह प्यार अन्धा है। बेकार है। मैं हरदम किसी और की नजरों से इस दुनिया को नहीं देख सकता। जी नहीं सकता।

शारदा : (भर्राई हुई आवाज में) बेटे, तुम एक माँ के प्यार के लिए भी यह कह रहे हो! माँ का प्यार तो दुनिया में कहीं किसी कीमत पर नहीं मिलता। तुम क्या जानो जिसे माँ का सुख नसीब नहीं होता, वह कितना अभागा होता है।

राजेश : माँ, जिस प्यार की कोई सूझ न हो, समझ न हो, जो प्यार औरों की भलाई के लिए सोच नहीं सकता, ऐसा प्यार अगर प्यार भी है तो किसी काम का नहीं!

शारदा : नहीं, नहीं, बेटे, जिस माँ ने तुम्हें अपनी कोख से जन्म दिया है जिसने तुम्हें अपने हाथों से पाला है जो तुम्हारी नस नस जानती है उस माँ के लिए ऐसा मत कहो बेटे, ऐसा मत कहो!

राजेश : माँ, तुमने यह अपने स्वार्थ में किया था और आज उसी की तुम मुझसे कीमत माँग रही हो!

शारदा : हे भगवान! आज मेरे लाल को यह क्या हो गया है!

[illegible]

[तैयार होकर जाते-जाते राजेश शारदा के पाँव छूने लगता है।

राजेश : माँ, मुझे आशीर्वाद दो। और पिताजी से कह देना कि मैं उन
लिए मर चुका हूँ। (अटैची हाथ में उठा लेता है)

शारदा : (रोते हुए) नहीं-नहीं बेटे, घर से जाते-जाते ऐसी बात अ
मुँह से ....

[राजेश अपने कमरे से बाहर निकलकर सीढ़ियाँ उतर जाता है
नीचे दीवानखाने में दयाल चाय की ट्रे लिए हुए खड़ा है।]

दयाल (भावुक होकर) छोटे सरकार मना नहीं करना। जाने क
बस मेरे हाथ की चाय पीते जाइए। आपको बहुत पसंद है न
(आँखें डबडबा आती हैं)

राजेश (अटैची नीचे रखते हुए) दयाल काका !

[दयाल के हाथ से कप लेकर राजेश चाय पीने लगता है। दया
की आँखों से टपटप आँसू गिरने लगते हैं।]

दयाल : (आँखें पोंछकर) सरकार, अब मेरी तो बहुत कम उम्र रह ग
है। कहीं भूल न जाइएगा।

राजेश : कैसी बात कर रहे हैं, दयाल काका !

[राजेश सामने खड़े दयाल के पैर छू लेता है और झट से
से बाहर निकल आता है। दयाल कुछ बोल नहीं पाता, लेकि
उसकी आँखें घर छोड़कर जाते हुए राजेश पर आशीर्वाद ब
जाती हैं।

— ।

[जैसे ही राजेश अपनी गाड़ी को बँगले के गेट से बाहर निकाल
है, सामने से कार लेकर सुरेश आ जाता है। दोनों एक-दूसर
पुकारते हैं और गाड़ी को रोककर नीचे उतर आते हैं]

सुरेश : (गले से लगाते हुए) भैया !

अब गौर] [एकाकी रिक

[राजेश सुरेन को अपने गले लगाकर उसकी पीठ थपथपाता है ।]
थोड़ी देर और मेरी राह देख ली होती !

राजेश पगले ! मैंने सोचा, शायद तुम कहीं काम में न लग गए होगे ?

सुरेन : एक बात पूछूं भैया ?

राजेश : (आश्चर्य से) क्या ?

सुरेन : कहीं भीतर ही भीतर मुझसे भी रिश्ता तोड़कर तो नहीं जा रहे हो ?

राजेश : तुमसे तो मैंने कभी कुछ नहीं छिपाया सुरेन ! फिर आज यह कैसी बात कर रहे हो ?

सुरेन : भैया ! (फिर राजेश के गले लग जाता है) मैंने और माँ ने पिताजी को मनाने की बहुत कोशिश की, पर तुम तो""""

राजेश जानता हूँ सुरेन । सब जानता हूँ । खैर छोड़ो इस बात को । यह बताओ, तुम तो शादी पर आओगे न ?

सुरेन तुम्हें कोई शक है भैया ? मेरा तो जी चाहता है कि अभी तुम्हारे साथ चल दूं ।

राजेश . (थपककर) नहीं सुरेन, तुम यहीं रहो । माँ का ध्यान रखना ।
[सुरेन की आँखें छलक आती हैं ।]
अरे पगले, मैं तुम्हें छोड़कर थोड़े ही दूर जा रहा हूँ ! तुम तो हमेशा ही मिलते रहोगे । (दोनों भाई एक दूसरे के गले लग जाते हैं । फिर राजेश अपनी गाड़ी लेकर चला जाता है)

□ □

[शाम कुछ गहरी हो चुकी है । राजेश गिरधारीलाल के घर आता है । माया, सरला और गिरधारीलाल घर में कुछ बातें करते हुए बैठे हैं ।]

गिरधारी : आइए-आइए, राजेश बाबू !

राजेश : नमस्ते बाबूजी !

गिरधारी : नमस्ते ! बैठिए।

राजेश : (बैठते हुए) लगता है अभी-अभी आप बाहर से लौटे है।

गिरधारी : मैं और माया थोडी खरीदारी करने के लिए बाजार गए हुए थे

राजेश : (आश्चर्य मे) किस खरीदारी के लिए ?

गिरधारी : वैसे तो दहेज मे देने के लिए मेरे पास है ही क्या ! फिर भी

राजेश : बाबूजी, समझ मे नही आता, आखिर एक बाप दहेज म अप बेटी से बढकर और क्या दे सकता है।

गिरधारी (खुशी के मारे आँखे डबडबा आती हैं) हमारा सौभाग्य है कि आ जैसे देवता हमे दामाद मिले हैं।

राजेश . बाबूजी, आज मैं आपसे कुछ जरूरी बात करने आया हू।

गिरधारी : (आँखे पोछते हुए) कहिए।

राजेश : हमारे सिविल मैरिज की डेट अब तय हो चुकी है। दूसरी यह है कि शादी के बाद आपको और माया को हमारे साथ कर ही रहना होगा।

गिरधारी (तनिक मुस्कराते हुए) राजेश बाबू, यह कैसे हो सकता है ? बाप अपनी ब्याही लडकी के घर कैसे रह सकता है। यह दुनि क्या कहेगी।

राजेश बाबूजी, दुनिया कुछ भी कहे, मैं उसकी परवाह नही करता। अ मुझे इस दुनिया की ही परवाह होती तो मैं यह शादी की बात सोच सकता था। क्या आप मुझे अपना बेटा समझकर हमारे स नही रह सकते ? क्या आपको अपनों से ज्यादा दुनिया की पर है ?

गिरधारी और कुछ मत कहिए राजेश बाबू। और कुछ ······· आँसू निकलते है)

राजेश : क्या आप सोचते है कि आपको और माया को इस हालत मे छ कर हम कभी सुख-चैन से रह सकते है ? (रुककर) क्यों न इस छोटी सी जिन्दगी मे कुछ दिन साथ मिलकर चैन से जी बाबूजी, आखिर यह जिन्दगी फिर तो मिलने वाली नही है।

[राजेश की बात पर माया और सरला की आँखों में भी आँसू उमड़ आते हैं। गिरधारी लाल आँखें पोंछते हुए अपने आप पर काबू पाने का यत्न करने लगते हैं।]

राजेश : आप सब मेरी बात पर नाराज हैं क्या ?

गिरधारी : जिस मन्दिर के द्वार पर भगवान् खुद चलकर आए, उसका पुजारी उनसे ...

राजेश : आप खामखाह मेरी इतनी तारीफ करके मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं। मैं तो सिर्फ एक इन्सान ही बना रहना चाहता हूँ।
[कुछ क्षण चुप्पी में कटते हैं।]
(गिरधारीलाल से) अब आज्ञा दीजिए। फिर आऊँगा।

माया : (तुरन्त) घर पर तो कोई है नहीं, फिर जाने की अभी क्या जल्दी है ?

राजेश : (मुस्कराते हुए) यों ही घूमते फिरते घर पहुँचने में कुछ देर हो जाएगी।

माया : यह क्यों नहीं कहते कि अभी कहीं होटल में जाकर खाना खाना है, और फिर घर पहुँचना है। (मुँह बनाते हुए) एक ओर आप चाहते हैं कि मैं और बाबूजी भी आपके साथ चलकर रहें, दूसरी ओर खुद एक बार का खाना खाने के लिए भी इस घर को पराया समझते हैं।

राजेश : नहीं माया, ऐसी बात नहीं है। तुम मुझे गलत समझ रही हो।

गिरधारी : अरे, बातों-बातों में यह ध्यान ही नहीं रहा। माया बेटी ने ठीक याद दिलाया। खाना साथ ही खाइएगा।

राजेश : बाबूजी, दरअसल अभी बिल्कुल भूख नहीं है।

सरला : तो थोड़ी देर रुककर, यहीं कुछ खाकर जाइएगा।

राजेश : (हँसकर) अच्छा, जैसी तुम्हारी मरजी।

माया : (तुरन्त) देखा बाबूजी, दीदी की बात झट से मान ली, और हमारी बातों को टालते रहे।

माया : (उठते हुए) बाबूजी, आप थोड़ी देर बातें कीजिए, तब तक मैं औ
दीदी थोड़ी-सी तैयारी कर ले ।

राजेश . अरे इसकी क्या जरूरत है ।

माया : (मुस्कराते हुए) आप ही ने तो दीदी से कहा था कि जिन्दगी
आपको दो ही शौक है—खाने का और सोने का ! (सरला के पा
आकर उसका हाथ पकड़कर) चलो दीदी ।

[सरला और माया बगल के कमरे में जाने लगती हैं ।

□ □

सुरेन : (एकदम नाराज होकर) ओह भाभी कितनी बार मना किया है फिर भी तुम इस बात को दोहराती हो।

सरला . सचमुच नाराज हो गए क्या ?

सुरेन : और नहीं तो क्या ? भाभी, इस दुनिया मे सिर्फ दो मनुष्यो पर मैं देव तुल्य श्रद्धा रखता हूँ—भैया पर और तुम पर यहाँ ऐसा मजाक मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। (सोफे पर बैठ जाता है)

सरला . (पास आकर) अच्छा बाबा, भूल हो गई ! अब फिर कभी नहीं कहूँगी, बस !

सुरेन वादा करती हो ?

सरला हाँ-हाँ, वादा करती हूँ। अब पहले यह बताओ कि आज कितने दिनो के बाद अपने भैया और भाभी की याद आई है

सुरेन क्या करूँ भाभी ! मिल की इतनी जिम्मेदारियाँ सिर पर आ पड़ी हैं कि वक्त ही नही मिलता। वैसे कहीं भी रहूँ, भैया की और तुम्हारी याद हर पल मेरे साथ रहती है।

सरला : सच ! भाभी की याद भी इतनी ही आती है ?

सुरेन : नहीं तो क्या भाभी ! आजकल के जमाने मे सबको कहाँ ऐसी भाभी मिलती है। भाभी का तो सिर्फ एक नाम ही रह गया है

सरला अच्छा तो फिर तारीफ शुरू हो गई।

सुरेन भाभी, मैं तुम्हारी तारीफ नही कर रहा हूँ, बल्कि जो आजकल समाज मे देख रहा हूँ, वही तुम्हे बता रहा हूँ। मेरा एक दोस्त है। उसकी भाभी पी-एच डी. हैं। जब उसके घर जाता हूँ, और अगर कभी उनसे बात होती है तो लगता है, जैसे वे क्लास-रूम में लेक्चर डिलीवर कर रही हों। (गम्भीर होकर) भाभी, जिन्दगी में इन्सान पढ़-लिखकर या कुछ बनकर कितना अनरीएलिस्टिक हो जाता है। जिन्दगी से कितना दूर हट जाता है। आइ हेट दिस, आइ रिअली हेट दिस हिपॉक्रिसी इन मैन।

सरला : (तनिक मुस्कराते हुए) और कुछ भी कहना है आगे ?

सुरेन : भाभी, सोचता हूँ, आखिर क्यों इन्सान बाहर से कुछ और होने का दिखावा करता है, अन्दर से और अपने ही भीतर यह दीवार खड़ी कर आखिर उसे क्या हॉसिल हुआ है ?

अंक चार] [एकसौ इक्या

सरला : हाँ, यही तो वह दीवार है जिसने इतने करीब होते हुए भी इन्सान से इन्सान को कभी एक नहीं होने दिया, जिसने छोटी सी धरती के टुकड़े को देशों के नाम देकर, एक-दूसरों के बीच कभी न मिटने वाला जहर फैला दिया है। और इससे भी बढ़कर जिसने जाति, धर्म, परिवार और गृह इन्सान में दरारें डालकर एक नहीं रहने दिया। क्यों यही सब तुम कहना चाहते हो न ? (हँस पड़ती है)

सुरेन : भाभी, शायद तुम इसे मजाक समझ रही हो। लेकिन मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। अगर इन्सान इस छोटी-सी बात को समझ ले तो शायद इस दुनिया का हर दुःख, हर मुसीबत

सरला : दूर हो जाए, यही न ?

सुरेन : हाँ भाभी, बिल्कुल यही।

सरला : तो अब मैं तुम्हें बताती हूँ, जिसे तुम छोटी-सी बात कह रहे हो न, वह इतनी छोटी नहीं, जितनी तुम समझ रहे हो। न जाने सदियों से कितने ही महापुरुष इस संसार को हमेशा यही बात समझाने की कोशिश करते आ रहे हैं। लेकिन जानते हो, जवाब में इस संसार ने क्या किया है ? कभी तो अबोध बालक कहकर सिर्फ उनकी बातें सुनता रहा और कभी पागल कहकर उसे सूली दे दी—पत्थर फेंके। कभी तिरस्कार किया, तो कभी अत्याचार हर सदी में, हर पीढ़ी ने उस दीवार पर ईंटों की परतें ही चढ़ाई हैं। उसे भेद और घृणा से सींचकर और पुख्ता किया है। अब तुम्हीं बताओ, क्या तुम या मैं यह बात इस दुनिया को समझा सकते हैं ? (हँसकर) हम अपने घर वालों को भी नहीं समझा सकते जो उस दीवार की सबसे ऊपरी सतह हैं।

सुरेन : लेकिन भाभी, यह सिलसिला हर शुरू करना ही होगा। रिमेम्बर नेपोलियन्स वर्ड्स ? नथिंग इज इम्पॉसिबल इन दिस वर्ल्ड।'

सरला : (हँसते हुए) जानते हो, दुनिया में इस तरह से सोचने वाले को

सरला : पहले तो पागल कहते हैं, और अगर फिर भी न माने तो देवता।

सुरेन : मगर भाभी, कहने वाले इसकी आड़ में सिर्फ अपनी कमजोरियों को छिपाने का ही यत्न करते हैं, और कुछ नहीं।

सरला : खैर छोड़ो इन बातों को ! इतने दिनों के बाद यही सब कुछ बताने आए हो क्या ? यह तो बताया ही नहीं कि घर पर माँ और पिताजी कैसे हैं ?

सुरेन : क्या बताऊँ भाभी, उनका दिल तो अब चूर-चूर हो गया है वे आप दोनों की जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकते। लेकिन क्या करें, वे भी इस हिपोक्रेसी के शिकार बने हुए हैं। दिल में कुछ रखते है, और जुबान पर कुछ और।

सरला न जाने कितनी बार आपके भैया को मैं समझाती हूँ, कम-से-कम एक बार पिताजी और माँ से मिल आएँ मगर कोई-न-कोई बहाने से मेरी इस बात को वे टाल जाते है।

सुरेन . जानता हूँ भाभी, मैं भैया को अच्छी तरह जानता हूँ। वे अपनी बात कभी नहीं छोड़ेंगे। और न ही पिताजी यह कर सकते हैं। इन दोनों के बीच में अगर कोई पिसा जा रहा है तो वह है माँ तुम तो एक माँ का दिल ·· ··· खैर छोड़ो भाभी। दुनिया जैसे चल रही है चलने दो।

{ कुछ क्षण चुप्पी में कटते हैं। }

सरला : अच्छा तो बताओ, क्या खाओगे ?

सुरेन : भाभी, कोई खास इच्छा नहीं है। फिर घर में भी तो कोई नहीं है।

सरला : (मुस्कराते हुए) मैं जो हूँ। तुम इसकी चिन्ता मत करो। अभी सब आते ही होंगे। आज तुम इतने दिनों के बाद आए हो और अगर भाभी के हाथ का कुछ खाए बिना लौटोगे, तो फिर अपने दोस्त की प्रोफेसर भाभी की तरह इस भाभी को भी बदनाम करने लगोगे। (सोफे से उठकर किचन की ओर बढ़ने लगती है। सुरेन भी उसके पीछे-पीछे आता है।)

दिया। अगर ऐसा खाना रोज मिला करे तो हो सकता है कि एक दिन मैं दारासिंह को बीट कर दूँ।

[सब हँसते हैं।]

सरला : भगवान् से मैं हरदम प्रार्थना करती हूँ, कि किसी तरह सब जल्दी ठीक हो जाए।

दीपक : अंकल, आज आप मुझे अपने घर ले चलेंगे न ?

सुरेन : दीपू बेटे, आज नहीं। दुबारा जब बड़ी गाड़ी लेकर आऊँगा न, तब ले चलूँगा।

दीपक : (तुरन्त) झूठ ! आप हर बार यही कहते हैं। क्या आपका घर बहुत गन्दा है ?

सरला : दीपू बेटे, ऐसा नहीं बोलते।

दीपक : हाँ मम्मी, हमारी टीचर बता रही थीं, जिनके घर गन्दे हों, वे अपना घर किसी को नहीं दिखाते। उन्हें अपना घर दिखाने में शर्म आती है। इसलिए सब को अपने-अपने घर साफ-सुथरे रखने चाहिए।

सुरेन : हाँ बेटे, तुम ठीक कह रहे हो। मेरा घर अभी बहुत गन्दा है। जब अच्छा हो जाएगा न, तब तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा, हूँ !

(आवाज भर्रा आती है।)

दीपक : (भरे हुए मुँह से) अच्छा।

[सरला और माया की आँखें उमड़ आती हैं।]

□ □

[सुबह दीपक के स्कूल जाने का वक्त हो रहा है। वह तैयार होकर हाथ में बस्ता लिए हुए बाथ-रूम तक आता है और दरवाजा खटखटाने लगता है। माया अन्दर कपड़े बदल कर तैयार हो रही है।]

माया : कौन है ? मेरा दीपू बेटा है ?

दीपक : जल्दी करो न मौसी, मेरी बस आ जाएगी।

[illegible]] [एकदो चिल्लाते

सरला : दीपू बेटे, यहाँ आओ, तुम्हारे बालों में कंघी कर दूँ।

दीपक : (आकर) नहीं, तुम्हें कंघी करनी नहीं आती। तुम कंघी करती हो तो स्कूल में लड़के मुझे चिढ़ाते हैं। (सरला की आँख छलक आती है)

[माया बाथरूम से बाहर निकल आती है और दीपक को सोफे पर बैठाकर उसकी कंघी करने लगती है।]

सरला : (आँखें पोंछकर) मुझे तो कंघी करनी नहीं आती, मगर तू तो अब बड़ा हो गया है। अपनी कंघी खुद क्यों नहीं कर लेता ?

दीपक : मौसी जैसी करती हैं, वैसी मुझे नहीं आती।

[माया दीपक की कंघी करते-करते हँसकर उसे प्यार से चूम लेती है।]

माया : मेरा अच्छा बेटा।

सरला : अब मौसी की शादी हो जाएगी और चली जाएगी तब रोज तुम्हारी कंघी कौन करेगा ?

दीपक : मैं भी मौसी के साथ चला जाऊँगा।

सरला : (रुआँसी होकर) मुझे अकेली छोड़कर ?

दीपक : हाँ, तुम तो अन्धी हो। तुम्हें कुछ दिखाई नहीं देता। मेरी कंघी करनी भी नहीं आती।

[सरला रो पड़ती है।]

माया : यू सिल्ली बॉय ! (प्यार करते हुए) अच्छे बेटे, अपनी माँ से ऐसा नहीं कहते। एण्ड से सॉरी टु मम्मी कम ऑन।

दीपक : सॉरी ! (माया उसे चूम लेती है)

माया : (सरला से) दीदी यह क्या ! तुम बच्चे से बहुत प्यार करती थी और अब उसकी बात को मन में लगाती हो ? आखिर क्यों इतना सोचती हो और घुटती रहती हो ? डॉक्टर ठीक ही कहते हैं, तुम्हारे दिल के दौरे कम न होने का यही कारण है।

[सरला और रो रही है। माया उसके पास आकर बैठ जाती है।]

(सरला आवेश में) दीदी, क्या तुम्हें इस घर से प्यार नहीं है !

[illegible]

[सरला माया का मुँह अपने सीने में छिपा लेती है। दीपक भी पास आकर रोने लगता है।]

दीपक : मम्मी। मम्मी क्यों रोती हो? (ऊँ ऊँ "ऊँ "ऊँ "ऊ"')

[माया जल्दी से अपनी आँखें पोंछ लेती है और दीपक को चुप कराने लगती है।]

माया : यू सिल्ली बाय! मम्मी को रुलाकर पूछता है कि क्यों रोती है?

[माया दीपक के आँसू पोंछ देती है।]

चलो, मम्मी को अब हँसाओगे?

[दीपक 'हाँ' में सिर हिलाता है।]

फिर जल्दी से एक गाना गाओ।

दीपक : कौन-सा?

माया : हूँ... "वही, एक बार मुस्कुरा दो।—किसने गाया है?

दीपक : (हँसकर) किशोर कुमार ने।

माया : शाबाश! तुम बड़े होकर क्या बनोगे?

दीपक : किशोर कुमार।

माया : मेरा बेटा! (चूम लेती है) चलो-चलो अब जल्दी करो, नहीं तो तुम्हारी बस आ जाएगी।

दीपक : मौसी तुम भी गाओगी न?

माया : हाँ, चलो शुरू करो।

दीपक : (जोर से) एक बार मुस्कुरा दो।

माया : (हँसते हुए धीरे से) आहा "आहा आहा"'

दीपक : यहीं से उठे कदम याद रखना

ओ मम्मी मुस्कराने की कसम याद रखना। एक बार "

[दीपक और माया जोर से साथ में गा उठते हैं। सरला मुस्कुरा उठती है और दीपक को पास खींचकर चूम लेती है तभी बाहर स्कूल-बस आकर रुकती है हॉर्न बजाती है।]

□ □

[दीपक का स्कूल छूट गया है । बच्चे स्कूल से बाहर निकलकर स्कूल-बस के पास जमा हो रहे हैं । दीपक अपने एक दोस्त से बात करता स्कूल-बस की ओर आता हुआ दिखाई पड़ता है ।]

जय : दीपू, देख मेरी गेंद !

दीपक : अरे यह तो स्कूल की गेंद है । तूने चुराई है क्या ?

संजय : हाँ, लेकिन किसी से कहना मत । मम्मी गेंद खरीदने के पैसे नहीं देती न, इसलिए चुराई है ।

दीपक : तूने चोरी की है । चोरी करना पाप है । मैं अभी टीचर को बताता हूँ ।

[तभी संजय एक टीचर को आते हुए देखता है । और वह हड़बड़ाकर गेंद को रास्ते पर फेंक देता है । दीपक उस गेंद के पीछे दौड़ता है । उसी वक्त वहां से एक कार गुजरती है, जिसमें बलराज और शारदा बैठे हुए हैं । एकाएक कार को जोर की ब्रेक लगती है । दीपक नीचे गिर पड़ता है । उसके माथे से खून बहने लगता है । और वहाँ काफी भीड़ जमा हो जाती है]

□ □

[घर पर राजेश, सरला और माया तैयार होकर दीपक की राह में बैठे हुए हैं । स्कूल-बस घर के सामने आकर रुकती है और स्कूल का चपरासी दौड़कर राजेश के घर आता है]

परासी : (आकर) जल्दी चलिए साहब, आपके बेटे का एक्सिडेण्ट हो गया है ।

राजेश : एक्सिडेण्ट ? कहाँ ?

परासी : स्कूल से बाहर । गहरी चोट आई है । जे. जे. हॉस्पिटल ले गए हैं ।

सरला : हे भगवान ! मेरे लाल को यह " (चक्कर आ जाता है)

[परदा गिरता आता है ।]

राकेश माया तुम अपनी दीदी को संभालो । मैं आता हूँ ।

सरला (संभलते हुए) नहीं-नहीं, मुझे भी साथ ले चलो राकेश, वरना मैं यहीं मर जाऊँगी ।

राकेश सरला तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं । तुम आराम करो । मैं अभी अस्पताल होकर आता हूँ ।

सरला (हठपूर्वक) नहीं राकेश नहीं । मुझे भी साथ ले चलो । मेरे बेटे के पास ले चलो ।

राकेश (सहारा देते हुए) ठीक है, तो चलो ।

□ ❑

[अस्पताल के एक कमरे में दीपक के बेड के करीब डॉक्टर और दो नर्सें खड़ी हुई हैं । दीपक को ग्लूकोज दिया जा रहा है । वह बेहोश पड़ा है और उसके सिर पर पट्टी बंधी है । बलराज और शारदा कमरे के बाहर खड़े हैं । राकेश, सरला और माया वहाँ आते हैं । शारदा राकेश को पुकार उठती है, लेकिन राकेश मुँह फेर लेता है और कमरे की ओर बढ़ता जाता है ।]

राकेश : (धीरे से बोलते हुए) डॉक्टर, कैसी हालत है ?

डॉक्टर : उम्मीद है जल्दी होश में आ जाएगा । लेकिन जब तक होश न आ जाए, कुछ कहना मुश्किल है । क्योंकि सिर की चोट अगर गहरी हुई तो''''

माया : (चीखकर) जीजा '' जी '''' !

[डाक्टर की बात सुनकर सरला बेहोश हो जाती है । माया उसे सँभालती है । सभी उसके पास दौड़ आते हैं । सरला को उठाकर दूसरे कमरे में ले जाया जाता है । डॉक्टर जल्दी से उसे एँजामिन्

कहने पर सरला को देने के लिए ऑक्सीजन और ग्लूकोस तैयार करती है]

डॉक्टर : (राजेश से) पेशेंट की हालत बहुत ही सीरियस है।

राजेश : डॉक्टर प्लीज '

डॉक्टर : ऑन माइ सिम्पथीज आर विद यू। आइ एम ट्राइंग माई बेस्ट।

[नर्स सबों को कमरे से बाहर जाने के लिए कहती है। सबके चेहरे पर उदासी उतर आती है। तभी सुरेन भी वहाँ आ पहुँचता है। कुछ देर बाद सरला को होश आ जाता है। और वह टूटे फूटे शब्दों में बडबडाने लगती है]

सरला . म मा माया !

[नर्स बाहर दौड जाती है और माया को बुला लाती है। माया धीरे से सरला के बेड पर बैठ जाती है और उसका हाथ थाम लेती है। सरला कुछ क्षण बाद अपनी आँखें खोलती है।]

सरला . (धीमे स्वर में) तू यहीं है ! बस तुझे छोड जाने के लिए दिल नहीं मानता। तू ही तो मेरी सब-कुछ रही है न,बहन भी, बेटी भी और सहेली भी। माया चलोगी मेरे साथ ?

[माया की आँखों से टपटप आँसू गिरते हैं।]

माया : दीदी, ऐसा मत कहो !

सरला : पगली, बस यही मेरा अन्त है। अब इस बार नहीं......

माया ' (रोते हुए) तो मुझे भी अपने साथ लेती चलो। अकेले मुझसे यहाँ नहीं रहा जाएगा। (और रोने लगती है)

सरला : (फीकी मुस्कराहट लिए) अरे पगली, अगर तू भी चली आई तो राजेश-दीपू की देखभाल कौन करेगा ? इन दोनों को तुम्हारे हाथों में सौंपे जाती हूँ।

माया : दीदी, तुम्हारे बिना मुझसे कुछ नहीं हो पाएगा। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। (सिसकने लगती है)

सरला : नहीं माया, तेरा वक्त नहीं आया। तेरी यहाँ जरूरत है।

माया : लेकिन एक शर्त पर ?

अंधकार] [एकसौ इक्यानवे

[[illegible] भाग जाता है ।]

राजेश माया तुम अपनी दीदी को संभालो । मैं जाता हूँ ।

सरला (संभलते हुए) नहीं-नहीं मुझे भी साथ ले चलो राजेश, वरना मैं यहीं मर जाऊँगी ।

राजेश सरला, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं । तुम आराम करो । मैं अभी अस्पताल होकर आता हूँ ।

सरला (हठपूर्वक) नहीं राजेश नहीं । मुझे भी साथ ले चलो । मेरे बेटे के पास ले चलो ।

राजेश (सहारा देते हुए) ठीक है, तो चलो ।

[अस्पताल के एक कमरे में दीपक के बेड के करीब डॉक्टर और दो नर्सें खड़ी हुई हैं । दीपक को ग्लूकोज दिया जा रहा है । वह बेहोश पड़ा है और उसके सिर पर पट्टी बँधी है । बलराज और शारदा कमरे के बाहर खड़े हैं । राजेश, सरला और माया वहाँ आते हैं । शारदा राजेश को पुकार उठती है, लेकिन राजेश मुँह फेर लेता है और कमरे की ओर बढ़ता जाता है ।]

राजेश : (धीरे से चीखते हुए) डॉक्टर, कैसी हालत है ?

डॉक्टर : उम्मीद है जल्दी होश में आ जाएगा । लेकिन जब तक होश न आ जाए, कुछ कहना मुश्किल है । क्योंकि सिर की चोट अगर गहरी हुई तो""

माया : (चीखकर) जीजा जी "" !

[डाक्टर की बात सुनकर सरला बेहोश हो जाती है । माया उसे सँभालती है । सभी उसके पास दौड़ आते हैं । सरला को उठाकर दूसरे कमरे में ले जाया जाता है । डॉक्टर जल्दी से उसे ऐग्जामिन् करता है और इन्जेक्शन देने लगता है । फिर नर्स डॉक्टर के एकदो मर्में] [दीवार

सरला : बस एक और''' आखिरी ख्वाहिश ''
राजेश : क्या ?
सरला : मेरे बेटे को मेरे पास बुला''''''
[राजेश कमरे से बाहर दौड़ जाता है। सुरेन, शारदा और बलराज सरला के पास चले आते हैं]
सुरेन : (एकदम पास आकर) भाभी ?
सरला : कौन ? सुरेन भैया ?
सुरेन : हाँ भाभी। एकाएक तुम्हें यह क्या हो गया ?
सरला : (धीमे स्वर में) सुरेन भैया, बस जा रही हूँ। मुझे माफ कर देना। मैंने
सुरेन : (भर्राए स्वर में) भाभी तुम्हें मेरी कसम है, अगर आगे कुछ भी बोलो ! देखो तो तुमसे मिलने माँ और पिताजी भी आए हैं।
सरला . माँ !
शारदा : (पलंग के पास आकर) बहू !
सरला : कैसी बदनसीब हूँ ! आप चलकर यहाँ आई हैं, लेकिन आपके पैर भी नहीं छू सकती।
शारदा . नहीं, नहीं, हमने तुम्हारी जैसी लक्ष्मी को ठुकराकर बहुत बड़ा पाप किया है। (आँखें पोंछते हुए) बहू, तुम जल्दी ठीक हो जाओ। अब तुम्हें घर चलना है।
सरला . माँ ! बहुत देर हो चुकी है। पर अब मुझे चैन है कि दीवार में दरार आ गई है। अब मैं '''
शारदा . नहीं बेटी नहीं, भगवान् सब ठीक कर देगा। भगवान् करे, तुम्हारा रोग मुझे लग जाए। (रोती है)
[उसी वक्त राजेश तूफान की तरह दीपक को अपने हाथों में लिए कमरे में घुसता है और उसे सरला के करीब बेड पर गुला देता है]
राजेश : यह लो सरला, तुम्हारा दीप।
सरला : दीप बेटे !
दीपक : माँ ! माँ तुम कहाँ हो !
सरला : (उस पर हाथ रखते हुए) मैं तुम्हारे पास ही हूँ बेटे।
बंद द्वार]
[एस्सो तिरानबे

सरला : क्या ?

माया : अगले जन्म में मुझे अपनी बेटी बनाना।

[माया धीरे से अपना सिर सरला की छाती पर रख देती। सरला की आँखों से आँसू बहते हैं। और उसकी साँस फिर से चलने लगती है। तभी नर्स आकर माया को अपने आप पर रखने के लिए इशारा करती है।]

सरला : राजेश कहाँ है ?

[माया जल्दी से बाहर जाकर राजेश को बुला लाती है।]

राजेश : (आकर) यहाँ सरला, मैं तुम्हारे पास ही हूँ।

सरला : (आँखें खोलते हुए) तो क्या कभी मुझसे दूर भी रहे हो ? लेकिन अब बच नहीं पाऊँगी मैं राजेश।

राजेश : कैसी बात कहती हो ? ऐसी कोई बात नहीं है। डॉक्टर कह रहे हैं कि·········

सरला : (मुस्कराते हुए) आज की रात अगर किसी तरह काट भी पाई तो सवेरा········ (साँस खिंच जाती है)

[नर्स, जो वहीं पास में ही खड़ी है, उसकी नब्ज देखने लगती है।]

राजेश, मेरी एक बात मानोगे ?

राजेश : (हाथ सहलाते हुए) तुम जो भी कहोगी, करूँगा सरला।

सरला : राजेश, मैं माया को तुम्हें सौंपकर जा रही हूँ। मेरे जाने के बाद ····

राजेश : सरला, यह तुम क्या कह रही हो ? तुम बेकार की बातें मत सोचो। तुम्हें कुछ नहीं ·

सरला : (टूटती हुई साँसों में) नहीं, नहीं अब मेरे ·······मेरे बचने की आशा नहीं। सब समझ कर ही मैं तुम लोगों को एक कर जा · ती''

(फिर साँस बिलकुल ही खिंच जाती है)

[नर्स डॉक्टर को बुलाने दौड़ जाती है। सरला अपने होंठ फड़फड़ाने लगती है।]

राजेश : सरला ! सरला कुछ कहना चाहती हो ? जल्दी कहो सरला, जल्दी'